पाक्षिक

पाथेय कण

कार्तिक कृ.८ युगाब्द ५१२० वि.२०७५, १ नवम्बर २०१८ मूल्य ₹ २५

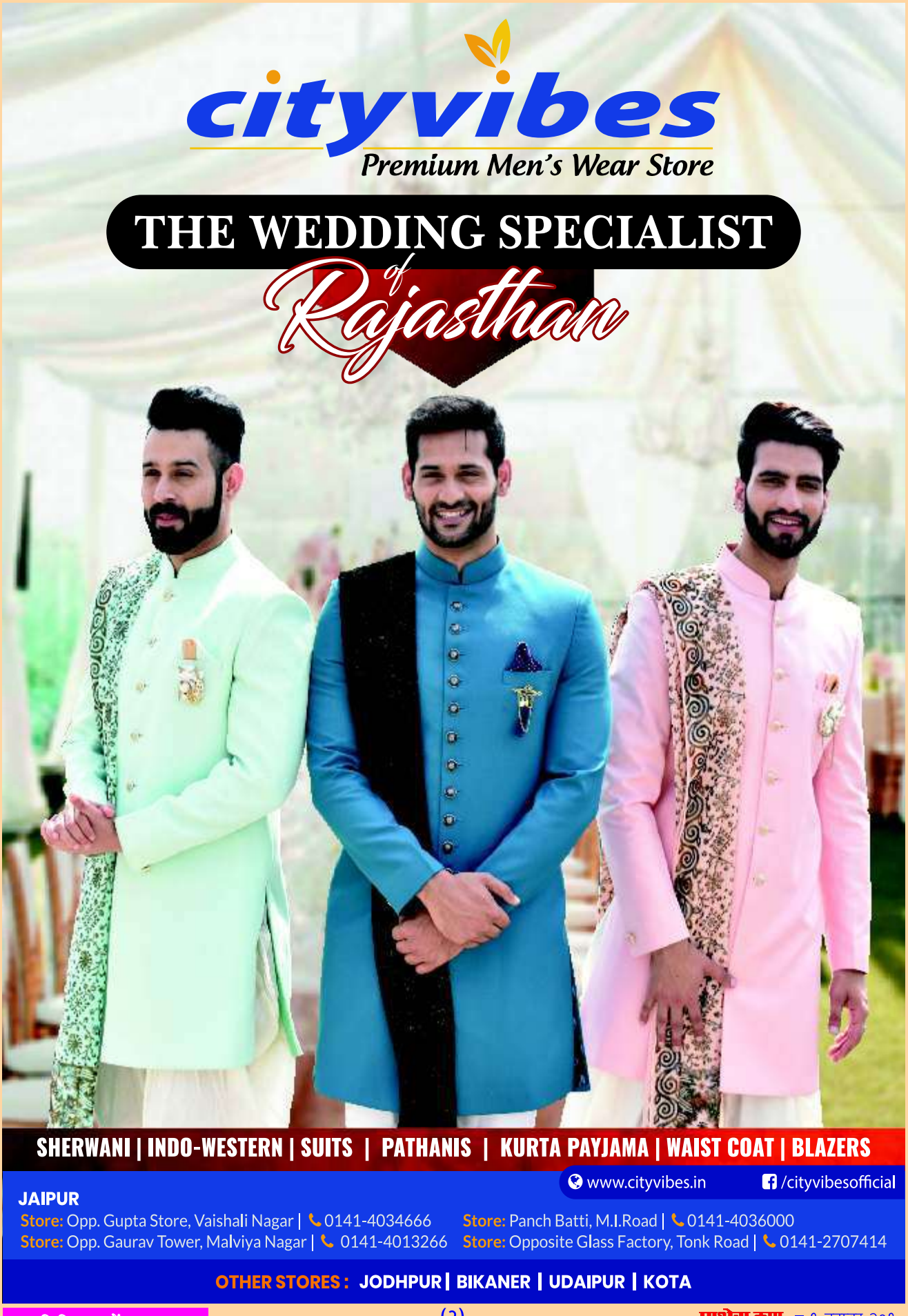
cityvibes
Premium Men's Wear Store
THE WEDDING SPECIALIST
of Rajasthan
SHERWANI | INDO-WESTERN | SUITS | PATHANIS | KURTA PAYJAMA | WAIST COAT | BLAZERS
www.cityvibes.in
/cityvibesofficial
JAIPUR
Store: Opp. Gupta Store, Vaishali Nagar | 0141-4034666
Store: Opp. Gaurav Tower, Malviya Nagar | 0141-4013266
Store: Panch Batti, M.I.Road | 0141-4036000
Store: Opposite Glass Factory, Tonk Road | 0141-2707414
OTHER STORES : JODHPUR | BIKANER | UDAIPUR | KOTA

MT

Siva
94445 47421

Mahadev Trading
Dealers & Wholesale in :
All Imported Chocolate & Dry Fruit Biscuits
#11, Luckmudoss Street,
Park Town, Chennai - 600 003.
Phone : 044-4203 7565, 99405 20197

Lalit

Cell : 99405 20197
: 91764 37763
Ph : 044 - 2538 2197
044 - 2539 2197

LAXMI TRADERS
DEALERS IN COSMETIC ITEMS
No. 11, Lackmudoss Street,
1st Floor, Park Town,
Chennai - 600 003.

EVERSHINE
since-1966
INDIAN & IMPORTED MARBLE

विविधता में एकता विशेषांक
एवं
दीपावली पर्व की शुभकामनाएं

श्री गौरीशंकर अग्रवाल
MAKRANA ROAD,
KISHANGARH (AJMER)
email- sales@evershinemarbles.in
7340000237 & 7340000238

L.2.L®
FOOTWEAR

साकेत इंजिनियरिंग सोल्यूसन प्रा.लि.
की ओर से
विविधता में एकता विशेषाक एवं दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं
No: A-17, Anand Vihar, Near Ridhi Sidhi Sweets, Gopalpura Bypass, JAIPUR - 302018
निदेशक - प्रो. साकेत गुप्ता

Rajneesh Gupts 9414377339
S.M.
Rajneesh Gupts 9309244427
S.M. Gems & Jewels
की ओर से दीपावली वली की शुभकामनाएं
विविधता में एकता हिन्द की विशेषता
Inside Govind Ram Building
Near United Insurance Building
M.I. Road, JAIPUR
Itlay : 0039-3899105614
Email-rajneesh@smgemsnjewels.com

MA SANTOSHI INDUSTRIAL CORPORATION
Mechanical Engineers & Fabricators
(SSI & NSIC Registered Unit)
की ओर से दीपावली की शुभकामनाएं
1, Old Court House Corner, Tobacco House
3rd Floor, R. No. 301(S), Kolkata - 700 001
Phone : (033) 2262 5559, 98311 22444
E-mail : sunilmsic@gmail.com

Shyam Sunder Mantri
Sanyukt Mantri, Pashimanchal
Akhil Bharatvarshiya Maheshwari Mahasabha
(Recipient of National Award by Honourable President of India & India Pride Award by Dainik Bhaskar Group)
* Joint General Secretary, Rajasthan Vaish Federation
* President, Jan Kalyan Seva Samiti, Kuchaman City
* President, Narayan Seva Sansthan, Kuchaman City
* Patron, Bhartiya Sangeet Sadan, Kuchaman City
* Chairman: Blood Donation, Lions International,Dist 3233 E2
* Vice President, Kuchaman Vikas Samiti
* Trustee, Shri Kuchaman Pustkalay, Kuchaman City
* Advisory board member, Society for Protection of Unborn Child
* Kuchaman Gaushala, Kuchaman City
* Antar Rashtriya Sahyog Parishad
Mantri Minerals Pvt. Ltd.
Makrana Road, Kishangarh (Rajasthan)
Indian & Imported Marble and Granite
Outlets In : Aurangabad , Bhubaneswar, Hyderabad
Jaipur, Kishangarh, Makrana, Nellore, New Delhi
Address - New Colony, Kuchaman City - 341508 (Rajasthan)
Ph. : +91 9829078500; (01586) 221166 email: ssmantri26@gmail.com

Ph : 044-2533 1030
Cell : 99404 41130
99403 73352
GOLDEN BEAUTY HOUSE
Wholsale & Retails
All Beauty Parlour Items
Cosmetic Beauty Equipments & Saloon Goods
Olf No. 22, New No. 43 N.S.C. Bose Road, S.V. Plaza (Opp. Govindappa Naicken Street) Ch-1
Email-goldenbeautyhouse@gmail.com
VLCC GARNIER Nature's Himalaya JOVEES fem
Berina debon LAKMÉ Dove VEGA REVLON
Aroma Magic LOTUS L'OREAL VI-JOHN NIVEA OLIVIA
OXYGLOW shahnaz husain WELLA KRYOLAN BIOTIQUE

D.Jagadish Purohit 94444 97778
Sri Ganeshay Namah
卐
2535 4906
2346 5175
MOHAN STAINLESS
Dealers in : Stainless Steel Wares Utensils
No. 40A, Nyniappa Maistry Street,
Park Town, Chennai - 600 003.

DINESH 99401 63319
SHREE GANESHAY NAMAH
卐
Ph : 2346 8574
Cell : 98845 40976
OM METAL
Dealers in : Brass, Copper, S.S.Vessels,
All Kinds of Pooja Articles and
Non-Ferrous Metals, Sheets, Circle Etc.,
Old #31, New #23, Vengu Chetty Street, Park Town, Chennai - 3.

।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।।
संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन।
राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।

दीपावली विशेषांक

पाक्षिक
पाथेय कण

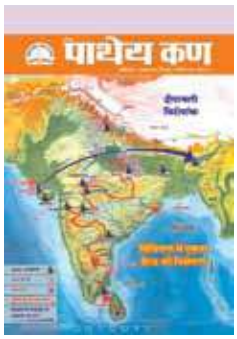

कार्तिक कृष्ण ८

युगाब्द ५१२०, वि.२०७५

१ नवम्बर २०१८ (संयुक्तांक)

वर्ष ३४ ■ अंक १४

सहयोग राशि

एक वर्ष– ₹ १००/–
पन्द्रह वर्ष– ₹१०००/–

प्रकाशक
'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर–302017 (राज.)
सम्पर्क : 9414447123, 9929722111, 0141–2529334

विविधता में एकता हिन्द की विशेषता

८ देश के सनातन मूल्य–बोध को हिन्दुत्व कहते हैं — डॉ. मोहन भागवत

२२ राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार द्वादश ज्योतिर्लिंग — केदार चतुर्वेदी

१२ विविधता में एकता का आधार है धर्म — मा. गो. वैद्य

२५ एकात्मता का संदेश देते देवी के शक्तिपीठ — मनोज गर्ग

१५ भारत की एकात्मता महनीय है — शिशिर कुमार मित्र

३६ विविधता भेद नहीं प्रकृति का शृंगार है — डॉ. मोहन भागवत

३० आद्य शंकराचार्य और भारत की एकता — मेघराज खत्री

१८ सप्त पर्वतों, नदियों व पुरियों में छिपी भारतीय एकात्मता — डा.शुचि चौहान

३९ काव्य रचना — दीपावली के दीप जले — रामगोपाल राही

३३ राष्ट्रीय एकात्मता का आधार धर्माचरण है — शास्त्री कोसलेन्द्रदास

सम्पादक
कन्हैया लाल चतुर्वेदी

E-mail: patheykan@gmail.com
Web: www.patheykan.in

सम्पादक मण्डल
मनोज गर्ग
मेघराज खत्री
केदार चतुर्वेदी

पृष्ठ संयोजन
कौशल रावत, महेन्द्र शर्मा
व्यवस्थापक
धीरेन्द्र शर्मा

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द
सहायक
ओमप्रकाश

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,६ हथरोई, अजमेर रोड, जयपुर से मुद्रित

सभी पाठकों को दीपोत्सव के पावन पर्व की हार्दिक शुभकामनायें

एक बार फिर विश्व-प्रसिद्ध इतिहासकार आर्नोल्ड टॉयन्बी की बात करनी होगी। 'हिस्ट्री ऑफ सिविलाइजेशन' पुस्तक में उन्होंने लिखा है, *'दुनिया विनाश की ओर बढ़ रही है, विनाश होना तय है। इस विनाश से बचने का एक ही मार्ग हो सकता है। इतनी विविधताओं के बीच एकता, एकात्मता स्थापित करने का जो रास्ता भारत ने दिखाया है, उसी पर चल कर विनाश से बचने का प्रयास किया जा सकता है।'*

पूरे विश्व के विचारक, दार्शनिक, विद्वान तथा वैज्ञानिक अपने भारत देश की विविधताओं को देख कर चकित रह जाते हैं। इससे भी अधिक आश्चर्य उन्हें तब होता है जब वे यह देखते हैं कि इतनी विविधताओं के बाद भी भारत एक राष्ट्र है और प्राचीन काल से है। देखा जाये तो वैविध्य क्या कम हैं भारत में? इन्हें देख कर इंग्लैण्ड के दार्शनिक सिरिल एडविन जोड ने लिखा है कि *'मुझे बड़ा ताज्जुब होता है, यह देख कर कि पूरी दुनिया ही समाई हुई है भारत में । इतना वैविध्य है इस देश में।'* जितनी भाषायें भारत में हैं उतनी पूरे यूरोप में नहीं होंगी। चौदह भाषायें तो संविधान स्वीकृत हैं। इसके अतिरिक्त अन्य कई भाषायें हैं जो संविधान के प्रावधानों में जुड़ना चाहती हैं। भाषायें जितनी अलग हैं, उनकी लिपियाँ भी उतनी ही अलग हैं।

भौगोलिक दृष्टि से देखें तो दुनिया का दूसरा सबसे ठण्डा क्षेत्र भारत के लाहौल-स्पीति (हिमालच प्रदेश) में है और दूसरा सबसे गर्म थार का मरुस्थल भी अपने देश में है। सर्वाधिक वर्षा तथा न्यूनतम वर्षा वाले क्षेत्र भी अपने ही देश में हैं। बर्फीले पहाड़, पठार, गंगा-यमुना के मैदानी क्षेत्र, समुद्र से लगे तट-वर्ती क्षेत्र, पुण्य-सलिला सरितायें, दिव्य सरोवर सभी भारत में हैं। इन्हीं के साथ खान-पान, रीति-रिवाज, जांत-पांत, ऊँच-नीच, परम्परा, आचार-विचार आदि की भारी विविधतायें हैं। शास्त्रीय संगीत भी कितने भिन्न-भिन्न प्रकारों का है और इसी तरह नृत्य भी भाँति-भाँति के हैं। वाद्यों की तो कोई गिनती ही नहीं है। प्रत्येक क्षेत्र का एक विशेष वाद्य है और उसकी अलग ही छटा है। और जितने रिलीजन भारत में जन्मे और पनपे उसके आधे भी बाकी विश्व में नहीं पनप पाये। ईसाइयत, इस्लाम या जियोनवाद (यहूदी) को मानने वाले लोग ही हैं शेष विश्व में। कुछ पारसी भी हैं जो भारत में ही बचे हैं।

इसके विपरीत भारत में वेदों को मानने वाले हैं, न मानने वाले भी हैं। सगुण उपासक हैं और निराकार ब्रह्म के उपासक भी हैं। शैव हैं, वैष्णव हैं, शाक्त हैं, बौद्ध, जैन, सिक्ख हैं, आर्य समाजी हैं। कर्नाटक में संत बसवेश्वर को मानने वालों ने एक अलग सम्प्रदाय **लिंगायत** या वीर-शैव बना लिया। दादू महाराज के अनुयायी दादू-पंथी हो गये। और भी ऐसे अनेक हैं। उपासना की अद्‌भुत स्वतंत्रता भारत में रही और इसीलिये समाज को दोष-मुक्त करने के लिये समय-समय पर अनेक रिलीजनों का प्रादुर्भाव यहाँ होता रहा।

कई बार आपसी विरोधी दिखने वाली इन विविधताओं को देख कर ना-समझ लोग कह बैठते हैं, कि भारत कभी एक नहीं रहा और आज भी एक नहीं है, कि यहाँ अनेक संस्कृतियाँ हैं, कई राष्ट्रीयताएं हैं। वे मानते हैं कि राजनैतिक रूप से अंग्रेजों ने भारत को एक किया। स्वतंत्रता के संघर्ष के समय भी ऐसे ही नासमझ लोग कहते थे कि ''**हम एक राष्ट्र बन रहे हैं**'' (We are a nation in the making)। इन नासमझों में से कुछ तो वास्तव में ही तथ्यों से अनजान हैं और कुछ षड़यंत्रपूर्वक इस प्रकार का दुष्प्रचार करते हैं। सचाई यह है कि इतने सारे वैविध्य के होते हुए भी भारत एक राष्ट्र है। यह एकता, यह प्रबल राष्ट्रीयता का भाव हजारों वर्षों से भारत में है और आगे भी रहने वाला है। **सृष्टि के उषा-काल से भारत एक राष्ट्र है और हिन्दू-राष्ट्र है।**

प्राकृतिक सीमाएं- यह एकता, यह एकात्मता कोई भी देख, समझ सकता है,सिवा उनके जो देखना ही नहीं चाहते। विष्णु पुराण सबसे प्राचीन पुराण माना जाता है। इस पुराण के द्वितीय अंश के तीसरे अध्याय का पहला श्लोक है-

उत्तंर यत्समुद्रस्य हिमाद्रैश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।।२/३/१।।

ऋषि पाराशर ने मैत्रेय से कहा- जो समुद्र (हिन्द महासागर) के उत्तर तथा हिमालय के दक्षिण में स्थित है वह देश भारत वर्ष है तथा उसमें भरत की सन्तानें निवास करती हैं।

इस एक श्लोक में भारत की मूलभूत एकता की घोषणा हो रही है। प्रकृति ने ही भारत को एक बनाया है। देवतात्मा हिमालय मानों भारत की प्राकृतिक उत्तरी सीमा है और सागर दक्षिण और पश्चिम की सीमा है। इन प्राकृतिक सीमाओं के बीच एक देश के रूप में भारत अवस्थित है। सागर और हिमालय के बीच का क्षेत्र समय-समय पर बड़ा-छोटा भले ही होता रहा हो, लेकिन क्षेत्र की एकता सदा अक्षुण्ण रही।

भावात्मक सम्बन्ध- भौगोलिक एकता के साथ अन्यान्य विविधताओं के बीच भावात्मक एकता भी अपने देश में विद्यमान रही है। वास्तव में विविधता तो सौन्दर्य का सृजन करती हैं। एकरूपता कभी भी रुचिकर तथा श्रेयस्कर नहीं होती। अतः राष्ट्र जीवन में विविधता अपेक्षित और अनिवार्य है यह हमारे मनीषियों ने पहले ही समझ लिया था। इन असमानताओं में एकता के सूत्र भी उन्होंने विकसित किये। **अथर्ववेद का भूमि-सूक्त** कहता है कि यह (भारत) भूमि माता है और हम इसके पुत्र हैं। अपने देश की भूमि के प्रति यह अनन्य श्रद्धा-भाव समाज को एक करता है। सम्पूर्ण भूमि माता है,

पूजनीय है तो इसके पहाड़, नदियाँ, प्रमुख नगर आदि भी पूजनीय हैं।

अधिक समय नहीं हुआ जब घर के बुजुर्ग स्नान करते थे तो उत्तर से दक्षिण की प्रमुख नदियों का आह्वान करते थे, कि गंगा, सिन्धु, सरस्वती, यमुना, नर्मदा, कावेरी और गोदावरी का जल मेरे इस लोटे में आ जाये। हम सुनते थे और समझ नहीं पाते थे कि दादा जी उक्त सारी नदियों का नाम क्यों ले रहे हैं। इसी प्रकार पूजा, अनुष्ठानों के समय पूरे देश के सात प्रमुख पर्वतों,नदियों के साथ अयोध्या, द्वारका, कांची, काशी, हरिद्वार, मथुरा और उज्जयिनी का नाम लिया जाता था। ये सात पवित्र पुरियाँ उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम और मध्य भारत में हैं। इन पुण्य-सरिताओं, पर्वत शृंखलाओं और नगरियों का स्मरण करते ही पूरा देश सामने साकार हो जाता है और पूरी भूमि के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करता है।

तीर्थ-यात्राएं- अपने स्थान पर मातृ-भूमि के प्रतिदिन स्मरण के साथ एकात्मता के लिये तीर्थाटन की परम्परा भी देश में प्रारम्भ की गई। कच्छ से कामरूप और हिमालय से रामेश्वरम् तक अपने देश में बारह ज्योतिर्लिंग हैं। इनसे सम्बन्धित स्तोत्र में कहा गया है कि प्रातः और सायंकाल जो इनका स्मरण करते हैं उनके सात जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं। लेकिन जो प्रत्यक्ष दर्शन करते हैं, उनके तो जन्म-जन्मांतर के पाप नष्ट हो जाते हैं। वास्तव में जब कोई श्रद्धालु बारहों ज्योतिर्लिंगों की यात्रा करता है तो वह पूरे देश के लोगों का साक्षात्कार करता है और उनसे गहन आत्मीयता का भाव उसमें उत्पन्न होता है। भारत की एकात्मता के पुख्ता प्रमाण होने के साथ-साथ ये विविधता में एकता का निर्माण भी करते हैं।

श्री बद्रीनाथ, द्वारका, रामेश्वर, तथा जगन्नाथपुरी चार 'धाम' माने जाते हैं। प्रत्येक भारतवासी के मन में **चार-धाम यात्रा** की उत्कट अभिलाषा रहती है। कुछ वर्षों पहले तक चारों धामों की यात्रा कर लेने वाले का सार्वजनिक सम्मान किया जाता था और पूरी बस्ती या गाँव में उत्सव मनाया जाता था। इसलिये कि समाज की एकात्मता में उस चार-धाम यात्री ने भी अपना योगदान किया। ओडिशा के व्यक्ति अपनी जगन्नाथपुरी के अतिरिक्त द्वारका, रामेश्वरम् और बद्रीनाथ की यात्रा कर लेता है तो इस भूमि, भूमि के जन, भूमि के तीर्थ-स्थलों के प्रति गहरी आस्था का मन में निर्माण कर लेता है।

कुम्भ पर्व- और देखें, देश की पाँच पवित्र झीलें (सरोवर) पूर्व में बिन्दु सरोवर, उत्तर में मानसरोवर, दक्षिण में पम्पा, पश्चिम में नारायण सरोवर तथा पुष्कर हैं। दक्षिण को छोड़ कर पूर्व, उत्तर और पश्चिम में सूर्य मन्दिर हैं। ये हैं ओडिशा का कोणार्क, कश्मीर का ध्वस्त सूर्य मन्दिर और सूरत का सूर्य मंदिर। जैन, बौद्ध एवं सिखों के पवित्र मन्दिर, मठ और गुरुद्वारे भी भारत के कोने-कोने में हैं। ये सभी भारत की विविधताआ में एकता के जीते-जागते प्रमाण हैं। देवी के ५१ शक्तिपीठ तो पूरे अखण्ड भारत में विद्यमान हैं। चार पीठ बांग्लादेश में हैं तीन नेपाल में हैं तथा एक-एक पीठ पाकिस्तान, तिब्बत और श्रीलंका में हैं। आज के भारत में पड़ने वाले शेष ४१ शक्तिपीठ देश के प्रत्येक प्रांत में हैं और भारत की एकात्मता का उद्घोष कर रहे हैं।

तीन वर्षों में एक बार प्रयाग, हरिद्वार, नासिक तथा उज्जैन में से किसी एक स्थान पर महाकुम्भ का आयोजन होता है। प्रेत्यक स्थल पर बारह सालों में एक बार कुम्भ-पर्व आता है। इन कुम्भों में पूरे भारत के श्रद्धालु आते हैं। पूरे देश के लोग आयें, मिलें, परस्पर विचार-विनिमय हो, नई आचार संहितायें बनें, सम्पूर्ण समाज का चिन्तन हो इसलिये कुम्भ पर्वों के आयोजन प्रारम्भ किये गये होंगे। इसी के साथ पूरे देश से तादात्म्य, आत्मीयता, एकात्मता उत्पन्न करने का प्रयोजन भी इनसे सिद्ध हो जाता है।

इष्टदेवों पर श्रद्धा- गरुड़ पुराण के ६६वें अध्याय में देश के पवित्र मान बिन्दुओं तथा स्थानों की जानकारी दी गई है। शालिग्राम, द्वारका, नैमिषारण्य, पुष्कर, गया, वाराणसी, प्रयाग, कुरुक्षेत्र, सूकर एवं नदियाँ गंगा, नर्मदा, गोदावरी, चन्द्रभागा, सरस्वती तथा श्रीक्षेत्र और महाकाल।

इसके आगे ८१ वें अध्याय में एक पूरा स्तोत्र है जिसमें २५ श्लोक हैं। इस स्तोत्र में पूरे देश के पूजनीय स्थलों, सरिताओं, देवताओं तथा अन्य जैसे तुलसी, पीपल आदि की जानकारी दी गई है। इनमें दक्षिण के कावेरी, रामेश्वरम, काँची, श्रीरंगम, कार्तिकेय, मलय पर्वत, श्री शैलम्, तुंगभद्रा; पूर्व के कामाख्या, महेन्द्र पर्वत, परशुराम कुण्ड और पश्चिम के द्वारका, सोमनाथ गोदावरी, सहित बद्री,केदार, पुष्कर, गंगा, प्रयाग, काशी, महाकाल, अमरकंटक,पशुपति आदि लगभग सौ नामों का उल्लेख है। सम्पूर्ण भारत की एकता, अखण्डता और एकात्मता का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है?

भगवान् विष्णु के स्तोत्र में बताया गया है कि उनको भारत के किस क्षेत्र में किस नाम से पूजा जाता है। इसके अनुसार ब्रदीनाथ धाम में विष्णु नारायण के रूप में, अयोध्या में राघव नाम से, ब्रज में गोपाल, माया(हरिद्वार) में मधुसूदन, पाण्डुरंग(महाराष्ट्र) में विट्ठल, कांची में कमललोचल, उत्कल में जगन्नाथ तथा अनंतक (केरल) में पद्मनाभ के नाम से पूजे जाते हैं। अर्थात् सम्पूर्ण देश में विष्णु के प्रति शिव के प्रति, 'शक्ति' के प्रति अपार श्रद्धा है। उत्तर में कोई रामलाल है तो दक्षिण में रामलिंगम्, पूर्व में रामाश्रय प्रसाद सिंह और पश्चिम में राम नाइक हैं।

संस्कृति सबकी एक चिरंतन- भौगोलिक और भावात्मक एकता के साथ सांस्कृतिक एकता भी विविधताओं से परिपूर्ण भारत में प्राचीन काल से रही है। आसेतु-हिमाचल पूरे देश की संस्कृति एक ही है और वह हिन्दू संस्कृति है। श्रेष्ठ जीवन-मूल्यों का समुच्चय संस्कृति कहलाता है। ये जीवन-मूल्य लम्बी अवधि के सामाजिक जीवन के पश्चात् समाज में प्रकट होते हैं। ये जीवन मूल्य भारत के जन-जन में हमें दिखाई देते हैं। ■

सरसंघचालक का विजयदशमी उद्‌बोधन

देश के सनातन मूल्य-बोध को हिन्दुत्व कहते हैं

देशहित की मूलभूत अनिवार्य आवश्यकता है कि भारत के 'स्व' की पहचान के सुस्पष्ट अधिष्ठान पर खड़ा हुआ सामर्थ्य संपन्न व गुणवत्ता वाला संगठित समाज इस देश में बने। वह हमारी पहचान हिन्दू पहचान है जो हमें सबका आदर, सबका स्वीकार, सबका मेलमिलाप व सबका भला करना सिखाती है। इसलिए संघ हिन्दू समाज को संगठित व अजेय सामर्थ्य संपन्न बनाना चाहता है और इस कार्य को सम्पूर्ण सम्पन्न करके रहेगा।

विजय दशमी अपने देश का प्रमुख पर्व है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जो वर्ष भर में मनाये जाने वाले छह उत्सव हैं, यह उनमें से एक है। यह शक्ति, सामर्थ्य और संगठन भाव की उपासना का पर्व है इसलिये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य भी ९३ वर्ष पूर्व विजयदशमी के पावन-अवसर पर ही प्रारम्भ हुआ। नागपुर में इसका बीजारोपण हुआ इसलिये विजयदशमी उत्सव पर सरसंघचालक परम्परागत रूप से नागपुर में ही रहते हैं। वर्तमान की परिस्थितियों के मंथन के साथ-साथ भविष्य की कार्य-योजना का भी संकेत इसमें रहता है।

इस बार गत १८ अक्तू. को प्रातः काल संघ की नागपुर इकाई का उत्सव रेशिम बाग में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नोबल पुरस्कार प्राप्त सामाजिक कार्यकर्ता श्री कैलाश सत्यार्थी थे। शारीरिक कार्यक्रमों तथा घोष (बैण्ड) के आकर्षक प्रदर्शन के पश्चात् मुख्य अतिथि श्री कैलाश सत्यार्थी ने अपना संदेश दिया। तत्पश्चात सरसंघचालक भागवत जी ने वर्तमान के राष्ट्र-जीवन का एक विस्तृत चित्र प्रस्तुत किया। आंतरिक व बाह्य सुरक्षा, देश की एकात्मता को चुनौती देने वाली विभाजनकारी ताकतों, सामाजिक सरमसता, अयोध्या, मतधिकार का प्रयोग आदि विषयों पर उन्होंने अपने विचार रखे।

> इस परिस्थिति का संपूर्ण व अचूक उपाय तभी हो सकता है जब समाज के सभी वर्गों में, बुद्धि व भावना सहित आचरण में, आपस में सद्‌भावना व अपनेपन का व्यवहार हो। पंथ-सम्प्रदाय, जाति-उपजाति, भाषा, प्रान्त आदि की विविधता को हम एकता की दृष्टि से देखें।

उद्‌बोधन में भागवत जी ने ''स्व'' की पहचान अर्थात् भारत के गौरवशाली इतिहास, संस्कृति और परम्पराओं को याद रखने पर बल दिया और 'स्व' के आधार पर ही राष्ट्र जीवन के सभी अंगों के निर्माण की बात कही। उन्होंने कहा कि हमारी पहचान 'हिन्दू' पहचान है। हो सकता है कि हिन्दू शब्द से कुछ लोग भयभीत हो इसका विरोध करते हों। उन्हें यह समझाने की

विविधता में एकता

मुख्य अतिथि का पंचामृत

भारत माता एक अरब समाधानों की जननी

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नोबल पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी ने वेद-मंत्र के साथ अपना उद्बोधन शुरु किया। उन्होंने दुनिया और भारत के करोड़ों वंचित बालक-बालिकाओं के कष्ट दूर करने का आह्वान करते हुए कहा कि विश्व के लोग अक्सर उनसे कहते हैं कि भारत तो समस्याओं की खदान है। इसके उत्तर में वे हमेशा कहते हैं- *''भले ही भारत में सौ समस्याएँ हों, लेकिन भारत माता एक अरब समाधानों की जननी है।''*

श्री सत्यार्थी ने देश को, भारत-माता को पंचामृत का प्रसाद चढ़ाने की बात कही। इस पंचामृत के पाँच तत्व हैं, **संवेदनशीलता, समावेशिता, सुरक्षा, स्वावलम्बन तथा स्वाभिमान।** इनको स्पष्ट करते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि **संवेदनशीलता** या करुणा के बिना किसी समाज का निर्माण नहीं हो सकता। बढ़ती तकनीकी कुशलता के युग में पारिवारिक मूल्यों और संवेदना की बहुत आवश्यकता है। भारत विविधताओं का देश है, इसमें एकता का निर्माण **समावेशिता** और सहिष्णुता से ही हो सकता है।

उन्होंने देश की बाहरी और आतंरिक **सुरक्षा** की जरूरत भी बताई। पंचामृत के तीसरे तत्व को समझाते हुए उन्होंने कहा कि देश पर अनैतिकता का जो आक्रमण हो रहा है उससे देश की रक्षा करना इस समय की महती आवश्यकता है। उन्होंने यह भी बताया कि अर्थव्यवस्था, रोजगार सृजन तथा सामाजिक संतुलन **स्वावलम्बन** या आत्मनिर्भरता से ही प्राप्त किये जा सकते हैं।

पंचामृत के पाँचवे तत्व का विश्लेषण करते हुए उन्होंने कहा कि विदेशी गुलामी हीनता और मानसिक दासता का भाव छोड़ गई है। इसलिये अपनी भाषा, अपने वेश और अपनी शिक्षा के प्रति तिरस्कार बढ़ रहा है। इससे पार पाने के लिये प्रखर **स्वाभिमान** का भाव जन-जन में जाग्रत करना होगा।

आवश्यकता है कि 'हिन्दुत्व' तो इस देश के सनातन मूल्य-बोध को ही कहते हैं। उस मूल्यबोध से अनुप्राणित भारतीय संस्कृति के रंग में सभी भारतीय रंगें यह समय की माँग है।

अन्यान्य विषयों पर सरसंघचालक ने जो मंतव्य प्रकट किया वह संक्षिप्त रूप में इस प्रकार है-

महापुरुषों का स्मरण- भागवत जी ने विजयदशमी उद्बोधन के प्रारम्भ में ही बताया कि इस कार्तिक पूर्णिमा से श्रीगुरुनानक देव के प्रकाश का ५५०वाँ वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। महात्मा गाँधी के जन्म का भी १५०वाँ वर्ष इस २ अक्तू. से प्रारम्भ हो गया है। इसी के साथ अमृतसर के जलियाँवाला बाग के क्रूर हत्याकाण्ड को भी आगामी बैसाखी (१३ अप्रेल) को सौ वर्ष पूरे होंगे।

देश की सुरक्षा- * अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के तानों-बानों को ठीक से समझ कर अपने देश की सुरक्षा चिन्ताओं से उनको अवगत कराने का तथा उनका सहयोग व समर्थन प्राप्त करने का सफल प्रयास हुआ है। दुनिया के देशों में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी है।

> मतदान न करना अथवा नोटा के अधिकार का उपयोग करना, मतदान की दृष्टि से जो अयोग्य है उसी के पक्ष में जाता है। इसलिए सभी तरफ के प्रचार को सुनकर, उसके जाल में न फंसते हुए राष्ट्रहित सर्वोपरि रखकर १०० प्रतिशत मतदान आवश्यक है।

* इसी के साथ अपनी सेना व सुरक्षा बलों का मनोबल बढ़ाते हुए उन्हें साधन-सम्पन्न व सामर्थ्यशाली बनाने का प्रयास भी हुआ है।

**** प्रशासन एवं सम्पूर्ण समाज को भी सेना व सुरक्षा बलों के परिवारों की सुव्यवस्था एवं सुरक्षा की चिन्ता करनी चाहिये।***

** अन्दमान निकोबार व सागर में स्थित अन्य सैकड़ों द्वीपों की सुरक्षा के लिये नौसेना को सक्षम बनाया जाना चाहिये।*

सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले बन्धुओं की शिक्षा, स्वास्थ्य आदि की ठीक व्यवस्था व उनको संस्कारित बनाये रखने की व्यवस्था की जानी आवश्यक है।

** सुरक्षा-उत्पादों के क्षेत्र में आत्म-निर्भरता प्राप्त करने की ओर तेज गति से बढ़ना होगा।*

देशघाती प्रवृत्तियाँ- भागवत जी ने आतंरिक सुरक्षा की चर्चा करते हुए कहा कि देश की संप्रभुता को चुनौती देने वाली ताकतों से केन्द्र एवं राज्य सरकारें सफलतापूर्वक निपट रही हैं। चिन्ता की बात यह है कि हिंसक एवं गैर कानूनी गतिविधियाँ करने वाले अपने ही समाज के लोग हैं। इनको समर्थन भी अपने ही लोगों से मिल रहा है। इसलिये समाज की त्रुटियों को दूर कर ऐसे लोगों से आत्मीयता पूर्ण व्यवहार की आवश्यकता है। इसी के साथ

शबरीमलै देवस्थान के संबंध में निर्णय से उत्पन्न स्थिति भी यही दर्शाती है कि सैकड़ों वर्षों से चलती आयी परम्परा, जो समाज में अपनी स्वीकार्यता बना चुकी है, उसके स्वरूप व कारणों के मूल का विचार नहीं किया गया। धार्मिक परम्पराओं के प्रमुख कर्ताधर्ताओं का पक्ष, करोड़ों भक्तों की श्रद्धा को परामर्श में नहीं लिया गया।

अपना स्वयं का भी परिष्कार कर सामाजिक विभेदों की दूर करना होगा।

** पुलिस विभाग में सुधार करने की आवश्यकता है। इसके लिये समुचित प्रयास हों।*

** अनुसूचित जाति-जनजाति के लिये बनीं कल्याणकारी योजनाएं तथा अन्य प्रावधानों को ठीक से तथा संवेदना के साथ तत्परता से लागू करना जरूरी है।*

**** देश में विषाक्त और विद्वेषी वातावरण बना कर समाज के सामंजस्य को जर्जर कर देने का मंत्र-युद्ध देश में चल रहा है। देश-विरोधी ताकतों से साठ-गांठ कर स्वदेश-द्रोह का वातावरण बनाने का प्रयास कुटिलतापूर्वक चलाया जा रहा है। जहरीली एवं भड़काऊ भाषा का खुल कर प्रयोग किया जा रहा है। शहरी माओवादी (अर्बन नक्सली) इस षड़यंत्र में सबसे आगे हैं।***

** उक्त चुनौती का सामना करने के लिये जरूरी आपसी सद्भावना व समाज की समरसता के लिये अथक प्रयास की आवश्यकता है।*

** लोकतंत्र के अनुशासन में ठीक बैठ सकने वाली पूर्णतः संवैधानिक पद्धतियों का अवलम्बन ही समय की आवश्यकता है।*

शीघ्रातिशीघ्र हो श्रीराम मंदिर का निर्माण

इसकी आवश्यकता बताते हुए सरसंघचालक ने चेताया कि अकारण ही समाज के धैर्य की परीक्षा किसी के हित में नहीं है। अतः शीघ्र ही भूमि के स्वामित्व पर न्यायालय का निर्णय हो तथा शासन उचित व आवश्यक कानून बना कर भव्य मन्दिर के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करे, इसकी आवश्यकता है।

**** न्यायालय को निर्णय करते समय सैकड़ों वर्षों से चली आई परम्परा एवं जनमानस की श्रद्धा का विचार भी करना चाहिये।***

** हिन्दू समाज की श्रद्धा पर लगातार और निस्संकोच आघात से समाज में असंतोष की स्थित बनती है।*

**** समाज का स्वस्थ एवं शांतिपूर्ण जीवन केवल कानून और दण्ड के भय से न कभी चला है न चल सकता है।***

विश्वभर की अच्छी बातें लेकर भी हम अपनी तत्वदृष्टि की नींव पर अपना विशिष्ट विकास प्रतिमान व तदनुसार व्यवस्था खड़ी करें यह अपने देश के विकास की अनिवार्य आवश्यकता है।

** इसलिये चिन्तन में समग्रता चाहिये। मूल्य के आधार पर दृढ़ रह कर समयानुकूल आचार धर्म अपनाने के लक्ष्य से नियम बदले जाने चाहिये।*

* कानूनी निर्णयों से समाज में शांति, स्थिरता व समानता के स्थान पर अस्थिरता एवं भेदों की उत्पत्ति न हो इसका ध्यान रखना समय की आवश्यकता है।

परिवारों में संस्कारों की आवश्यकता

भागवत जी ने चिन्ता प्रकट की, कि समाज के वातावरण तथा शिक्षा व्यवस्था से संस्कार देने का भाव विलुप्त हो गया है। नई पीढ़ी को ये संस्कार शैशव काल से ही घर में, विद्यालयों में तथा समाज के क्रिया-कलापों से मिलने चाहिये। इसमें परिवार का दायित्व सबसे अधिक है।

** सामाजिक व पारिवारिक दायित्व-बोध के सुसंस्कार नई पीढ़ी को घर में ही मिलने चाहिये। घर का वातावरण प्रसन्न, शुचितामय तथा संस्कार देने वाला हो यह सुनिश्चित करना वर्तमान परस्थितियों में आवश्यक है।*

** प्रसार माध्यमों के प्रसार व प्रभाव तथा आत्मकेन्द्रित बनाने के उनके परिणामों को ठीक से समझ कर तदनुरूप व्यवस्था करने की भी आवश्यकता है।*

**** नई दुनिया में जो श्रेष्ठ है उसे खुले मन से आत्मसात करते हुए जो नकारात्मक, अभद्र तथा विध्वंसकारी हैं उनसे मूल्य बोध के आधार पर बचने का नीर-क्षीर विवेक भी उत्पन्न करना होगा।***

** समाज के सुधी वर्ग एवं प्रबुद्धजनों सहित पूरे समाज को सही सुसंस्कारी एवं स्वस्थ वातावरण बनाने में कर्तव्यरत होना पड़ेगा।*

नोटा का प्रयोग अहितकारी

आसन्न निर्वाचनों को स्वस्थ लोकतंत्र के लिये महत्वपूर्ण बताते हुए भागवत जी ने कहा कि राष्ट्रहित को सर्वोपरि रख कर

कानूनी निर्णय से समाज में शांति, सुस्थिरता व समानता के स्थान पर अशांति, अस्थिरता व भेदों का सृजन हुआ। क्यों, हिन्दू समाज की श्रद्धाओं पर ही ऐसे आघात लगातार व बिना संकोच किये जाते हैं, ऐसे प्रश्न समाज-मन में उठते हैं व असंतोष की स्थिति बनती चली जाती है।

आने वाले चुनाव के वोटों पर ध्यान रखकर, सामाजिक एकात्मता, कानून, संविधान का अनुशासन आदि की नितांत उपेक्षा करके चलने वाली स्वार्थी, सत्तालोलुप राजनीति तो ऐसे हथकण्डों के पीछे स्पष्ट दिखती रही है। परन्तु इस बार इन सब निमित्तों को लेकर समाज में भटकाव का, हिंसा का, अत्यंत विषाक्त द्वेष का तथा देश विरोधिता तक का भी वातावरण खड़ा करने का प्रयास हो रहा है।

सौ प्रतिशत मतदान करना अपेक्षित व आवश्यक है।

** प्रजातंत्र की राजनीति का चरित्र ऐसा है कि सम्पूर्ण रूप से अयोग्य या सम्पूर्ण रूप से योग्य नहीं, यह मान कर मतदान के समय 'नोटा' का उपयोग करना अयोग्य उम्मीदवार को ही लाभ पहुँचाता है।*

**** इसलिये राष्ट्रहित को वरीयता देते हुए तथा स्वार्थ, भाषा, प्रान्त, जाति आदि से ऊपर उठकर मतदान करने की आवश्यकता प्रतीत होती है।***

** एक दिन के मतदान का परिणाम दीर्घकाल तक होता है, अतः उस एक दिन के पश्चात हमारे हाथ में कुछ नहीं रहता। इसका विचार मतदान के समय अवश्य किया जाना चाहिये।*

जगाना देश है अपना

विजयदशमी के महत्वपूर्ण सम्बोधन में भागवत जी ने कहा कि राजनैतिक स्वतंत्रता अपने आप में पूर्ण नहीं होती। राष्ट्र के जीवन व्यवहार के सभी पहलुओं की पुनर्रचना 'स्व' के गौरव के आधार पर खड़ी करनी पड़ती है। अपने देश में जो कुछ है उसको देश काल-परिस्थिति के अनुसार युगानुकूल बनाकर तथा विश्व में जो कुछ श्रेष्ठ है उसे देशानुकूल बना कर ही देश सही अर्थों में प्रगति कर सकेगा। यही हिन्दुत्व है।

**** अंधानुकरण उचित नहीं। कोई भी देश अपने प्रकृति स्वभाव पर स्थित रह कर ही उन्नति कर सकता है।***

** शासन की अच्छी नीतियों का परिणाम समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुँचना चाहिये। यह नहीं हो रहा। प्रशासन प्रजापालक बने यह अपेक्षित है।*

**** हिमालय से समुद्रपर्यन्त अखण्ड भारत भूमि के साथ हिन्दुत्व का तादात्म्य है। सम्पूर्ण विश्व को उसकी विशिष्ट विविधताओं का स्वागत करते हुए हृदय से अपनाने की क्षमता भारत में हिन्दुत्व के कारण ही है। इसलिये भारत हिन्दू-राष्ट्र है।***

संघ के स्वयंसेवकों के साथ इस पवित्र ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनते हुए हम सब मिल कर भारत माता को विश्वगुरु पद पर स्थापन करने के लिये भारत के भाग्यरथ को अग्रसर करें। ■

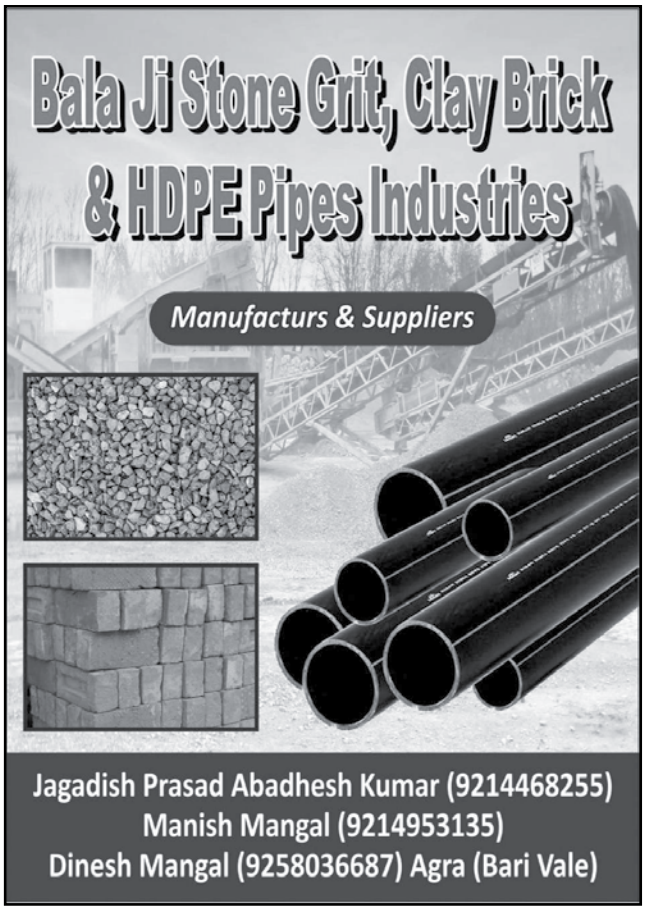

विविधता में एकता का आधार है धर्म

❑ **मा.गो. वैद्य**
पूर्व मुख्य संपादक 'तरुण भारत',
पूर्व प्रचार प्रमुख रा.स्वं.संघ,
पूर्व सदस्य महाराष्ट्र विधान परिषद्

धर्म का अर्थ होता है अपने को व्यापकता से जोड़ना। कितनी व्यापकता से आप अपने को जोड़ेंगे, इसकी कोई सीमा नहीं। हमें अपने आप को पूरे समाज से जोड़ना चाहिये।

धर्म शब्द के बारे में अनेक लोगों के मन में अनेक प्रकार की भ्रांतियाँ हैं। कई लोग तो पूजापाठ, व्रतोपासना, तीर्थयात्रा आदि गतिविधियों को ही 'धर्म' मानते हैं। ये सब 'धर्म' के अंग हैं। किन्तु सम्पूर्ण धर्म नहीं है। अनेक लोग सम्प्रदायों को ही 'धर्म' मानते हैं। जैसे ईसाई और इस्लाम । ये 'रिलीजन' अवश्य हैं किन्तु 'धर्म' नहीं। अंग्रेजी भाषा में 'धर्म' का सम्यक् और समग्र अर्थ प्रकट करने वाला कोई शब्द ही नहीं है। 'धर्म' का अंग्रेजी में अनुवाद 'रिलीजन' किया जाता है। किन्तु 'रिलीजन' धर्म का पर्याय नहीं हो सकता। मैं अपनी भाषा के कुछ प्रचलित शब्द यहाँ प्रस्तुत करता हूँ। उनका 'रिलीजन' से बने शब्दों द्वारा अनुवाद किया जाये तो कैसी हास्यास्पद स्थिति बनती है, यह कुछ उदाहरणों से स्पष्ट किया जा सकता है। धर्मशाला को क्या कहेंगे अंग्रेजी में? 'रिलीजियस स्कूल?' इसी तरह 'धर्मार्थ अस्पताल का' क्या 'हॉस्पिटल फॉर रिलीजन्स'

धर्म व्यष्टि, समष्टि और सृष्टि तीनों को जोड़ कर रखता है। इसलिये हमारे यहाँ प्रकृति को जीतने की बात नहीं की है। हमने प्रकृति की पूजा, प्रकृति की पवित्रता की बात की है।

अनुवाद करेंगे? 'राजधर्म' यानी क्या 'राजा का रिलीजन', जो प्रजा का नहीं हैं। 'पुत्रधर्म' को क्या बेटे का रिलीजन कहेंगे, जो माँ-बाप का नहीं है?

धर्म का मूल

'धर्म' शब्द मूलत: 'धृ' संस्कृत धातु से बना है। 'धृ' का अर्थ होता है, जोड़ के रखना। स्थिति और स्थिरता प्रदान करना, यानी धारणा करना। महाभारत में कहा गया है कि 'धारणाद् धर्म इत्याहु:, धर्मो धारयते प्रजा:' 'धारणा' यानी 'स्थिति' और 'स्थिरता'। वह धारणा करता है इसलिये उसे 'धर्म' कहा गया है। और 'धर्म' प्रजा की धारणा करता है। हम अपने लिये कितना भी बड़ा मकान बनायें, वह 'धर्म' नहीं होता। जब औरों के, अपरिचितों के निवास की व्यवस्था करते हैं, तब 'धर्मशाला' खड़ी होती है। हम अपने या परिवार के लिये कितनी भी दवाइयाँ रखें, उसे 'धर्म' नहीं कहते। जब अन्यों के आरोग्य के लिये दवापानी की नि:शुल्क व्यवस्था करते हैं, तब धर्मार्थ अस्पताल बनता है। 'राजधर्म' यानी राजा के वे कर्तव्य जो उसे प्रजा के साथ जोड़ते हैं। और 'पुत्रधर्म' यानी पुत्र के वे कर्तव्य जो उसे माता-पिता के साथ जोड़ते हैं।

तो 'धर्म' का अर्थ होता है,

अपने को व्यापकता से जोड़ना। कितनी व्यापकता से आप अपने को जोड़ेंगे, इस की कोई सीमा नहीं। हमें अपने आप को पूरे समाज के साथ जोड़ना चाहिये। आखिर अपने जीवन में और जीवन के लिये भी 'समाज' आवश्यक है। अन्दमान निकोबार द्वीप समूह में अनेक द्वीप निर्जन हैं। क्या कोई वहाँ अपनी दूकान खोलेगा? या हिमालय के एवरेस्ट शिखर पर कोई अपना कारखाना खोलेगा? नहीं। अपने जीवनयापन के लिये समाज आवश्यक है। समाज से हमारा अटूट सम्बन्ध है। उस समाज की सेवा हमारे द्वारा होनी चाहिये। हम जो उपार्जन करते हैं उसका एक अंश समाज सेवा में लगना चाहिये। हमारे आस-पास समाज सेवा के अनेक कार्य चलते हैं, उनमें कहीं न कहीं हमारा भी योगदान होना चाहिये। यह योगदान भी समर्पण के भाव से होना चाहिये, उपकार के भाव से नहीं।

व्यष्टि और समष्टि

एक छोटी सी कहानी है । एक याचक और दाता की। याचक ने दाता से कहा कि आप बिना कारण अपने को श्रेष्ठ मानते हैं। अरे, हम याचक हैं, इसलिये आप दाता हैं। हम आप से श्रेष्ठ हैं। तब दाता ने उत्तर दिया, ''अरे भिखमंगे, हमारे सामने भिक्षा पाने के लिये हाथ फैलाते हो और स्वयं को श्रेष्ठ मानते हो।'' उनका झगड़ा समाप्त नहीं हुआ। तब वे दोनों एक गुरु के पास गये और उनसे सवाल किया कि ''गुरुजी, आप ही बताइये कि दाता श्रेष्ठ होता है या याचक?'' तब गुरुजीने उत्तर दिया, ''दातृयाचकयोर्भेद: कराभ्यामेव सूचित:'' दाता और याचक का भेद उनके हाथों से ही सूचित होता है। दाता का हाथ ऊपर होता है, याचक का नीचे। पांच रुपया भी कोई देता है, तो भी देनेवाले का हाथ ऊपर और लेनेवाले का नीचे ही रहेगा।

तात्पर्य यह है कि व्यक्ति को किसी न किसी रूप से अपने को समाज के साथ जोड़ना चाहिये। शास्त्रीय परिभाषा

परमार्थसाधना यानी पूजा-पाठ, उपासना आदि करते समय भी समाज और सृष्टि का भी ध्यान रखना चाहिये। पूजा-पाठ, उपासना आदि रिलीजन हैं, सम्पूर्ण धर्म नहीं हैं।

का प्रयोग करना हो तो यह कहना उचित होगा कि व्यष्टि (व्यक्ति), समष्टि (समाज) के साथ निरन्तर जुड़ी होनी चाहिये।

सृष्टिधर्म

किन्तु विश्व में केवल मानव ही नहीं रहते। पशु होते हैं, पक्षी होते हैं, पहाड़ होते हैं, नदियाँ होती हैं, इनके साथ भी मानव को अपने को जोड़ना चाहिये। इनके बारे में भी पवित्रता की भावना हमारे मन में नित्य रहनी चाहिये। इसी हेतु पशु-पक्षियों तथा नदी-पर्वतों को भगवान के किसी ना किसी रूप के साथ हमारे पूर्वजों ने जोड़ रखा है। महाकवि कालिदास ने हिमालय को 'देवतात्मा' कहा है। सारे तीर्थ तथा कुंभ मेलों का आयोजन नदी के किनारे ही होता है। गंगा नदी केवल नदी नहीं होती, वह गंगा मैया बनती है। गांव में रहने वाले लोग अपने गांव की छोटी नदी को भी गंगा बोलते हैं। पशुओं को भी भगवान के साथ जोड़ दिया गया है। गौ भगवान कृष्ण के साथ, बैल (नंदी) भगवान शंकर के साथ, गरुड़ भगवान विष्णु के साथ। वनस्पतियों में तुलसी भगवान विष्णु के साथ, बिल्व भगवान शंकर के साथ, औदुंबर (गूलर) भगवान दत्तात्रेय के साथ तथा वट सावित्री के

साथ। इस प्रकार सारी सृष्टि को हमने पवित्रता अर्पण की हैं। हमारे पूर्वजों ने 'पर्यावरण' शब्द का प्रयोग नहीं किया है, किन्तु पर्यावरण का भान हमेशा रखा है। यह तीसरा अस्तित्व है जिसे हम 'सृष्टि' कहते हैं। अपना धर्म, व्यष्टि, समष्टि और सृष्टि तीनों को जोड़ के रखता है। इसलिये हमारे यहाँ 'निसर्ग पर विजय' (Conquest of Nature) की बात नहीं की है। हमने निसर्ग की पूजा (Worship of Nature) की यानी निसर्ग की पवित्रता की बात की है।

परमेष्ठी

इस प्रकार व्यष्टि, समष्टि और सृष्टि के अलावा एक चौथा तत्व है उसको हम परमेष्ठी कहते हैं। परमेष्ठी यानी परमात्मा। अपने शरीर में जो आत्मतत्व रहता है, वह परमात्मा का ही अंश है। आद्य शंकराचार्य ने बताया है कि 'जीवो ब्रह्मैव नापर:' यानी शरीर में निवास करनेवाला प्राणतत्व यह ब्रह्म ही है। ये प्राणतत्व जब शरीर से निकल जाता है, तब वह प्राणतत्व परमात्म तत्व से एकरूप हो जाता है। जिस कमरे में हम रहते है, उसके अंदर भी आकाशतत्त्व रहता है। वह दीवारों के कारण वहाँ सीमित है। दीवारें टूटने के बाद वह आकाशतत्व बाहर के विशाल आकाश के साथ मिलता है। उसी प्रकार अपनी देह के अंदर का आत्मतत्व परमात्म तत्व से एकरूप हो जाता है। तब वह देह घर में रखने लायक नहीं होती। उसका दहन करना पड़ता है।

> ऐहिक उन्नति करते समय भी हमें पारमार्थिकता को नहीं भूलना चाहिये और परमार्थसाधना यानी पूजा-पाठ, उपासना आदि करते समय भी समाज और सृष्टि का भी ध्यान रखना चाहिये।

'धर्म' का सम्पूर्ण स्वरूप

तो ये जो चार अस्तित्व हैं व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि और परमेष्ठी, उनको जोड़ने का और उनकी धारणा करनेवाला सूत्र यानी धर्म है। वैशेषिकों ने 'यतोऽभ्युदयनि:श्रेयससिद्धि: स धर्मा:' ऐसी परिभाषा की है। उसका अर्थ यह है कि जिसके कारण अभ्युदय यानी ऐहिक उन्नति, और नि:श्रेयस यानी सर्वश्रेष्ठ पारमार्थिक कल्याण प्राप्त होता है वह धर्म है। यह भी निरन्तर ध्यान में रखना चाहिये कि अभ्युदय और नि:श्रेयस दोनों नित्य परस्पर संलग्न हैं। अर्थ यह है कि ऐहिक उन्नति करते समय भी हमें पारमार्थिकता को नहीं भूलना चाहिये और परमार्थसाधना यानी पूजा-पाठ, उपासना आदि करते समय भी समाज और सृष्टि का भी ध्यान रखना चाहिये। पूजा-पाठ, उपासना आदि रिलीजन हैं, सम्पूर्ण धर्म नहीं हैं। धर्म की इस व्यापक और सर्वसमावेशक अवधारणा को हमें समझ लेना चाहिये और उसी के अनुरूप अपना आचरण और व्यवहार होना चाहिये। ■

भारत की एकात्मता महनीय है

❑ **शिशिर कुमार मित्र**

स्व. शिशिर कुमार मित्र महर्षि अरविन्द के प्रमुख शिष्यों में से थे। उनका अधिकांश जीवन पुडुचेरी के श्री अरविन्द आश्रम में ही बीता। श्री अरविन्द का जो विपुल साहित्य है उसके संकलन व सम्पादन में श्री शिशिर मित्र की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने स्वयं ने भी अनेक पुस्तकें लिखीं जिनमें से एक है 'डॉन इटरनल' (शाश्वत प्रभात)। इसके प्रथम अध्याय 'द सिग्निफिकेंस ऑफ इण्डिया' में उन्होंने अद्‌भुत भारत-भूमि और यहाँ की एकात्मता का वर्णन किया है। प्रस्तुत लेख उक्त अध्याय के कुछ अंशों का भावानुवाद है।

माता भूमिः पुत्रोऽहंपृथिव्याः (यह भूमि माता है और हम इसके पुत्र हैं) यही भाव भारत में रहने वाले प्रत्येक भारतीय का अपने देश के प्रति है जिसके चलते इस भू-भाग की अखण्डता जिसे हम भारत वर्ष के नाम से जानते हैं आज तक विश्व के लिए एक आश्चर्य है। जब प्राचीन संस्कृतियाँ जैसे मिश्र, बैबीलोन, यूनान एवं रोम विश्व पटल से गायब हो गए तब भारत अपनी मातृभूमि के प्रति इसी आध्यात्मिक जननी भाव के कारण अपनी सांस्कृतिक एवं भौगोलिक एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने में सफल रहा।

विष्णु पुराण के अनुसार जो अठारहों पुराणों में सर्वाधिक प्राचीन है,भारत उस भूभाग का नाम है जो बर्फीली हिमालय पर्वतमालाओं के दक्षिण में और हिन्द महासागर के उत्तर में स्थित है और जिसमें राजा भरत के वंशज निवास करते हैं। ये भरत वही चक्रवर्ती सम्राट है जो दुष्यन्त एवं शकुन्तला के पुत्र हैं और इतने साहसी कि सम्पूर्ण देश को जिन्होंने एकीकृत राजनैतिक व्यवस्था द्वारा संचालित किया है। 'शतपथ ब्राह्मण' ग्रंथ में भरत शब्द उस अग्नि को प्रतिबिम्बित करता है जो भारतीय संस्कृति की द्योतक है। वही संस्कृति जो नदियों एवं घाटियों के तटों पर विकसित हुई थी। भारत शब्द का और एक अर्थ है भरत के वंशज जो सृष्टि का भरण पोषण करते हैं।

> "भारत और हिन्दुत्व इस प्रकार जुड़े हैं जैसे शरीर और आत्मा"
>
> -सर जे.रेम्जे.मेकडोनेल्ड
> *(पूर्व प्रधानमंत्री-इंग्लैण्ड)*

सब मत-पंथों के तीर्थस्थल

ऋग्वेद में ऐसी ऋचायें हैं जो भारत वर्ष में प्रवाहित होने वाली नदियों की प्रार्थना करती हुई गाई गई हैं। इनमें बताया गया है कि इन पुण्यतोया नदियों के बीच की उपजाऊ भूमि किस प्रकार मानव जाति के लिए प्रकृति का एक अमूल्य उपहार है। संस्कृत साहित्य में ऐसे अनेक श्लोक हैं जो भारत में बहने वाली प्रमुख नदियों का वर्णन करते हैं एवं प्रत्येक हिन्दू प्रतिदिन स्नान के समय इन पवित्र नदियों का स्मरण करते हुए उनका आह्‌वान करता है कि आप मेरे स्नान के जल में समाहित होकर मुझे आशीर्वाद प्रदान करें। और जब वह इन नदियों का स्मरण करता है तो उस पूरे देश का ध्यान करता है जिसमें ये सरितायें प्रवाहित हो रही हैं।

इसी प्रकार उत्तर और दक्षिण के

कोई भी कारण हो किन्तु यह एक सचाई है कि विविधता में एकता उत्पन्न करने का कौशल पूरी दुनिया को भारत की विशेष भेंट है। भारत में हमेशा विविध विचारों एवं विभिन्न समुदायों में सामंजस्य उत्पन्न करने की क्षमता एवं इच्छा शक्ति रही है। – सी.ई.एम.जोड (इंग्लैण्ड के दार्शनिक)

पवित्र नगरों को भी स्तोत्रों में अमर कर दिया गया है तथा प्रतिदिन की प्रार्थनाओं में इन्हें स्मरण किया जाता है। इतना ही नहीं भारत की एकता में तीर्थयात्राओं का भी प्रमुख स्थान है।

भारत के प्रत्येक मत-पंथ के तीर्थ-स्थल पूरे भारत में फैले हुए हैं। जब श्रद्धालु इन पवित्र तीर्थ स्थलों की यात्रा करते हैं तो एक स्थान से दूसरे स्थान के बीच में पड़ने वाले अनेक स्थानों के रहने वाले लोगों के सम्पर्क में आते हैं और इस तरह उन्हें पूरे देश की विशालता और एकात्मता अनुभव करने का अवसर प्राप्त होता है। समान मान्यताओं के चलते उन्हें एकता का भान होता है तथा उनमें आपसी भाईचारा और सौहार्द पनपता है।

बारह वर्ष में एक बार आयोजित होने वाले कुम्भ मेले जो कि प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक एव उज्जैन में बारी-बारी से आयोजित होते हैं सम्पूर्ण हिन्दू समाज को एक जगह इकट्ठा कर उनमें राष्ट्रीय एकता का भाव जाग्रत करते हैं। इसी प्रकार कुरुक्षेत्र में सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण के अवसर पर आयोजित होने वाले मेले भी सम्पूर्ण हिन्दू समाज को एक स्थान पर एकत्रित होने का अवसर प्रदान करते हैं जहां वे एक दूसरे को जानने-समझने का अवसर प्राप्त करते हैं।

शैव, वैष्णव, शाक्य, बौद्ध, जैन, सिक्ख आदि सभी मत-पंथों के तीर्थ स्थल भी पूरे देश की श्रद्धा के केन्द्र हैं। सम्राट अशोक ने अपने शासन काल में देश के चारों ओर चौरासी हजार अशोक स्तम्भ स्थापित किए थे। ऐसे स्तम्भ और बौद्धों के मठ एवं स्तूप देश के कोने-कोने में बिखरे पड़े हैं जिनकी यात्रा करना प्रत्येक देशवासी अपना सौभाग्य समझता है। इन अशोक स्तम्भों पर एक ही भाषा-लिपि में उपदेश लिखे हुए हैं। इसका अर्थ है कि ईसा के तीन सौ साल पहले उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक का पूरा भारत एक भाषा को समझता था। यह सिद्ध करता है कि आज से ढाई हजार वर्ष पहले भी भारत सांस्कृतिक रूप से मजबूती से एक था।

माँ भगवती की आराधना करने वाले भारत के कोने-कोने में स्थित इक्यावन शक्तिपीठों पर श्रद्धा रखते हैं। ये इक्यावन शक्तिपीठ पूरे देश में उत्तर में हिमाचल प्रदेश के ज्वालामुखी से दक्षिण में कन्याकुमारी तक एवं पूर्व में कामाख्या से लेकर पश्चिम में अम्बा माता तक बिखरे पड़े हैं। ये भारत माता की एकता और एकात्मता की घोषणा कर रहे हैं।

युगों पहले भारत की सन्तानों ने यहाँ की भौगोलिक और सांस्कृतिक एकता को समझ लिया था। यह भी समझ लिया था कि तमाम विविधताओं में एकता का यह संदेश भारत को पूरे विश्व में देना होगा।

विश्व को संदेश

भारत की एकता का एक और गहरा अर्थ है, हालांकि यह यहाँ की विविधताओं में कभी-कभी लुप्त हो जाता है। ऐसा क्यों है कि इतनी विविध भाषायें बोलने वाले, कई सम्प्रदायों के अनुयायी तथा भिन्न-भिन्न रीति-रिवाज मानने वाले लोग भारत में ही इकट्ठे हो गये। ऐसा भी क्यों है कि विविधताओं से भरी एक पूरी दुनिया ही भारत में दिखाई देती है। यह समझ लें कि कुछ भी अकारण नहीं होता। युगों पहले भारत की सन्तानों ने यहाँ की भौगोलिक और सांस्कृतिक एकता को समझ लिया था। यह भी समझ लिया था कि तमाम विविधताओं में एकता का यह संदेश भारत को पूरे विश्व में देना होगा और इसके लिये प्रत्यक्ष अपना उदाहरण प्रस्तुत करना होगा।

भारत के इतिहास में पग-पग पर विभिन्न समाजों, विविध विचारधाराओं तथा घोर विराधी दिखने वाली परम्पराओं में सामंजस्य का सफल प्रयोग होता दिखाई देता है। भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व की भलाई के लिये ये प्रयत्न हुए हैं। इंग्लैण्ड के दार्शनिक सी.ई.एम.जोड लिखते हैं,

'' कोई भी कारण हो किन्तु यह एक सचाई है कि विविधता में एकता उत्पन्न करने का कौशल पूरी दुनिया को भारत की विशेष भेंट है। भारत में हमेशा विविध विचारों एवं विभिन्न समुदायों में सामंजस्य उत्पन्न करने की क्षमता एवं इच्छा शक्ति रही है।''

' आक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इण्डिया' में इतिहासकार विंसेंट स्मिथ ने भी इसी प्रकार के विचार प्रकट किये हैं-

'' असंदिग्ध रूप से भारत में एक गहन एकात्मता है जो मात्र भौगोलिक या राजनैतिक नहीं है। यह एकात्मता जाति, भाषा, सम्प्रदाय, वेश-भूषा, रीति-रिवाज आदि की विविधताओं के बीच व उन्हें बनाये रखते हुए है।''

इस एकात्मता का कारण भारत के लोगों की यह श्रद्धा है कि भारत दुर्गा माता

असंदिग्ध रूप से भारत में एक गहन एकात्मता है जो मात्र भौगोलिक या राजनैतिक नहीं है। यह एकात्मता जाति, भाषा, सम्प्रदाय, वेश-भूषा, रीति-रिवाज आदि की विविधताओं के बीच व उन्हें बनाये रखते हुए हैं।

– विंसेंट स्मिथ (इतिहासकार)

का मन्दिर है, मातृभूमि है और यहाँ निवास करनेवाले सभी इस माता के पुत्र हैं। भारत एक शक्ति-पुंज है और इसकी सभी संतानें इस शक्ति के अंग होने के नाते एक हैं।

मातृभूमि के पुत्र सभी

वैदिक काल से आधुनिक काल तक, पुरातन ऋषि-मुनियों से आधुनिक कवियों तक हमने अपने देश को माँ की तरह पूजा है। अत्यंत प्राचीन काल में ऋग्वेद के **भूमि सूक्त** में इसी भारत भूमि का गुण गान किया गया है। इसकी प्राकृतिक सुन्दरता, वन, पर्वत, नदियाँ, झरने इत्यादि की सुन्दरता का बखान करते हुए इसे रत्नगर्भा बताया गया है। सबका मंगल करने वाली भारत माता की पवित्रता, इतिहास आदि का इस सूक्त में बड़े सुन्दर ढ़ंग से विवेचन किया गया है। इसी वंदना में हमारी जीवन पद्धति और जीवन मूल्यों का साक्षात्कार भी होता है।

इसी सूक्त में बताया गया है कि इस भूमि पर जन्म लेने के लिए देवता भी तरसते हैं। विष्णु पुराण और भागवत महापुराण भी घोषित करते हैं कि भारत वह देश है जिसमें देवता भी जन्म लेने को उत्सुक रहते हैं, क्योंकि उनको भी महानिर्वाण की प्राप्ति मनुष्य के रूप में भारत भूमि पर जन्म लेने से ही होगी। इसीलिये प्रत्येक भारतवासी भारत को देवभूमि और स्वर्ग से भी बढ़ कर मानता आया है।

कालिदास का मेघदूत हो, राजराजेश्वर की काव्य मीमांसा हो, प्रसाद की कामायनी हो या दिनकर की मातृभूमि वंदना हो प्रत्येक कवि ने अपने-अपने ढंग से इस भारत भूमि को अपने शब्दों में रूपायित, व्याख्यायित किया है। भाव सभी का एक ही है कि यह पुण्यभूमि मातृभूमि माता के समान पूजनीय है, वन्दनीय है, प्रातः स्मरणीय है। यही मातृभाव बंकिम चन्द्र चटर्जी के आनन्द मठ में **वन्देमातरम्** के रूप में प्रकट हुआ है। रवीन्द्र के जन-गण-मन एवं बंकिम के वन्देमातरम ने अनेकानेक स्वातंत्र्य वीरों को मातृभूमि के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करने की प्रेरणा दी है।

दुर्गा है भारत माता

अपनी पुस्तक भारत की मूल एकता (Fundamental unity of India) में इतिहासकार राधाकुमुद मुखर्जी ने भारत और हिन्दुत्व को शरीर और आत्मा के रूप में रेखांकित किया है। जब किसी ने 'वंदेमातरम्' को भारत का राष्ट्र गीत मानने पर इस आधार पर आपत्ति की थी कि इसमें मूर्ति पूजा का भाव है तो श्रीअरविन्द ने कहा कि यहाँ दुर्गा का तात्पर्य भारत माँ से है जो अपनी महानता वैभव, शक्ति एवं प्रकाश पुंज के रूप में इस राष्ट्र-गीत में विद्यमान है। कुल मिलाकर सार यह है कि 'हे मातृभूमि हम संतान हैं तथा तू जननी, तू प्राण है' के पवित्र भाव से हमने हमारे देश को पूजा है और यही भाव हमें सारे विश्व से अलग बनाता है, इसकी अखण्डता, एकता बनाए रखने में सहायक सिद्ध होता है।

विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का मंत्र देने वाली हमारी भारतीय संस्कृति ही विश्व को शांति का पाठ पढ़ा सकती है और सारा विश्व हमारी ओर इस दिशा में उत्सुकता से निहार रहा है। ■

दीपावली के दीप जले

❑ **रामगोपाल राही**, बून्दी

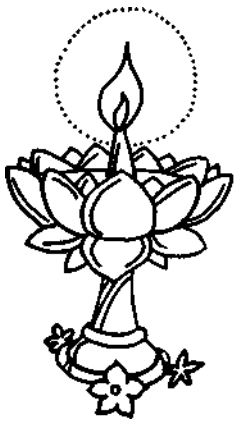

आंगन आंगन सजी रंगोली,
उजियारे के दीप जले ।
हुई दिवाली रात निकाली,
उल्लासों के दीप जले ।।

कण-कण चमक रहा धरती का,
स्वर्णिम आभा दीप जले ।
लक्ष्मी वंदन चंदन पूजा,
आस्था के दीप जले ।।

उल्लासों की फुलझड़ियों संग,
उज्वल उज्वल दीप जले ।
मुदित हुआ मन आशाओं के,
झिलमिल झिलमिल दीप जले ।।

उत्साह में चल रहे पटाखे ,
घर घर खुशियाँ दीप जले ।
जग-मग-जग-मग दीप दिवाली,
मुंडेरों पे दीप जले ।।

उजियाली हो गई अमावस,
मंगल कारी दीप जले ।
दीपक तले अँधेरा सिमटा,
दीवाली के दीप जले ।।

सप्त पर्वतों, नदियों व पुरियों में छिपी भारतीय एकात्मता

❑ डा. शुचि चौहान
एम.एस.सी.,पी.एच.डी.(वनस्पतिशास्त्र)
उपाध्यक्ष – विश्व संवाद केन्द्र, जयपुर

वेष, भाषा, रीति-रिवाज, मत-पंथ, खान-पान आदि की अनेक विविधताओं के बाद भी वैदिक काल से भारत में अद्भुत एकता रही है। यह एकता भौगोलिक के साथ-साथ सांस्कृतिक भी थी। सम्पूर्ण देश के प्रति मातृ-भूमि का भाव सदा से रहा। यह श्रद्धा-भाव देश भर में स्थित पर्वत श्रृंखलाओं, सरिताओं तथा नगरों की पूजा में प्रकट हुआ। ऐसे ही पर्वतों, नदियों तथा पुरियों की जानकारी प्रस्तुत लेख में है।

भारत को ऋषि मुनियों का देश कहा जाता है। यहां की संस्कृति में आध्यात्म का सर्वोच्च स्थान रहा है। इस सनातनकालीन सभ्यता में अनेक ग्रंथों की रचना हुई, जिन्हें श्रुति और स्मृति दो भागों में बांटा गया। श्रुति हिंदू धर्म के सर्वोच्च ग्रंथ हैं जो पूर्णतया अपरिवर्तनीय हैं, इनमें किसी भी युग में कोई बदलाव नहीं किया जा सकता। स्मृति ग्रंथों में देश-कालानुसार बदलाव हो सकता है। श्रुति के अंतर्गत चारों वेद- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद व अथर्ववेद, ब्रह्मसूत्र व उपनिषद आते हैं। वेद श्रुति इसलिए कहे जाते हैं क्योंकि ऐसी मान्यता है कि इन्हें परमात्मा ने ऋषियों को तब सुनाया था जब वे गहरे ध्यान में थे।

इन वेद पुराणों में सप्त संख्या का बड़ा महत्व है, जैसे सप्त पर्वत (महेन्द्र, मलय, हिमालय, सह्याद्रि, विंध्याचल, रैवतक, अरावली) सप्त नदियां (गंगा, यमुना, गोदावरी, सिंधु, सरस्वती, कावेरी व नर्मदा) व सप्त पुरियां (अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, कांची, अवंतिका व द्वारका आदि।

सप्त पर्वत

सातों पवित्र पर्वत पूरे भारत में हैं तथा भारत की एकात्मता को पुष्ट करते हैं। इनका उल्लेख महाभारत के भीष्म पर्व में हुआ है। भारत के अतिरिक्त पाकिस्तान, नेपाल, तिब्बत और ब्रह्मदेश में विस्तारित **हिमालय** को तो देवतात्मा कहा गया है। उक्त चारों देश डेढ़ सौ वर्ष पूर्व तक भारत के ही अंग थे। **अरावली** पर्वत माला राजस्थान में है तथा इसका कुछ हिस्सा हरियाणा तथा गुजरात में भी है। भारत के मध्य में स्थित **विंध्याचल** गुजरात, मध्यप्रदेश, बिहार तथा ओडिशा तक विस्तृत है। **रैवतक** पर्वत आज-कल गिरनार के नाम से प्रसिद्ध है। यह गुजरात में है तथा भगवान शिव का पवित्र स्थान माना जाता है। प्रसिद्ध तीर्थ स्थल पालीताना (जैन सम्प्रदाय)भी गिरनार पर ही है। महाराष्ट्र से लेकर केरल तक फैले पश्चिमी समुद्री घाट के उत्तर में **सह्याद्रि** तथा दक्षिण में **मलय** पर्वत है। सह्याद्रि का विस्तार दक्षिणी गुजरात, महाराष्ट्र तथा उत्तरी कर्नाटक तक है। छत्रपति शिवाजी महाराज की ये पहाड़ियाँ कर्मस्थली रही हैं। गोदावरी, कृष्णा और कावेरी इन्हीं पर्वत श्रृंखलाओं से प्रकट होती हैं।

मलय पर्वत चन्दन के वृक्षों के लिए प्रसिद्ध है। आधुनिक काल में इसका नाम नीलगिरि है। कर्नाटक के दक्षिणी भाग, तमिलनाडु तथा केरल तक यह विस्तृत है। वेद-काल में कई ऋषियों ने यहाँ तपस्या की है। **महेन्द्र गिरि** उत्कल (ओडिशा) में है तथा पूरे गंजाम जिले में फैला हुआ है। भगवान परशुराम का आवास महेन्द्र गिरि पर ही माना जाता है। चोल साम्राज्य के सुप्रसिद्ध सम्राट राज-राजा राजेन्द्र चोल ने अपनी विजय की स्मृति में यहाँ एक स्तम्भ का निर्माण कराया था। कालिदास ने 'रघुदिग्विजय' में इस पर्वत

का विस्तार से वर्णन किया है।

सप्त नदियां

शिव पुराण में एक श्लोक आया है,

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन सन्निधिं कुरू।।

इसमें गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी को सप्तगंगा कहा गया है।

१) गंगा– गंगा उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में स्थित गंगोत्री नामक हिमनद से निकलकर ऋषिकेश, हरिद्वार, कन्नौज, कानपुर, प्रयाग, वाराणसी, बक्सर, पटना, हाजीपुर, मुंगेर, कटिहार, साहिबगंज, फरक्का, मुर्शिदाबाद, प्लासी तथा नबाद्वीप होती हुई गंगा सागर (बंगाल की खाड़ी) में समा जाती है। यह भारत की तीसरी सबसे लम्बी नदी है।

कहा जाता है राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया। इससे इंद्र को अपने सिंहासन की चिंता सताने लगी। उन्होंने यज्ञ का घोड़ा चुराकर कपिल मुनि के आश्रम में बांध दिया। ऋषि ध्यान में लीन थे। सगर को जब घोड़ा नहीं मिला तो उन्होंने अपने ६० हजार पुत्र घोड़े की तलाश में भेजे। उन्हें वह कपिल मुनि के आश्रम में मिला तो उन्हें लगा कपिल मुनि ने ही घोड़ा चुराया है। सगर पुत्र घोड़ा खोलने लगे, इस बीच हुए शोर से मुनि का ध्यान टूट गया तथा वे अत्यंत क्रोधित हुए। उस क्रोधाग्नि से सगर पुत्र वहीं भस्म हो गए और प्रेत के रूप में भटकने लगे। तब उनके एकमात्र जीवित बचे भाई आयुष्मान ने कपिल मुनि से याचना की कि वे कोई ऐसा उपाय बताएँ जिससे उनके अन्तिम संस्कार की क्रियाएँ हो सकें और वे मुक्ति पाकर स्वर्ग में जगह पा सकें। मुनि ने कहा कि इसके लिए ब्रह्मा से प्रार्थना कर गंगा को धरती पर लाना होगा।

कई पीढ़ियों बाद सगर कुल के भगीरथ ने कठोर तपस्या की। तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने गंगा को धरती पर उतरने को कहा। गंगा प्रचण्ड वेग से उतरीं तो शिव ने उन्हें अपनी जटाओं में कैद कर लिया और भगीरथ के कहने पर उन्हें धीरे-धीरे अपनी जटाओं से आजाद किया। धरती पर आने के बाद गंगा भगीरथी कहलाईं। राख के ढेरों से गुजरते हुए गंगा ने जह्नु मुनि के आश्रम को डुबो दिया। गुस्से में आकर मुनि ने गंगा को लील लिया। एक बार फिर भगीरथ को मुनि से गंगा को मुक्त करने हेतु प्रार्थना करनी पड़ी। इस तरह गंगा बाहर आईं और अब वह जाह्नवी कहलाईं। तब से लोग मोक्ष प्राप्ति के लिए अस्थि विसर्जन और पितृ तर्पण गंगा में करते हैं। पूरे विश्व में गंगा एकमात्र नदी है जिसका जल कभी खराब नहीं होता। भारत ही नहीं विश्व के अनेक देशों के लिये इसीलिये गंगा माता है, पतित पावनी है।

२) यमुना – हिमालय की एक चोटी है बंदरपुच्छ। यह उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल जिले में है। यह बहुत ऊंची है तथा इसे सुमेरु भी कहते हैं। इसके एक भाग का नाम कलिंद है। इसी पर बर्फ की एक झील और चंपासर नाम का हिमनद है। इसी से निकलती है यमुना। फिर ८ किमी. चलकर घाटी में आती है, जिसे यमुनोत्री कहते हैं। इस घाटी में खड़े होकर देखने पर दो पतली धाराएं पहाड़ से उतरती दिखाई देती हैं, नीचे आकर दोनों मिल जाती हैं और कहलाती हैं यमुना। घाटी से यमुना उछलती कूदती, रास्ते में अनेक झरनों को समेटते हुए शिवालिक की पहाड़ियों में घूमती घामती बड़े वेग से निकलती है, फिर दिल्ली होते हुए मथुरा, आगरा में प्रवेश करती है। आगरा से गुजरती हुई रास्ते में करवान और बेन गंगा को साथ लेकर इटावा और फिर कालपी पहुंचती है। यहां चम्बल और अरावली की अन्य धाराएं इसमें समाहित हो जाती हैं। मालवा में सिंध और आगे बेतवा व केन को साथ लेकर यह प्रयाग पहुंचती है। यहां आकर यमुना और गंगा एक हो जाती हैं। यमुना गंगा को अपना जल ही नहीं देती, जीवन भी दे देती है। प्रयाग के संगम में दोनों की धाराओं को एक होते देखा जा सकता है। गंगा का पानी सफेद है और यमुना का नीला। यह संगम त्रिवेणी कहलाता है, कभी सरस्वती भी यहीं पर गंगा में मिलती थी।

काशी का गंगाघाट

३) सिंधु – सिंधु नदी का उद्गम स्थल तिब्बत के मानसरोवर के निकट है। यह नदी हिमालय की दुर्गम कंदराओं से निकलकर कश्मीर और गिलगित होती हुई सुलेमान के निकट पाकिस्तानी सीमा में प्रवेश करती है और करांची के दक्षिण में स्थित सिन्धु (अरब) सागर में विलीन हो जाती है। असम का प्रसिद्ध **कामाख्या** शक्तिपीठ ब्रह्मपुत्र के तट पर ही है। यहाँ ब्रह्मपुत्र को लोहित कहा जाता है।

हिंदुओं की प्राण सिंधु नदी का अधिकांश हिस्सा अब पाकिस्तान में है। देश का विभाजन हो गया और विभाजन हो गया उस मां स्वरूप नदी का जिसने अपने सभी पुत्रों को एक जैसी ममता से सींचा था और समृद्ध होते देखा था। मुल्तान में सिंधु-चिनाब नदी के किनारे कृष्ण के पुत्र साम्ब की याद में बना सूर्य मंदिर है। कोणार्क के सूर्य मंदिर से मिलते जुलते इस मंदिर के अब अवशेष ही हैं। ५१ शक्तिपीठों में एक माता **हिंगलाज** का मंदिर भी पाकिस्तान के बलोचिस्तान में है।

४) गोदावरी – गोदावरी दक्षिण भारत की एक प्रमुख नदी है। गंगा और गोदावरी के महात्म्य में जरा भी फर्क नहीं है। श्रीराम के सुख के दिन गोदावरी के तट पर बीते तो दुख के दिन भी यहीं शुरू हुए जब रावण ने गोदावरी के किनारे पंचवटी से सीता का हरण कर लिया। दक्षिण में कृष्णा और गोदावरी इन दो नदियों ने सदियों से वहां के लोगों का पोषण किया है।

गोदावरी जितनी सलिल समृद्ध है उतनी ही इतिहास समृद्ध भी। अनेक राज

आए चले गए परंतु यह निरंतर, अविरल, अखंड बह रही है। त्र्यंबक के निकट ब्रह्मगिरि से निकलती गोदावरी महाराष्ट्र, तेलंगाना और आंध्रप्रदेश को धनधान्य से पूर्ण करती हुई राजमुंद्री के निकट गंगा सागर (बंगाल की खाड़ी) में विलीन हो जाती है। दूर दूर से पानी लाने वाली प्राणहिता, शबरी और इंद्रावती गोदावरी को ताकत देती हुई उसमें ही विलोपित हो जाती हैं। गोदावरी के नीर में अमोघ शक्ति है तभी तो लोग गंगाजल से भरा कलश यहां लाते हैं और गोदावरी में आधा खाली कर फिर गोदावरी का जल उसमें भर घरों को ले जाते हैं, गंगा और गोदावरी दोनों का महात्म्य पाने के लिए्।

५) सरस्वती – महाभारत में मिले वर्णन के अनुसार सरस्वती हरियाणा में यमुनानगर से थोड़ा ऊपर और शिवालिक की पहाड़ियों से थोड़ा नीचे आदिबद्री नामक स्थान से निकलती थी। परंतु नए शोधों के अनुसार इसका उद्गम उत्तरांचल के रूपण हिमनद को माना गया है। नैतवार में आकर यह हिमनद जल में परिवर्तित हो जाता था फिर जलधार के रूप में आदि बद्री तक सरस्वती बहकर आती थी और आगे चली जाती थी। बाद में भूगर्भीय उथल पुथल के कारण यह विलुप्त हो गई। वेदों में एक विशाल नदी के रूप में इसका वर्णन मिलता है। ऋग्वेद का अधिकांश भाग सरस्वती नदी के तट पर ही रचित बताया जाता है।

महाभारत काल में सरस्वती नदी के किनारे बसे कई तीर्थ स्थलों का विवरण मिलता है। वर्तमान में खुदाई के दौरान मुख्यत: कालीबंगा, लोथल में यज्ञकुंडों के अवशेष मिले हैं। अब तक की खोजों के अनुसार यह नदी हिमाचल, हरियाणा, पंजाब और राजस्थान से होकर गुजरती थी और १५०० किमी का सफर तय कर सिंधु (अरब) सागर में मिल जाती थी।

६) नर्मदा – स्कंद पुराण में कहा गया है –

त्रिभि: सारस्वतं पुण्यं
समाहेन तु यामुनम्।
साद्य: पुनाति गांगेयं दर्शनाद्व नर्मदा।।

अर्थात् संसार में सरस्वती का जल तीन दिन में, यमुना का जल सात दिनों में, गंगा का जल स्नान मात्र से और नर्मदा का जल दर्शन मात्र से जीवों को पवित्र कर देता है। पतित पावनी मां नर्मदा की महिमा अनंत है। यह गंगा से भी प्राचीन है और पग-पग पर पूजनीय है।

मध्य प्रदेश के शहडोल जिले के एक छोटे से कुंड मैकाल से नर्मदा का जल गोमुखी धार होकर प्रकट हुआ और कुछ दूरी पर जाकर विलीन हो गया जिसे माई की बगिया कहते हैं। वहां से ५-६ किमी दूर अमरकंटक में एक कुंड से कपिलधारा के रूप में प्रकट होकर नर्मदा वेग से प्रवाहित होती है। इसकी कुल ११३ सहायक नदियां हैं। ओंकारेश्वर में माँ नर्मदा का मध्य भाग है। १२ ज्योतिर्लिंगों में एक ओंकार अमलेश्वर नर्मदा किनारे ही स्थित है। नर्मदा का एक प्रचलित नाम **रेवा** भी है। मैकाल-कन्या तथा रुद्रकन्या भी इसे कहा जाता है।

भारत की सभी प्रमुख नदियां पश्चिम से पूरब की ओर बहती हैं, परंतु नर्मदा पूरब से पश्चिम की ओर बहती है और सिंधु (अरब) सागर में विलीन हो जाती है। इसके पीछे भी एक कहानी है। कहते हैं राजकुमारी नर्मदा राजा मेखल की पुत्री थीं। राजा ने उनका विवाह राजकुमार सोनभद्र से तय किया। नर्मदा सोनभद्र से कभी मिली नहीं थीं विवाह से कुछ समय पूर्व उन्होंने अपनी दासी जुहिला के साथ सोनभद्र को प्रेम संदेश भेजा। सोनभद्र जुहिला को ही नर्मदा समझ बैठा। जुहिला के मन में भी खोट आ गया उसने राजकुमार को सच्चाई न बता उसका प्रणय निवेदन स्वीकार कर लिया। देर होने पर नर्मदा स्वयं सोनभद्र से मिलने पहुंची। दोनों को साथ देखकर वह अपमान की आग में जल उठी। सोनभद्र अपनी गलती पर पछताया परंतु नर्मदा ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। आज भी जयसिंहनगर के बरहा गाँव के निकट जुहिला (दूषित नदी) का सोनभद्र नदी से दशरथ घाट पर संगम होता है और यहां से नर्मदा उल्टी दिशा में बहती दिखाई देती है।

श्रीकृष्ण जन्मभूमि मन्दिर
मथुरा

७) कावेरी – दक्षिण भारत में दो पर्वत मालाएं हैं- पश्चिम में पश्चिमी घाट और पूरब में पूर्वी घाट। पश्चिमी घाट के उत्तरी भाग में है कुर्ग, जहां एक पहाड़ है सहापर्वत। इस पहाड़ के कोने में एक छोटा सा सरोवर है, यही है कावेरी नदी का उद्गम स्थल। पहाड़ के भीतर से फूटने वाली यह सरिता पहले सरोवर में गिरती है फिर झरने के रूप में बाहर निकलकर कनका और हेमावती को साथ में लेती हुई वेग से बहती है। कर्नाटक के भागमंडलम में कनका नदी से मिलने के बाद ही कावेरी को पूरा स्वरूप मिलता है। कर्नाटक से निकलकर कावेरी सेलम और कोयम्बटूर पहुंचती है और कावेरीपट्टनम के पास गंगा सागर (बंगाल की खाड़ी) में मिल जाती है। प्रसिद्ध कम्ब रामायण के रचयिता महाकवि कम्बन कावेरी के तट पर तंजावुर के पास के ही थे। अनेक प्रसिद्ध तीर्थ पवित्र कावेरी के तट पर हैं। इसलिए कावेरी को दक्षिण की गंगा कहा जाता है।

सप्त पुरियां

१) अयोध्या – सरयू तट पर बसा अयोध्या प्रभु श्रीराम का जन्म-स्थान है। अथर्ववेद में इसे ईश्वर का नगर बताया गया है और इसकी संपन्नता की तुलना स्वर्ग से की गई है। स्कंदपुराण के अनुसार अयोध्या शब्द 'अ'- ब्रह्मा, 'य'- विष्णु है तथा 'ध'- रुद्र का स्वरूप है। रामायण के अनुसार इसे 'मनु' ने बसाया था। शताब्दियों तक यह सूर्यवंश की राजधानी रहा। मूल रूप से यह मंदिरों का शहर है। श्रीराम के जन्म स्थान पर

१५२८ तक भव्य मंदिर था।

२) मथुरा – मथुरा भारत का प्राचीन नगर व कृष्ण की जन्म स्थली है। पौराणिक साहित्य में मथुरा को अनेक नामों से संबोधित किया गया है जैसे- शूरसेन नगरी, मधुपुरी, मधुनगरी, मधुरा आदि। उग्रसेन और कंस मथुरा के शासक थे। जहां भगवान कृष्ण का जन्म हुआ पहले वहाँ कारागार था। इस जगह पहला मंदिर श्रीकृष्ण के प्रपौत्र वज्रनाभ ने बनवाया। सम्राट विक्रमादित्य ने जीर्ण हुए इस मन्दिर का भव्य स्वरूप में पुनर्निमाण कराया, जिसे महमूद गजनवी ने तोड़ दिया। महाराजा विजयपाल देव के शासन में इसका पुनरोद्धार हुआ और पहले से भी विशाल मंदिर बनाया गया।

१६वीं शताब्दी के आरंभ में सिकंदर लोदी ने इसे फिर तोड़ दिया। ओरछा के शासक राजा वीरसिंह जूदेव बुन्देला ने पुन: इस खंडहर पड़े स्थान पर एक भव्य और पहले की अपेक्षा विशाल मंदिर बनवाया। इसके संबंध में कहा जाता है कि यह इतना ऊंचा और विशाल था कि आगरा से दिखाई देता था। लेकिन इसे भी मुगल औरंगजेब ने ध्वस्त कर दिया। इसकी भवन सामग्री से जन्मभूमि के आधे हिस्से पर उसने एक मस्जिद बनवा दी, जो आज भी विद्यमान है। वराह पुराण एवं नारदीय पुराण में मथुरा के पास १२ वनों मधुवन, तालवन, कुमुदवन, काम्यवन, बहुलावन, भद्रवन, खदिरवन, महावन (गोकुल), लौहजंघवन, बिल्व, भांडीरवन एवं वृन्दावन का उल्लेख मिलता है। इनके चारों ओर मथुरा की चौरासी कोसी परिक्रमा जग प्रसिद्ध है।

३) हरिद्वार – उत्तरांचल में गंगा तट पर बसे हरिद्वार को हरि अर्थात विष्णु का द्वार कहा गया है। यहीं पर गंगा हिमालय से मैदान में उतरती है। यहां पूजा करने से विष्णुपुरी के द्वार खुल जाते हैं। यहां स्थित ब्रह्मकुंड (हर की पौड़ी) में अमृत की बूंदे गिरी थीं इसलिए यहां स्नान करने से जन्म-मरण से मुक्ति मिल जाती है। इसी घाट पर विश्व प्रसिद्ध कुंभ का मेला लगता है। पुराणों में हरिद्वार को मायापुरी कहा जाता है व इसे पितरों के श्राद्ध कर्म व अस्थि विसर्जन आदि के लिए सर्वश्रेष्ठ कहा गया है।

४) काशी – उत्तरप्रदेश में स्थित काशी संसार की प्राचीनतम नगरी है। विश्व के सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में काशी का उल्लेख मिलता है।

पुराणों के अनुसार पहले यह भगवान विष्णु की पुरी थी। जहां श्रीहरि के आनंदाश्रु गिरे थे, वहां बिंदुसरोवर बन गया और प्रभु यहां बिंदुमाधव के नाम से प्रतिष्ठित हुए। महादेव को काशी इतनी अच्छी लगी कि उन्होंने इस पावन पुरी को विष्णुजी से अपने नित्य आवास के लिए मांग लिया। तब से काशी उनका निवास-स्थान बन गई। काशी में भारत का अत्यंत पवित्र स्थल है 'काशी विश्वनाथ मंदिर'।

इसका भी क्रूर औरंगजेब ने विध्वंस कर मंदिर की टूटी दीवारों पर ही मस्जिद खड़ी कर दी। बाद में महारानी अहल्याबाई ने इसी के निकट दूसरा मंदिर बनवाया। इन दिनों यहीं पर काशी-विश्वनाथ के दर्शन किये जाते हैं। दो नदियों वरुणा और असि के मध्य बसा होने के कारण इसका नाम वाराणसी पड़ा। यहीं पर दोनों नदियां गंगा में मिलती थीं।

५) कांची – तमिलनाडु के प्राचीन व प्रसिद्ध शहरों में से एक है- कांचीपुरम। इस मोक्षदायिनी पुरी को दक्षिण की काशी एवं मंदिरों की नगरी कहा जाता है। यहाँ १०८ शिवस्थल व १८ विष्णुस्थल हैं। यह पल्लव राजवंश की राजधानी रही है। आद्य शंकराचार्य काफी समय तक यहाँ रहे थे। इसलिये पाँचवी शंकर-पीठ **कांची-कामकोटि** भी यहीं पर है।

कांचीपुरम् स्थित
कांची शक्तिपीठ

ब्रह्मा जी ने यहाँ तपस्या की थी। **कांची शक्ति-पीठ** भी इसी पवित्र नगरी में है। यहाँ सती का कंकाल गिरा था। प्राचीन काल से यह नगरी वैष्णव, शैव, बौद्ध व जैन मतावलम्बियों का प्रधान तीर्थ-स्थल रही है।

६) अवंतिका – मोक्षदायिनी उज्जयिनी भारत का प्रसिद्ध शैव तीर्थ है। शिव के १२ ज्योतिर्लिंग में से एक ज्योतिर्लिंग महाकाल तथा दुर्गा के ५२ शक्तिपीठों में से एक शक्तिपीठ हरसिद्धि यहीं स्थापित है। यहां हर १२ वर्ष में सिंहस्थ कुंभ लगता है। इसके अलावा उज्जैन में भर्तृहरि की गुफा सहित कई प्राचीन स्थान हैं। शिव ने यहीं पर त्रिपुर पर विजय प्राप्त की थी। राजा अवंति के शासन के कारण इसे अवंतिका कहा जाता है। अवंतिका राजा विक्रमादित्य की नगरी भी कहलाती है। इसे पृथ्वी का नाभिदेश भी कहा जाता है। ज्योतिषीय गणनायें उज्जयिनी को ही केन्द्र मानकर की जाती थीं।

७) द्वारका – गुजरात राज्य के पश्चिमी सिरे पर समुद्र के किनारे स्थित चार धामों में से एक धाम, सात पवित्र पुरियों में से एक पुरी और आदि शंकराचार्य की चार पीठों में से एक पीठ है द्वारका। कृष्ण ने यहीं पर अलौकिक लीलाएं की थीं। जब कंस वध के प्रतिशोध में कंस के ससुर जरासंध ने बार बार कृष्ण पर आक्रमण किए तो कृष्ण ने समुद्र तट पर यह नगरी बसाई। मूल द्वारका नगरी समुद्र तल में होने के प्रमाण मिले हैं।

भारतीय संस्कृति में जनमानस युगों युगों से तीर्थ स्थानों पर जाकर पुण्य अर्जित करता रहा है। भारतीय धर्मग्रंथों में तीर्थों को संसार रूपी भवसागर को पार कराने वाला घाट कहा गया है। यहां पर्वत, नदियां और पुरियां सांस्कृतिक और आध्यात्मिक गौरव की आधारशिलाएं व जनमानस का तीर्थ हैं। तीर्थ स्थान श्रद्धालुओं के मन से पूरब पश्चिम और उत्तर दक्षिण का भेद मिटा देते हैं। एकात्मकता के प्रतीक तीर्थ समाज में आध्यात्मिक चेतना का संचार करते हैं और विविधता में एकता का संदेश देते हैं। ■

राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार द्वादश ज्योतिर्लिंग

❑ **केदार चतुर्वेदी**
पूर्व वरिष्ठ प्रबंधक (विपणन विभाग)
भारतीय तेल निगम

हमारे देश के विभिन्न प्रांतों में द्वादश ज्योतिर्लिंग जो कि भगवान शिव के बारह ज्योति स्वरूप हैं अवस्थित हैं। इन सभी शिव मंदिरों के दर्शन से सम्पूर्ण भारत की पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण की परिक्रमा हो जाती है। इस प्रकार हमें हमारे सम्पूर्ण देश को जानने समझने का अवसर मिलता है। इस प्रकार यह तीर्थ यात्रा सम्पूर्ण देश को एकता के सूत्र में पिरोने का भी कार्य करती है।

हमारा देश भारत सदियों से अनेक मत मतान्तरों को मानने वाला देश रहा है। देश के विभिन्न भू भागों में शैव, वैष्णव, शाक्य, जैन, सिख एवम बौद्ध मतावलम्बियों के तीर्थ बिखरे पड़े हैं। इस नाते देश वासी तीर्थयात्राओं के बहाने सम्पूर्ण देश का भ्रमण कर इसकी भौगोलिक पांथिक एवं सांस्कृतिक विविधता से परिचित होता है। इसी कड़ी में हमारे देश के पूज्य द्वादश ज्योतिर्लिंग हैं जो कि देश के बारह प्रसिद्ध शिव मंदिरों में स्थित हैं। स्वयंभू होने के कारण इनको ज्योतिर्लिंग की संज्ञा दी हुई है।

शिव पुराण की कथाओं के अनुसार भगवान शिव अपने भक्तों पर कृपा करने के लिए उक्त तीर्थों में निवास करते हैं और जहाँ-जहाँ उनके भक्तों ने उन्हें अपनी अर्चना से सन्तुष्ट किया है वहां-वहां वे प्रकट होकर ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थापित हो गए हैं। शिव पुराण (शतरुद्रसंहिता) के निम्न श्लोक के अनुसार बारह ज्योतिर्लिंग इस प्रकार हैं

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारम् अमरेश्वरम्।।
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने।।
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये।।
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति।।

सोमनाथ

सौराष्ट्र प्रदेश (वर्तमान गुजरात) में स्थित सोमनाथ का मन्दिर अपने अतीत और वैभव के लिए विख्यात है। हमलावरों से संघर्ष के कालखण्ड में इस मंदिर को कई बार तोड़ा गया किन्तु श्रद्धालुओं ने इसका पुनर्निर्माण कर इसे बार-बार नूतन स्वरूप में पुनर्स्थापित किया।

द्वादश ज्योतिर्लिंगों में प्रथम ज्योतिर्लिंग के रूप में यह गिना जाता है कहते हैं कि दक्ष प्रजापति की सत्ताइस कन्याओं का विवाह चन्द्रमा के साथ हुआ था जिसमें रोहिणी को चन्द्रमा सबसे अधिक चाहता था। अन्य कन्याओं ने इसकी शिकायत अपने पिता दक्ष प्रजापति से की। दक्ष ने चन्द्रमा को समझाया किन्तु वह नहीं माना तब दक्ष ने चन्द्रमा को क्षय रोग से ग्रसित होने का शाप दिया। चन्द्रमा के तप करने से भगवान सोमनाथ की कृपा से चन्द्रमा शाप मुक्त हुआ। चन्द्रमा को सोम भी कहा जाता है। इसलिए यह ज्योतिर्लिंग सोमनाथ के नाम से जाना जाता है। अंतिम बार ११ मई १९५१ को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने मंदिर में ज्योतिर्लिंग स्थापित कर इसकी प्राण प्रतिष्ठा की। इस प्रकार सोमनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार होकर उसका प्राचीन गौरव फिर से स्थापित हुआ।

मल्लिकार्जुन

यह ज्योतिर्लिंग आंध्रप्रदेश के कर्नूल जिले में श्री शैल पर्वत पर कृष्णा नदी के तट पर अवस्थित है। इसे दक्षिण का कैलास

कहा जाता है। यहाँ पार्वती को मल्लिका और शिव को अर्जुन नाम दिया गया है। इस तरह मल्लिकार्जुन के नाम से यह ज्योतिर्लिंग जाना जाता है।

पौराणिक आख्यानों के अनुसार अपने रूठे बड़े पुत्र स्वामी कार्तिक को मनाने शिव शक्ति सहित यहां पधारे और ज्योतिर्लिंग के रूप में अवस्थित हो गए।

महाकालेश्वर

मध्य प्रदेश के उज्जैन नगर में क्षिप्रा नदी के तट पर अवस्थित महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मालवा क्षेत्र का प्रसिद्ध तीर्थ है। यहाँ शिव पुराण के अनुसार एक वेद प्रिय ब्राह्मण की शिव भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव ज्योतिर्लिंग रूप में यहाँ प्रकट हो गए। दूषण नामक दानव ने हर एक यत्न कर वेदज्ञ ब्राह्मण को अपने धर्म से डिगाना चाहा किन्तु शिव भक्ति में लीन ब्राह्मण अपने धर्म से च्युत नहीं हुआ और उसके इस आचरण से प्रसन्न होकर शिव जी ने उस दानव का संहार कर लोक कल्याणार्थ अपने स्वरूप को उज्जयनी में महाकाल के रूप में स्थापित किया। उज्जैन को अवन्तिका भी कहा गया है। वैदिक काल में यह नगरी अपने वैभव के लिए विख्यात थी। प्रसिद्ध राजा भोज एवं कालिदास का सम्बन्ध इस नगरी से रहा है।

ओंकारेश्वर

मध्य भारत का प्रमुख तीर्थ स्थल ओंकारेश्वर नर्मदा के तट पर अवस्थित है। इसे मान्धाता द्वीप या शिवपुरी भी कहा जाता है।

पैराणिक कथा के अनुसार विंध्याचल पर्वत ने ओंकारेश्वर शिव की पूजा की। पूजा से शिव प्रसन्न हुए। तव विंध्य ने पार्थिव रूप में शिव को वहीं (ओंकारेश्वर में) विराजित रहने की प्रार्थना की। तभी यह ज्योतिर्लिंग दो स्थानों पर ओंकारेश्वर एवं अमरेश्वर के रूप में उपस्थित हो गया।

ओंकारेश्वर अनगढ़ प्रतिमा है जिसके चारों ओर जल भरा रहता है। भक्त यहाँ सच्चे मन से प्रार्थना कर अपनी मनोकामना पूर्ण करते हैं।

केदारनाथ

हिमालय के सुरम्य क्षेत्र में केदार पर्वत पर केदार नाथ का ज्योतिर्लिंग विराजमान है। शिव पुराण के अनुसार नर और नारायण ने इस क्षेत्र में भगवान शिव की आराधना की। तपस्या से प्रसन्न होकर शिव ने उन्हें वर मांगने को कहा तो उन्होंने शिव से लोक कल्याण के लिए यहीं प्रतिष्ठित होने की प्रार्थना की।

केदार तीर्थ समुद्र तल से ६९४० मी. की ऊँचाई पर स्थित है। यह अधिकांश समय हिमाच्छादित रहता है। ग्रीष्म ऋतु में हिम के पिघलने पर कुछ समय के लिये तीर्थयात्रियों के लिये इनके दर्शन सुलभ होते हैं। केदार नाथ मन्दाकिनी के तट पर अवस्थित है। पुराणों में ऐसा उल्लेख आता है कि अर्जुन को भगवान शिव ने किरात वेष में यहाँ दर्शन दिए थे तथा उसे पाशुपतास्त्र प्रदान किया था।

भीमशंकर

शिव पुराण (कोटिरुद्र संहिता- अध्याय २०) के अनुसार भीमशंकर ज्योतिर्लिंग कामरूप (असम) के गोहाटी के निकट ब्रह्मपुर पर्वत पर स्थित है। भगवान शिव का यहां एक भव्य और प्राचीन मंदिर है। जिस स्थान पर यह मन्दिर है उसे डाकिनी शिखर भी कहते हैं। शिव पुराण के अनुसार कामरूप नरेश के राज्य में भीमक नाम का असुर उत्पात मचा रहा था। राजा परम शिवभक्त था उसकी प्रार्थना पर शिव जी लोक कल्याणार्थ यहां अवस्थित हो गए तथा राक्षस का वध कर दिया। इसी अध्याय में आगे बताया गया है कि ब्रह्मपुर पर्वत पर स्थित भगवान शिव का मूल निवास सह्याद्रि पर्वत माला है। यहाँ भीमा नदी के तट पर भी भव्य शिव मंदिर है। इसलिये मतान्तर से भीमशंकर ज्योतिर्लिंग यहाँ भी माना जाता है।

केदारनाथ

काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग

इन स्थानों पर दूर-दूर से शिवभक्त भगवान शिव के दर्शनार्थ प्रतिवर्ष आते हैं।

विश्वनाथ

विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग काशी में स्थित है। यह अत्यंत प्राचीन तीर्थ स्थान है। शिव पुराण के अनुसार भगवान शिव ने काशी नगरी को अपने त्रिशूल पर उठा रखा था तथा उन्होंने स्वयं ही अपने स्वरूप को वाराणसी (काशी) में स्थापित किया और उससे कहा- हे मेरे अंश स्वरूप तुम्हें मेरे इस क्षेत्र का कभी त्याग नहीं करना चाहिए। ऐसा कहकर स्वयं सदाशिव ने उस काशी को अपने त्रिशूल से उतारकर मत्युलोक संसार में स्थापित कर दिया। इस प्रकार सबके स्वामी शंकर लोकोपकारार्थ यहाँ निवास करने लगे।

काशी का स्थान सप्तपुरियों में भी एक है। यहाँ विश्वेश्वर भगवान शिव निरंतर विराजते हैं। वाराणसी उत्तर प्रदेश का एक महत्वपूर्ण धार्मिक, सांस्कृतिक व्यापारिक स्थल है। लेकिन सदियों से यह विश्वनाथ

रामेश्वरम् स्थित ज्योतिर्लिंग

की नगरी के रूप में विख्यात है।

त्र्यम्बकेश्वर

दक्षिण की पुण्यतोया गोदावरी के तट पर अवस्थित प्रसिद्ध त्र्यम्बकेश्वर महादेव के रूप में ज्योतिर्लिंग विद्यमान है। प्रसिद्ध नासिक नगर त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग से करीब १०. कि.मी. दूरी पर स्थित है। ब्रह्मगिरि पर्वत पर महर्षि गौतम ने तपस्या की थी। उनकी तपस्या के फलस्वरूप गोदावरी अवतरित हुई एवं सारा क्षेत्र धन धान्य से भर गया। इसीलिए गोदावरी का दूसरा नाम गौतमी भी है। गौतमी और ऋषि की प्रार्थना पर भगवान शिव गोदावरी तट पर त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग के रूप में पूजित हुए। बारह वर्ष में एक बार नासिक में जब कुम्भ मेले का आयोजन होता है तो सभी तीर्थ यहां आकर निवास करते हैं ऐसी मान्यता है।

वैद्यनाथ

वर्तमान में झारखण्ड प्रान्त के देवघर जिला मुख्यालय में वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग अवस्थित है। 'वैद्यनाथ चिताभूमौ' के अनुसार वैद्यनाथ चिताभूमि होने के कारण वैद्यनाथ वास्तविक ज्योतिर्लिंग हैं। पौराणिक कथा के अनुसार लंकेश रावण ने कैलाश पर्वत से भगवान शिव को लंका में ले जाने के लिए तपस्या की। रावण की तपस्या से प्रसन्न शिव ने इस की अनुमति दे दी। जब रावण शिव के विग्रह को उठाकर कैलाश से लेकर चला तो रास्ते में देवघर में उसे लघुशंका अनुभव हुई। उसने विग्रह को वहां खड़े एक गोप को दे दिया और लघुशंका से निवृत्त होने लगा। गोप विग्रह के वजन को सह नहीं पाया। उसने उसे वहीं जमीन पर रख दिया वापस उठाने पर रावण से वह विग्रह टस से मस नहीं हुआ और उसी स्थान पर वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग के नाम से विख्यात हुआ।

झारखण्ड स्थित इस ज्योतिर्लिंग पर गंगा से जल भर कर लाखों श्रद्धालु भगवान शिव का मस्तकाभिषेक करते हैं।

नागेश्वर

गुजरात में नागेश्वर ज्योतिर्लिंग दारुकवन में जो द्वारिका के नजदीक है, अवस्थित हैं। शिव पुराण की कथा के अनुसार दारुक वन में एक सुप्रिय नामक व्यापारी जो शिव जी का परम भक्त था, रहता था। दारुक नामक राक्षस ने उसके अनुचरों सहित उसे बन्दी बना लिया और सबकी हत्या करने की ठानी। उस समय सुप्रिय ने अपने इष्ट देव भगवान सदाशिव को स्मरण किया जो वहाँ एक विवर से प्रकट हो गए और अपने भक्त को दिव्यास्त्र प्रदान किया जिससे दारुक का उसने वध कर डाला। महादेव नागेश्वर ज्योतिर्लिंग के रुप वहाँ अवस्थित हुए। ऐसा माना जाता है इस स्थान पर तमोगुणी लोग नहीं रह सकते।

गुजरात में श्रद्धालु द्वारिका और सोमनाथ के बीच में पड़ने वाले नागेश्वर की यात्रा भी साथ ही करते हैं।

रामेश्वरम्

रामेश्वरम की गणना देश के चार धामों में भी होती है जो हमारे देश की चारों दिशाओं में बसे हुए हैं। दक्षिण में स्थित रामेश्वरम धाम तमिलनाडु प्रदेश के रामेश्वरम कस्बे में स्थित है। मण्डपम रेल्वे स्टेशन से समुद्र मार्ग से रामेश्वर पहुँचा जाता है।

शिवपुराण की कथा के अनुसार जब भगवान राम को सीता का पता मिल गया तब उन्होंने लंका तक पहुँचने के लिए अपने अनुचरों भालू और वानरों की सहायता से एक सेतु का निर्माण करने की योजना बनाई। किन्तु उसके पूर्व उन्होंने अपने आराध्य भगवान शिव का स्मरण किया और मिट्टी का पार्थिव शिव लिंग स्थापित कर उसकी पूजा की।

इस अवसर पर उन्होंने रावण पर विजय प्राप्त करने की कामना की। महादेव ने राम की भक्ति से संतुष्ट होकर उन्हें विजय प्राप्ति का वरदान दिया। साथ ही राम जी ने उन्हें वहीं स्थापित रहकर जगत के कल्याण की कामना की। तभी से यह शिवलिंग रामेश्वर ज्योतिर्लिंग के नाम से पूजित हुआ।

घुश्मेश्वर

द्वादश ज्योतिर्लिंग में अंतिम ज्योतिर्लिंग घुश्मेश्वर है। यह मन्दिर महाराष्ट्र में देवगिरि के पास स्थित वेरुल गांव में है जो प्रसिद्ध गुफा मन्दिर एलोरा से एक-डेढ़ कि.मी. दूरी पर है।

पौराणिक आख्यान के अनुसार घुश्मा नामक शिवभक्त स्त्री की तपस्या के फलस्वरूप घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग प्रकट हुए। घुश्मा का एक प्यारा बालक था जिसे उसकी सौत ने सरोवर में फेंक दिया किंतु घुश्मा शिव भक्ति में लीन थी, उसे इस घटना का पता नहीं था। जब पूजा समाप्त कर वह पार्थिव शिवलिंग का विसर्जन कर रही थी तभी उसका पुत्र जीवित होकर उसके चरणों में आ पड़ा।

इसे शिव लीला समझ कर वह प्रसन्न हो गई तथा भगवान शिव से अपनी सौत को क्षमा करने के लिए कहा। भगवान शिव ने उसे उसी स्थान पर विराजित रहने का वर दिया। यह स्थान घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के नाम से विख्यात हुआ। राजस्थान के टोंक जिले में ईसरदा रेल्वे स्टेशन से २ कि.मी. दूर सिवाड़ में स्थित शिवलिंग को भी घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग माना जाता है।

इस प्रकार यदि हम सप्तपुरी, चार धाम, द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन कर लें तो सम्पूर्ण भारत का भ्रमण हो जाता है जो देश की एकता में सहायक है। ■

एकात्मता का संदेश देते देवी के शक्तिपीठ

❑ **मनोज गर्ग**
सहा. सम्पादक

भारत के कोने-कोने में स्थित ५१ शक्तिपीठ श्रद्धा और उपासना के सर्वोत्तम केंद्र हैं। ये शक्ति पीठ ऊर्जा के केन्द्र हैं। पूरे साल देश भर में श्रद्धालु इन शक्ति केन्द्रों में दर्शनों के लिये आते हैं। इस प्रकार ये शक्तिपीठ हमें एकात्मता का संदेश देते हैं। यही कारण है कि अनादि काल से पूजित ये शक्तिपीठ पूरे भारत की अखण्डता और एकात्मता की घोषणा कर रहे हैं।

भारत में शक्ति-साधना के कुछ विशिष्ट स्थल हैं जो शक्तिपीठ के नाम से जाने जाते हैं। पुराणों में उन शक्तिपीठों का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है। पौराणिक आख्यान के अनुसार प्रजापति दक्ष की पुत्री के रूप में माता जगदम्बिका ने सती रूप में जन्म लिया और भगवान शिव से विवाह किया।

एक समय राजा दक्ष ने कनखल (हरिद्वार) में 'बृहस्पति सर्व' नामक यज्ञ का आयोजन किया। उस यज्ञ में ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र और अन्य देवी-देवताओं को आमंत्रित किया, लेकिन जान-बूझकर अपने जामाता (सती के पति भगवान शिव) को इस यज्ञ में शामिल होने के लिए निमन्त्रण नहीं भेजा। नारद जी से सती को पता चला कि उनके पिता के यहां यज्ञ हो रहा है, लेकिन उन्हें निमंत्रित नहीं किया गया है।

नारद जी ने उन्हें सलाह दी कि पिता के यहां जाने के लिए बुलावे की जरूरत नहीं होती है। अतः जब सती अपने पिता के घर जाने लगी तब भगवान शिव ने मना किया। लेकिन सती हठ कर यज्ञ में शामिल होने चली गई।

यज्ञ-स्थल पर सती ने अपने पिता दक्ष से शिव-शंकर को आमंत्रित न करने का कारण पूछा तो दक्ष ने भगवान शंकर के विषय में सती के सामने ही अपमानजनक बातें कहीं। इस अपमान से आहत सती ने वहीं यज्ञ-अग्नि कुंड में कूदकर अपने प्राण त्याग दिये। भगवान शंकर को जब इस दुर्घटना का पता चला तो उन्हें क्रोध आ गया और उनके प्रचण्ड रूप से सर्वत्र हाहाकार मच गया। भगवान शंकर के आदेश पर वीरभद्र ने दक्ष का सिर काट दिया। शिवजी के गण भी उत्पात मचाने लगे। उनके कोप से भयभीत सारे देवता और ऋषिगण यज्ञ स्थल से भाग गये। तब भगवान शिव ने यज्ञकुंड से सती के पार्थिव शरीर को निकाल कंधे पर उठा लिया और सम्पूर्ण भूमण्डल पर विचरण करते हुए तांडव नृत्य करने लगे। उनके ताण्डव से पृथ्वी समेत तीनों लोकों को व्याकुल देखकर देवों के अनुनय-विनय पर भगवान विष्णु सुदर्शन चक्र से देवी सती के शरीर को खण्ड-खण्ड कर धरती पर गिराते गए। इस प्रकार जहां सती के अंग, धारण किए वस्त्र या आभूषण गिरे, वहां-वहां शक्तिपीठ अस्तित्व में आये। इस तरह कुल ५१ स्थानों पर माता के शक्तिपीठों (देवी पुराण के अनुसार) का उदय हुआ।

ये शक्तिपीठ पूरे वृहत्तर भारत में फैले हुए हैं। वर्तमान में भारत में४१, पाकिस्तान में १, बांग्लादेश में ४, श्रीलंका तथा तिब्बत में १-१, और नेपाल में ३ शक्तिपीठ हैं।

ऐसी मान्यता है कि जहाँ-जहाँ शक्तिपीठों की स्थापना हुई वहाँ पर भगवान शंकर के भैरव स्वरूप की भी द्वारपाल के रुप में स्थापना हुई है। इन शक्तिपीठों का संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया जा रहा है।

भारत में स्थित शक्तिपीठ

१. किरीट – यह शक्तिपीठ पश्चिम बंगाल के लालबाग कोर्ट स्टेशन से ५ किमी. दूर बटनगर के पास गंगा तट पर

स्थित है। यहां माता सती का किरीट अर्थात् मुकुट गिरा था। यहां की शक्ति को विमला अथवा भुवनेश्वरी तथा भैरव को संवर्त कहते हैं।

२. वृंदावन– मथुरा-वृंदावन रोड स्थित भूतेश्वर महादेव मंदिर में यह शक्तिपीठ स्थित है। यहां माता सती का केशपाश (जूड़ा) गिरा था। यहां की शक्ति देवी उमा हैं तथा भैरव को भूतेश कहते है।

३. करवीर – महाराष्ट्र के कोल्हापुर (प्राचीन नाम करवीर) में यह शक्तिपीठ स्थित है। यहां माता के नेत्र गिरे थे। यहां की शक्ति महिषमर्दिनी तथा भैरव को क्रोधीश कहते हैं। यहाँ देवी महालक्ष्मी का नित्य निवास माना गया है।

४. श्रीपर्वत– इस पीठ का मूल स्थल लद्दाख स्थित श्रीपर्वत है। यहां माता सती का दक्षिण तल्प (कनपटी) गिरा था। यहां की शक्ति को श्रीसुन्दरी एवं भैरव को सुन्दरानन्द कहते हैं। कुछ विद्वान इसे सिलहट(असम) से ४ किमी. दूर जैनपुर नामक स्थान पर भी मानते हैं।

५. वाराणसी– काशी में गंगा तट पर स्थित मणिकर्णिका घाट के पास यह शक्तिपीठ स्थित है। यहां माता सती के दाहिने कान के कुण्डल गिरे थे। यहां की शक्ति को विशालाक्षी तथा भैरव को काल भैरव कहते हैं।

६. गोदावरी – यह शक्तिपीठ आंध्रप्रदेश के गोदावरी स्टेशन के पास कुब्बूर में स्थित है। यहाँ माता का वामगण्ड (बायां कपोल) गिरा था। यहां की शक्ति को विश्वेश्वरी तथा भैरव को दण्डपाणि कहते हैं।

७. शुचि – कन्याकुमारी (तमिलनाडु) से १२ कि.मी. दूर शुचीन्द्रम(शुचि) में स्थाणु शिवमंदिर में यह शक्तिपीठ स्थित है। यहां सती के ऊपरी दाँत गिरे थे। यहां की शक्ति को नारायणी तथा भैरव को संहार नाम से जाना जाता है।

८. पंच सागर– मदुराई (तमिलनाडु) स्थित मीनाक्षी मंदिर को देवी का शक्तिपीठ माना गया है। यहां माता के नीचे के दाँत गिरे थे। यहां की शक्ति को वाराही तथा भैरव को महारुद्र कहते हैं।

९. ज्वालामुखी– ज्वालामुखी रोड़ स्टेशन से २१ किमी.दूर काँगड़ा जिले(हिमाचल प्रदेश) के कालीधर पर्वत की तलहटी में यह शक्तिपीठ बना है। यहां देवी सती की जिह्वा गिरी थी। यहां की शक्ति को सिद्धिदा(अंबिका) व भैरव को उन्मत्त कहते हैं।

१०. भैरव पर्वत– गुजरात के गिरनार के निकट भैरव पर्वत पर यह शक्तिपीठ है। यहां देवी का उर्ध्व ओष्ठ (ऊपरी होठ) गिरा था। यहां की शक्ति को अवन्ती तथा भैरव को लंबकर्ण कहते हैं।

११. अट्टहास–यह शक्तिपीठ बर्दवान जिले(पश्चिम बंगाल)के अहमदपुर-कटवा मार्ग स्थित लाभपुर स्टेशन के पास है। यहां माता का अधरोष्ठ (नीचे का होंठ) गिरा था। यहां की शक्ति को फुल्लरा तथा भैरव को विश्वेश कहते हैं।

१२. जनस्थान– नासिक (महाराष्ट्र) के पास पंचवटी नामक स्थान पर भद्रकाली मंदिर में यह शक्तिपीठ है। यहां माता की ठुड्डी गिरी थी। यहां शक्ति भ्रामरी (भद्रकाली) रूप में प्रतिष्ठित हैं और भैरव को विकृताक्ष कहते हैं।

१३. कश्मीर – कश्मीर स्थित अमरनाथ गुफा में देवी महामाया के रूप में विराजमान हैं। यहां माता का कण्ठ गिरा था। यहां की शक्ति को महामाया तथा भैरव को त्रिसंध्येश्वर कहते हैं।

१४. नन्दीपुर – पश्चिम बंगाल के वीरभूमि जिले में सैंथिया रेल्वे लाइन के पास एक वट वृक्ष के नीचे यह शक्तिपीठ स्थित है। इस स्थान का नाम नंदीपुर है। यहां देवी का कण्ठहार गिरा था। यहां शक्ति को नन्दिनी तथा भैरव को नन्दिकेश्वर कहते हैं।

१५. श्रीशैल– श्रीशैल स्थान (तेलंगाना)पर भगवान शिव का मल्लिकार्जुन नामक ज्योतिर्लिंग है। वहाँ से १५ किमी. दूर भगवती भ्रमराम्बा देवी के नाम से यह शक्तिपीठ है। यहां माता की ग्रीवा (गर्दन) गिरी थी। यहां की शक्ति को महालक्ष्मी तथा भैरव को संवरानन्द (ईश्वरानन्द) कहते हैं।

१६. नलहाटी– पश्चिम बंगाल के वीर भूम जिले के नलहाटी स्टेशन स्थित एक टीले पर स्थित है यह शक्तिपीठ। यहां माता की उदरनली (आँत)गिरी थी। यहाँ की शक्ति को कालिका तथा भैरव को योगीश कहते हैं।

१७. रत्नावली – इस पीठ की स्थिति चेन्नई के पास मानी गयी है। यहाँ देवी कुमारी रूप में प्रतिष्ठित हैं। यहां माता का दायां स्कंध गिरा था। यहां की शक्ति को कुमारी तथा भैरव को शिव कहते हैं।

१८. प्रभास (अम्बाजी) –गुजरात के गिरनार पर्वत के शिखर पर देवी अम्बा का भव्य मन्दिर है। इसे प्रभास क्षेत्र कहते हैं। यहां माता का उदर गिरा था। यहां की शक्ति को चन्द्रभागा तथा भैरव को वक्रतुण्ड कहते हैं।

भारत से बाहर देवी के शक्तिपीठ

१. हिंगलाज– पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रान्त में हिंगोस नदी के तट से १३५ किमी. दूर माता हिंगलाज का यह शक्तिपीठ स्थित है। यहां माता का ब्रह्मरन्ध्र (सर का ऊपरी भाग) गिरा था।

२. सुगंधा– बांग्लादेश के खुलना स्टेशन से ३० किमी. दूर शिकारपुर गाँव में सुनन्दा नदी के तट पर यह शक्तिपीठ स्थित है। यहां माता की नासिका गिरी थी। यहां की देवी सुनन्दा है तथा भैरव को त्रयम्बक कहते हैं।

३. करतोया– बांग्लादेश के बोगड़ा स्टेशन से भवानीपुर गाँव में करतोया नदी के तट पर स्थित है यह शक्तिपीठ। यहां माता का वाम तल्प (पायल) गिरा था। यहां देवी को अपर्णा तथा भैरव को वामन कहते हैं।

४. चट्टल– बांग्लादेश के चटगांव के पास चन्द्रशेखर पर्वत पर यह शक्तिपीठ स्थित है। पूर्व में यह गाँव चट्टल नाम से जाना जाता था। यहां माता की दाहिनी भुजा गिरी थी। यहां की शक्ति को भवानी तथा भैरव को चन्द्रशेखर कहते हैं।

५. यशोर– बांग्लादेश के खुलना जिले के ईश्वरीपुर ग्राम में स्थित है माता की यशोरेश्वरी शक्तिपीठ, जहां माता की बायीं हथेली गिरी थी। यहाँ का प्राचीन नाम यशोहर था। यहां शक्ति को यशोरेश्वरी तथा भैरव को चण्ड कहते हैं।

६. लंका– यह **श्रीलंका** में स्थित है। यहां माता का नूपुर गिरा था। यहां की शक्ति को इन्द्राक्षी तथा भैरव को राक्षसेश्वर कहते हैं।

७. गण्डकी – नेपाल में गण्डकी नदी के उद्गम स्थल पर स्थित है गण्डकी शक्तिपीठ, जहां सती के दक्षिण गण्ड (कपोल) गिरे थे। यहां शक्ति को गण्डकी तथा भैरव को चक्रपाणि कहते हैं।

८. गुहेश्वरी– नेपाल में काठमाण्डू स्थित पशुपतिनाथ मन्दिर से कुछ ही दूरी पर बागमती नदी के तट पर माता गुहेश्वरी का यह शक्तिपीठ है। यहां माता सती के दोनों जानु (घुटने) गिरे थे। यहां की शक्ति को महामाया और भैरव को कपाल कहते हैं

९. मिथिला – नेपाल में जनकपुर (पूर्व नाम मिथिला) की परिधि में वनदुर्गा, जयमंगला व उग्रतारा मंदिर को यह शक्तिपीठ माना गया है। यहां माता का बायां स्कंध गिरा था। यहां की शक्ति को उमा (महादेवी) तथा भैरव को महोदर कहते हैं।

१०. मानस – मानसरोवर **(तिब्बत)**के पास स्थित होने से इस पीठ को मानस-पीठ के नाम से जाना जाता है। यहाँ देवी दाक्षायणी नाम से प्रतिष्ठित है। यहाँ देवी की दाहिनी हथेली गिरी थी। यहाँ की शक्ति को दाक्षायणी तथा भैरव को अमर कहते हैं।

१९. जालंधर- पंजाब के प्रसिद्ध शहर जालंधर में विश्वमुखी देवी का मंदिर ही यह शक्तिपीठ है। यहां माता का बायां स्तन गिरा था। यहां की शक्ति को त्रिपुरमालिनी तथा भैरव को भीषण कहते हैं।

२०. रामगिरि– उत्तरप्रदेश के चित्रकूट के रामगिरि स्थान पर बने शारदा मंदिर में यह शक्तिपीठ है। यहाँ माता का दाहिना स्तन गिरा था। यहाँ की शक्ति को शिवानी तथा भैरव को चण्ड कहते हैं।

२१. वैद्यनाथ-प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग वैद्यनाथ (झारखण्ड) के पास देवघर स्थान पर शक्ति-मन्दिर बना है। यहाँ देवी जयदुर्गा नाम से विराजित है। यहाँ सती का हृदय गिरा था। यहाँ भैरव को वैद्यनाथ कहते हैं। एक मान्यतानुसार यहीं पर सती का दाह-संस्कार भी हुआ था।

२२. वक्त्रेश्वर – प. बंगाल के वीरभूमि जिले में वक्त्रेश्वर नामक स्थान पर श्मशान-भूमि में यह शक्तिपीठ स्थित हैं। बाकेश्वर जल प्रवाह के निकट होने से यह स्थान बाकेश्वर (वर्तमान में वक्त्रेश्वर) कहलाता है। यहाँ की देवी महिषमर्दिनी तथा भैरव को वक्रेश्वर कहते हैं।

२३. कन्यकाश्रम– कन्याकुमारी (तमिलनाडु) में स्थित भद्रकाली मन्दिर को ही देवी का शक्तिपीठ माना गया है। यहाँ माता का पृष्ठभाग गिरा था। यहाँ देवी को शर्वाणी तथा भैरव को निमिष कहते हैं।

२४. बहुला– हावड़ा (पश्चिम बंगाल) से १४४ किमी. दूर कटवा जंक्शन के निकट केतुग्राम में यह शक्तिपीठ बना है। यहां माता का वाम बाहु गिरा था। यहां की शक्ति बहुला रूप में प्रतिष्ठित है तथा भैरव को भीरुक कहते हैं।

२५. उज्जयिनी-उज्जैन (मध्यप्रदेश) के रुद्रसागर के पास हरिसिद्धि देवी का मन्दिर है। इस मन्दिर में देवी की प्रतिमा नहीं है। यहाँ पर सती की कूर्पर (कोहनी) गिरी थी, अतः कोहनी की ही पूजा की जाती है। यहाँ की शक्ति को मंगल चण्डिका तथा भैरव को कपिलाम्बर कहते हैं।

२६. मणिवेदिक– प्रसिद्ध तीर्थ पुष्कर (राजस्थान) के समीप गायत्री पर्वत की चोटी पर देवी गायत्री का मंदिर है। यह गायत्री मंदिर ही मणिवेदिक शक्तिपीठ कहलाता है। यहाँ सती के दोनों मणिबन्ध (कलाई) गिरे थे। यहाँ देवी को गायत्री तथा भैरव को शर्वानन्द कहते हैं।

२७. प्रयाग- उत्तर प्रदेश के प्रयाग जिले में स्थित ललिता देवी का मंदिर ही

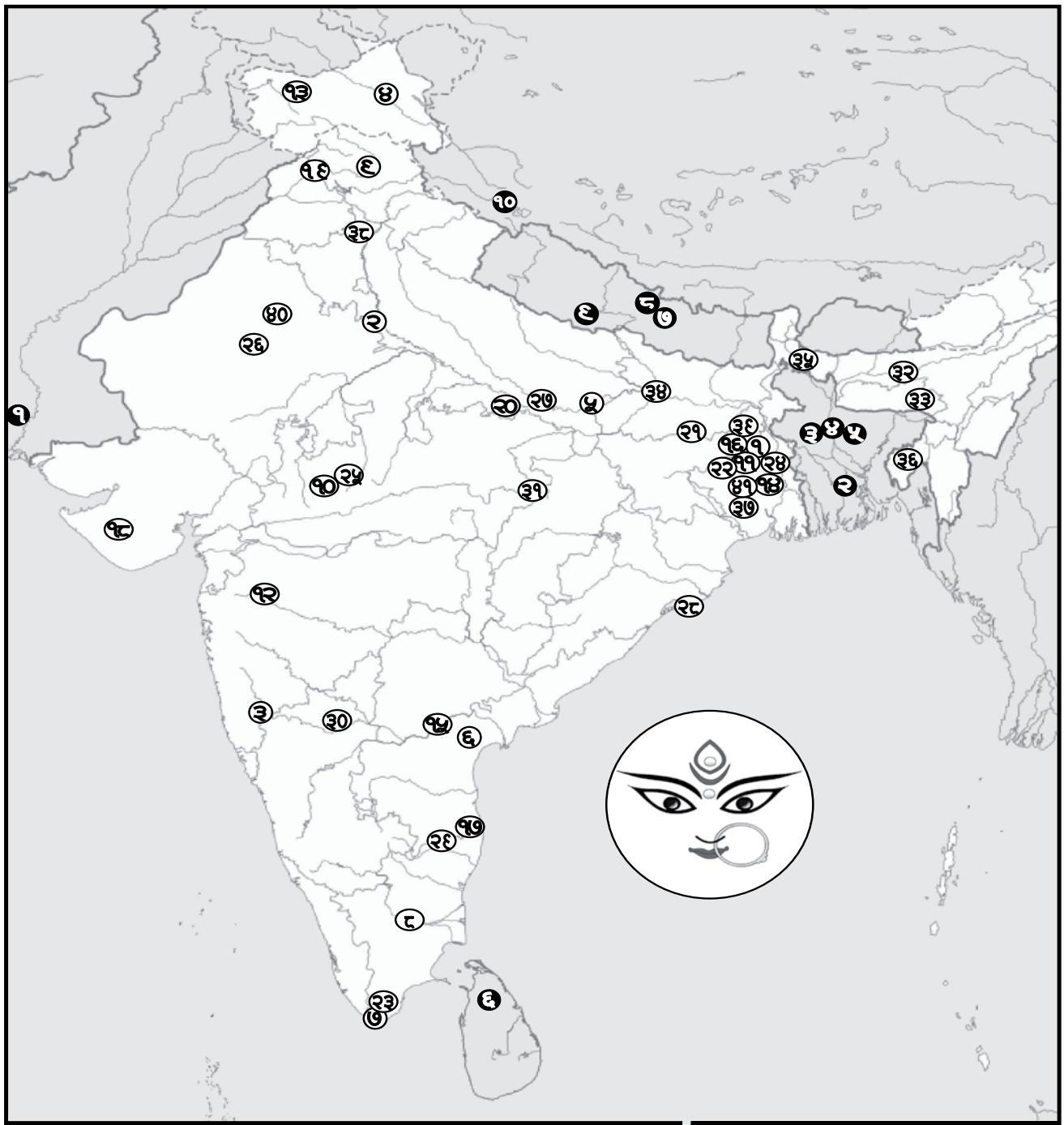

भारत में स्थित शक्तिपीठ

१. किरीट	१०.भैरव पर्वत	१९.जालंधर	२८. उत्कल	३७. विभाष
२. वृंदावन	११. अट्टहास	२०. रामगिरि	२९. कांची	३८. कुरुक्षेत्र
३. करवीर	१२.जनस्थान	२१. वैद्यनाथ	३०.कर्णाट	३९. युगाद्या
४. श्रीपर्वत	१३. कश्मीर	२२. वक्त्रेश्वर	३१. शोण	४०. विराट
५.वाराणसी	१४. नन्दीपुर	२३.कन्यकाश्रम	३२. कामगिरि	४१.कालीपीठ
६. गोदावरी	१५.श्रीशैल	२४. बहुला	३३. जयन्ती	
७. शुचि	१६. नलहाटी	२५. उज्जयिनी	३४. मगध	
८. पंच सागर	१७. रत्नावली	२६.मणिवेदिक	३५.त्रिस्तोता	
९.ज्वालामुखी	१८. प्रभास	२७. प्रयाग	३६. त्रिपुरा	

भारत के बाहर स्थित शक्तिपीठ

१. हिंगलाज (पाकिस्तान)	७. गण्डकी (नेपाल)
२. सुगंधा (बांग्लादेश)	८. गुहेश्वरी (नेपाल)
३.करतोया (बांग्लादेश)	९. मिथिला (नेपाल)
४. चट्टल (बांग्लादेश)	१०. मानस (तिब्बत)
५. यशोर (बांग्लादेश)	
६. लंका (श्रीलंका)	

प्रयाग शक्तिपीठ के नाम से जाना जाता है। यहां माता के हाथ की अंगुलियां गिरी थी। यहाँ की शक्ति ललिता हैं तथा भैरव को भव कहते है।

२८. उत्कल– जगन्नाथपुरी मंदिर के परिसर में स्थित विमला देवी मंदिर को तो कुछ विद्वान भाजपुर (उड़ीसा) के विरजा देवी के मंदिर को माता का शक्तिपीठ कहते हैं। उड़ीसा का प्राचीन नाम उत्कल होने से यह शक्तिपीठ उत्कल नाम से जाना जाता है। यहां माता की नाभि गिरी थी। यहां की शक्ति को विमला तथा भैरव को जगन्नाथ कहते हैं।

२९. कांची – तमिलनाडु के कांजीवरम स्टेशन के पास शिवकांची नाम का एक नगर है। यहाँ से कुछ ही दूरी पर कामाक्षी देवी (काली मंदिर) का विशाल मंदिर है। इस मंदिर को दक्षिण भारत का सर्वप्रधान शक्तिपीठ माना जाता है। यहाँ माता का कंकाल गिरा था। यहां की शक्ति देवगर्भा तथा भैरव को रुरु कहते हैं।

३०. कर्णाट– यह शक्तिपीठ कर्नाटक में हुनासागी नामक स्थान पर स्थित है। यहाँ देवी के दोनों कान गिरे थे। यहाँ शक्ति के जयदुर्गा तथा भैरव को अभीरू कहते हैं।

३१. शोण– मध्यप्रदेश के अमरकंटक से नर्मदा और सोन दोनों नदियाँ निकलती हैं। सोन नदी के उद्गम स्थल के पास देवी शोणाक्षी मंदिर को यह शक्तिपीठ माना गया है। यहां माता का दायां नितम्ब गिरा था। यहां की शक्ति को नर्मदा (शोणाक्षी) तथा भैरव को भद्रसेन कहते हैं।

३२. कामगिरि– गुवाहाटी(असम) के कामगिरि पर्वत पर आद्या शक्ति कामाख्या देवी का पावन एवं प्रसिद्ध शक्तिपीठ स्थित है। यहां माता की योनि गिरी थी। यहां की शक्ति को कामाख्या तथा भैरव को उमानन्द कहते हैं।

देवी महाकाली

३३. जयन्ती – यह शक्तिपीठ शिलांग (मेघालय) से ५०किमी दूर जयन्तिया पहाड़ी (बाउरभाग गाँव) पर स्थित है। यहां माता की वाम जंघा गिरी थी। यहां की शक्ति को जयन्ती तथा भैरव को क्रमदीश्वर कहते हैं।

३४. मगध – बिहार की राजधानी पटना (पूर्व नाम मगध) में स्थित पटनेश्वरी देवी के मंदिर की शक्तिपीठ के रूप में मान्यता है। यहां माता की दाहिनी जंघा गिरी थी। यहां की शक्ति सर्वानन्दकरी तथा भैरव को व्योमकेश कहते हैं।

३५. त्रिस्तोता – पश्चिम बंगाल के जलपाइगुड़ी जिले में शालवाड़ी गांव है। यह गाँव तिस्ता (पूर्व नाम त्रिस्तोता) नदी के किनारे बसा है। यहां माता का बायां पैर गिरा था। यहां की शक्ति भ्रामरी तथा भैरव को ईश्वर कहते हैं।

३६. त्रिपुरा– त्रिपुरा के राधाकिशोरपुर ग्राम से ३ किमी. दूर दक्षिण पूर्व में पहाड़ी पर स्थित शक्तिपीठ त्रिपुरसुन्दरी के नाम से विख्यात है। माता त्रिपुरसुन्दरी के नाम पर इस राज्य का नाम त्रिपुरा पड़ा। यहां माता का दायां पैर गिरा था। यहां की शक्ति को त्रिपुरसुन्दरी तथा भैरव को त्रिपुरेश कहते हैं।

३७. विभाष – पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले के ताम्रलुक ग्राम में यह शक्तिपीठ है। यह शक्तिपीठ रूपनारायण नदी के पास बने वर्गभीमा (विभाष) के विशाल मंदिर में बना है। यहां माता का बायां टखना गिरा था। यहां की शक्ति को कपालिनी तथा भैरव को सर्वानन्द कहते हैं।

३८. कुरुक्षेत्र – यह शक्तिपीठ हरियाणा के कुरुक्षेत्र स्टेशन के निकट द्वैपायन सरोवर के पास स्थित है। यह श्रीदेवीकूप भद्रकाली पीठ के नाम से भी जाना जाता है। यहां माता का दायां टखना गिरा था। यहां की शक्ति को सावित्री तथा भैरव को स्थाणु कहते हैं।

३९. युगाद्या– पश्चिम बंगाल के बर्दवान जिले से ३५ किमी. दूर क्षीरग्राम के युगाध स्थान पर यह शक्तिपीठ विख्यात है। यहां देवी सती के दाहिने चरण का अगूँठा गिरा था। यहां की शक्ति को भूतधात्री और भैरव को क्षीरकण्टक कहते है।

४०. विराट– जयपुर से ९० कि.मी. दूर विराट नगर में यह शक्तिपीठ स्थित है। पाण्डवों ने वनवास का अंतिम वर्ष अज्ञातवास के रूप में यहीं बिताया था। यहाँ सती के दायें पाँव की अंगुलियाँ गिरी थीं। यहां की शक्ति को अंबिका तथा भैरव को अमृत कहते हैं।

४१. कालीपीठ – कोलकाता के कालीघाट स्थित काली मन्दिर के नाम से यह शक्तिपीठ प्रसिद्ध है। इस पीठ में महाकाली की भव्य मूर्ति विराजमान है। यहां देवी सती के पैर का अंगूठा छोड़ शेष अन्य अंगुलियां गिरी थीं। यहां की शक्ति को कालिका तथा भैरव को नकुलेश कहते हैं। ■

❑ मेघराज खत्री
पूर्व महाप्रबंधक
स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर

आद्य शंकराचार्य और भारत की एकता

देश, धर्म तथा समाज का युगानुकूल मार्गदर्शन करने के लिए समय समय पर भारत की पवित्र धरा पर महान विभूति अवतरित होती रही है। ऋषि वशिष्ठ विश्वामित्र, वाल्मीकि, वेदव्यास, अवतारी राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध, भगवान महावीर जैसी सर्वोत्कृष्ट विभूतियों के क्रम में ही आद्य शंकराचार्य का इस पावन धरा पर अवतरण हुआ। उन्होंने मात्र ३२ वर्ष अपने लघु जीवन में सुदीर्घ काल तक प्रभावी रहने वाले अद्‌भुत कार्य सम्पन्न कर अद्वैत वेदान्त के प्रचार, प्रसार तथा प्रभाव द्वारा भारत की एकता मजबूत की।

ऐतिहासिक युग में जिन श्रेष्ठ मानवों का धर्म संस्थापन के लिए आविर्भाव हुआ, आद्य शंकराचार्य उनमें अन्यतम थे। ढाई हजार वर्ष पूर्व में भारत के जातीय तथा धर्म जीवन के संधि क्षण में उनका जन्म हुआ। विकृत बौद्ध धर्म के दबाव से सनातन हिन्दू धर्म कमजोर एवं नष्टप्राय सा हो गया था। शंकराचार्य जी के जीवन, साधना तथा शिक्षा ने हिन्दू धर्म में शक्ति संचरण किया तथा वैदिक धर्म को अनन्त युगों का स्थायित्व देने का कार्य किया।

उस काल का भारत

तत्कालीन भारत में छोटे-छोटे राज्य थे जो आपस में बंटे हुए थे तथा एक दूसरे से विद्वेष रखते थे। कुछ राजा सनातन धर्म को मानने वाले थे तो कुछ बौद्ध मत को और कई जगहों पर शाक्तों का प्राधान्य था तो कहीं अन्य मतावलम्बी छाए हुए थे। सभी अपने स्वतंत्र अस्तित्व को बनाये रखने के लिए संघर्षरत थे। हर कोई अपने को ही सर्वश्रेष्ठ, प्रमुख और सर्वग्राह्य मानता था। बौद्धों में भी अनेक मत प्रचलित थे जिनमें विकृतियाँ आ गई थी। तांत्रिक उपासना वैदिक धर्म को लुप्त कर रही थी। चारों ओर अव्यवस्था तथा अकर्मण्यता फैल रही थी। पूजा पद्धति, नियम, संयम और कर्म, किसी भी दृष्टि से उनमें एकता नहीं थी। वे तो केवल अपने अस्तित्व की चिन्ता में लीन थे। अतः उस समय देश में सांस्कृतिक एकता लाना आवश्यक था क्योंकि बिना सांस्कृतिक ऐक्य के राजनीतिक एकता भी टिकाऊ नहीं हो सकती थी।

शंकरचार्य जी का जन्म व शिक्षा

शंकर मठों के प्रमाणों के अनुसार आद्य शंकराचार्य का जन्म पूर्णा नदी के तट पर कालडी ग्राम (केरल) में ईसा पूर्व ५०६में हुआ था। बालक शंकर अद्वितीय प्रतिभा के धनी थे। ७ वर्ष की आयु में ही उन्होंने वेद और वेदांग आदि की शिक्षा पूरी कर ली। ८ वर्ष की आयु में प्राणि मात्र के कल्याण की कामना से प्रेरित हो शंकर ने सन्यास हेतु माता आर्यम्बा से अनुमति ले गृह त्याग कर गुरु की खोज में निकले। नर्मदा नट पर अमरकण्टक की गुफा में गोविन्द भगवत्पाद के दर्शन हुए, जिन्होंने उपदेश देकर सन्यास-दीक्षा दी और इनका नाम 'भगवत्पाद शंकर' रखा।

शंकर की अलौकिक प्रतिभा और असाधारण बुद्धि कौशल को देखकर गुरु भगवतपादाचार्य उसे अपने गुरु गौड़पादाचार्य से मिलाने बद्रिकाश्रम ले गए। गौड़पादाचार्य जी ने शंकर को अपने पास चार वर्ष रख शिक्षा दी और उनके ज्ञान को परिष्कृत किया।

अद्वैत सिद्धान्त

शंकराचार्य जी द्वारा प्रतिपादित अद्वैत सिद्धान्त के मतानुसार केवल आत्मा (ब्रह्म) ही सत्य है, जगत मिथ्या है। आत्मा निर्गुण, निराकार, अविकारी, सर्वव्यापी,अकर्ता-अभोक्ता, सत्य, अनादि, मुक्त, अनिर्वचनीय है जो जगत का करण और कारण दोनों है। जगत की रचना ब्रह्म आश्रित त्रिगुणात्मक (सत रजस् तथा तमस गुणों वाली) माया अपनी आवरण तथा प्रक्षेपण शक्ति द्वारा किया गया है। ब्रह्म के दो रूप हैं, एक अविद्या (माया) उपाधि सहित है, जो

जीव (समष्टि रूप में संसार) कहलाता है और दूसरा सब प्रकार की उपाधियों से रहित शुद्ध ब्रह्म है। उस एक आत्मा (ब्रह्म) के अतिरिक्त सब कुछ अनात्मा है। जब जीव ज्ञान द्वारा अविद्या (माया जनित) का आवरण हटा लेता है तो 'अहम् ब्रह्मास्मि' मैं ब्रह्म हूँ की अवस्था को पहुँच जाता है और उसका जीवपन नष्ट हो जाता है। आत्मा को सच्चिदानंद (सत्यं, ज्ञानं, अनन्तम् ब्रह्म) भी कहा गया है।

आत्मा और ब्रह्म की एकता (अभिन्नत्व) दिखाने के लिए उपनिषदों ने कहा है 'तत्वमसि- तत् त्वम् असि' अर्थात् तुम वही (ब्रह्म) हो। इसी कारण ज्ञान होने पर सोऽहमस्ति (मैं वही हूँ) का अनुभव होता है। तभी जीव जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त करता है।

दिग्विजय यात्राएं

परम् गुरु गौड़पादाचार्य जी से परिष्कृत हो अमरकन्टक लौटने पर गुरु गोविन्द भगवत्पाद ने आशीर्वाद दिया और काशी जाकर दिग्विजय यात्रा शुरु करने का आदेश दिया।

काशी में अन्नपूर्णा देवी के दर्शन कर शंकर ने उनसे ज्ञान वैराग्य सिद्धि की भिक्षा माँगी। उनकी ज्ञान चर्चा सुनने तथा दर्शन के लिए लोग दूर-दूर से आने लगे। उनकी योग्यता, विद्वत्ता और प्रसिद्धि बढ़ने से अनेक लोग उनके शिष्य बने। चोल प्रदेश के विष्णु शर्मा को आचार्य ने अपना पहला शिष्य बनाकर इनका नाम सदानन्द रखा जो बाद में पद्मपाद के नाम से विख्यात हुए। काशी में रहते हुए आचार्य शंकर ने वहाँ के प्रायः सभी विरोधी मत वालों को शास्त्रार्थ करके परास्त कर दिया। काशी नरेश उनके शिष्य हो गए थे।

अब उनके पास ध्येय और नेता पर श्रद्धा, भक्ति और विश्वास रखने वाले शिष्यों की एक विशाल मंडली तैयार हो चुकी थी। अतः उन्होंने अपनी दिग्विजय यात्राओं का कार्यक्रम शिष्यों के सामने रखा। कूच के समय काशी नरेश उनके साथ थे, इससे ज्ञान के साथ शक्ति का भी योग हो गया। काशी से शंकराचार्य प्रयाग पहुँचे। प्रयाग में पूर्व मीमांसा के विद्वान कुमारिल भट्ट को अपनी तर्कपूर्ण बातों से वेदान्त का अनुभव कराया। उनकी सलाह से उनके ही शिष्य तथा कर्म मीमांसा के ख्याति प्राप्त ज्ञानी मंडन मिश्र से शास्त्रार्थ करने वे माहिष्मति पहुँचे। दो महान पंडितों में शास्त्रार्थ हुआ और शंकराचार्य उसमें विजयी हुए।

शास्त्रार्थ की शर्त के अनुसार मंडन मिश्र को शंकराचार्य जी का शिष्यत्व ग्रहण कर सन्यासी बनना था। तब मंडन मिश्र की पत्नी उभय भारती ने शास्त्रार्थ की चुनौती दी। शंकराचार्य जी ने उन्हें भी पराजित किया। तब मंडन मिश्र सन्यास स्वीकार कर शंकराचार्य जी के शिष्य हो गए। उनका नाम सुरेश्वर रखा गया। मंडन मिश्र के शिष्यों ने भी शंकराचार्य जी द्वारा प्रतिपादित ज्ञान-पथ को स्वीकार कर लिया और उनके शिष्य हो गए।

दक्षिण यात्रा के दौरान आचार्य ने गिरि नामक ब्राह्मण कुमार को शिष्य बनाया। गिरि की गुरु पर बड़ी श्रद्धा थी और वे तन-मन से उनकी सेवा में लगे रहते थे। गुरु कृपा से गिरि को विद्वता प्राप्त हुई और उन्हें त्रोटकाचार्य नाम दिया गया। गोकर्ण तीर्थयात्रा के दौरान प्रभाकर नामक ब्राह्मण का एक गूंगा लड़का था। शंकराचार्य जी को वह योगी दिखाई दिया। शंकराचार्य जी ने गूंगे बालक से सवाल किये और वह बालक न केवल बोला, बल्कि बुद्धिमत्तापूर्वक उत्तर दिये। इससे प्रसन्न होकर शंकराचार्य जी ने उसे अपना शिष्य बना हस्तामलक नाम दिया।

शंकराचार्य जी रामेश्वर पहुँच कर वहाँ भी शास्त्रार्थ में विजयी हुए। वहाँ से कांची पहुँच कर माँ भगवती का मन्दिर बनवाया और वैदिक पूजा प्रारम्भ करवाई। उस पूजा के प्रभाव से वहाँ फैला तान्त्रिकों का मोह जाल नष्ट हो गया। शंकराचार्य ने पूरे भारत कश्मीर से कन्याकुमारी तथा द्वारका से पुरी-पूर्वान्चल तक तीन बार पैदल यात्राएं कर वैदिक धर्म की ध्वजा फहराई।

धर्म ग्रन्थों की रचना

शंकराचार्य ने दस उपनिषदों ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डुक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक के साथ ब्रह्मसूत्र, भगवद्गीता इत्यादि के भाष्य लिखे। उनके द्वारा रचित विवेक चूड़ामणि, साधन पंचकर्म, सर्व वेदान्त सिद्धान्त सार संग्रह इत्यादि प्रकरण ग्रन्थ तथा स्तोत्र ग्रन्थ धर्म गुरुओं के साथ-साथ सामान्य जन तक अद्वैत वेदान्त दर्शन पहुँचाने का सशक्त माध्यम बने। विशेष बात यह है कि शंकराचार्य जी ने सभी रचनाएं संस्कृत भाषा में लिखी।

मठों की स्थापना

आदि शंकराचार्य ने वेदों की शिक्षा को संरक्षित करने तथा भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, धार्मिक और राजनैतिक एकता को पुष्ट करने हेतु देश की चार दिशाओं में चार मठ भी स्थापित किए। ये मठ उत्तर में बद्रीनाथ में ज्योतिर्पीठ, पश्चिम में द्वारिका में शारदापीठ, पूर्व में जगन्नाथपुरी में गोवर्धन पीठ तथा दक्षिण में श्रृंगेरी में श्रृंगेरीपीठ (रामेश्वरम् धाम के अन्तर्गत) की स्थापना की । कुछ आलेखों के अनुसार इन चार मठों के अतिरिक्त आचार्य जी ने कांचीपुरम में कामकोटिपीठ की भी स्थापना की थी। व्यवस्था की दृष्टि से इन चार मठों का कार्यक्षेत्र, मठों के प्रमुख सम्प्रदाय, महावाक्य तथा एक-एक वेद भी निश्चित किया गये है जो उक्त सारिणी के

दिशा	मठ	नाम	पीठाधिपति	महावाक्य	वेद
उत्तर	बद्रीनाथ	ज्योतिर्पीठ	आचार्य तोटक	अयमात्मा ब्रह्म (यह आत्मा ब्रह्म है-माण्डक्य उप.)	अथर्ववेद
पश्चिम	द्वारका	शारदापीठ	आ. हस्तामलक	तत् त्वं असि (यह ब्रह्म तू है-छांदोम्य उप.)	सामवेद
पूर्व	जगन्नाथपुरी	गोवर्धनपीठ	आ. पद्मपाद	प्रज्ञानं ब्रह्म (वह प्रज्ञान ही ब्रह्म है-एतरेय उप.)	ऋग्वेद
दक्षिण	श्रृंगेरी	श्रृंगेरीपीठ	आ. सुरेश्वर	अहं ब्रह्मास्मि (मैं ब्रह्मा हूँ-बृहदारण्यक)	यजुर्वेद

अनुसार हैं।

भारत की एकता में अद्भुत योगदान

शंकराचार्य जी ने ३२ वर्ष की आयु में ही देह त्यागी थी, किन्तु उनके कार्यों का हमारे धर्म, समाज, संस्कृति और राष्ट्र पर बड़ा ठोस और दीर्घकालीन प्रभाव पड़ा। इसका मुख्य कारण उनकी प्रखर राष्ट्रीयता और पूरे देश में एकात्मता स्थापित करने की भावना, ज्ञान व विद्वत्ता के आधार पर सभी समस्याओं का निदान करना, तर्कों का यथोचित उत्तर देने की भावना, विभिन्न मत-मतान्तरों में प्रेम-सद्भाव-समन्वय लाने और परम्परागत वैदिक सिद्धान्तों को विवेकपूर्ण आधार पर जनता के सामने लाकर उनको स्वीकार करा लेने की उनकी दृढ़ता थी। उन्होंने देश के जनजीवन को हर दृष्टि से प्रभावित किया, जिससे राष्ट्रीय एकता पुष्ट हुई।

पंचायतन पूजा- अद्वैत के आधार पर उन्होंने गाणपत्य, शैव, शाक्त, वैष्णव और सूर्योपासकों आदि की उपासना पद्धतियों को एकात्मता प्रदान करके एक साथ मिला दिया। इसके लिए उन्होंने पंचायतन-पूजा की विधि सुझाई। इस प्रकार अलग-अलग आराध्य देवों की मूर्तियों को एक ही स्थान पर रखकर पूजा द्वारा सभी देव-भक्तों के बीच एकात्मता स्थापित कर आचार्य ने राष्ट्रीय एकता मजबूत की।

सांस्कृतिक स्तर पर राष्ट्रीय एकता- शंकराचार्य जी द्वारा गौतम बुद्ध को विष्णु के दस अवतारों में से एक मान लेने से देश के समस्त बौद्ध मतावलम्बी वैदिक (हिन्दू) संस्कृति में समाहित हो गए। इसके लिए शंकराचार्य जी ने पशु-बलि की निन्दा, रहस्यवाद तथा बौद्ध मत की कुछ शिक्षाओं को अपने सिद्धान्तों में समाहित कर राष्ट्र के सांस्कृतिक धरातल पर एकता स्थापित की।

राजनैतिक स्तर पर राष्ट्रीय एकता- उस समय देश छोटे-छोटे राज्यों के रूप में अनेक राज सत्ताओं में बंटा हुआ था। शंकराचार्य जी के प्रयास और प्रभाव से इन ५९ राज्यों में सुदृढ़ आधार पर एकता स्थापित हुई। उन्होंने हिन्दुओं के ७२ सम्प्रदायों और बौद्ध तथा जैन मतों को भी एकात्मता के सूत्र में बांधा।

नैतिक स्तर पर एकता- शंकराचार्य जी ने अद्वैत सिद्धान्त की बौद्धिक अवधारणा को केवल प्रतिपादित ही नहीं किया बल्कि स्वयं ब्रह्म का साक्षात्कार किया। वे विवेक चूड़ामणि में कहते हैं कि ब्रह्म के उच्चारण की आवृत्ति मात्र से मुक्ति नहीं होती, उसके लिए ब्रह्म की प्रत्यक्ष अनुभूति होनी चाहिए। अनुभूति के लिए उन्होंने मन, वचन और कर्म के समन्वय पर बल दिया।

मानवता के स्तर पर व्यक्ति-व्यक्ति में एकता- अद्वैत सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में ब्रह्म का अंश है अर्थात वह मूल रूप में मुझ से भिन्न नहीं है। अतः एक व्यक्ति के लिए दूसरा (समस्त) व्यक्ति प्यार, आदर और श्रद्धा का अधिकारी है। दूसरे व्यक्ति को उसकी अच्छाई सुन्दरता, धन, शक्ति, बल अथवा पद के आधार पर नहीं, बल्कि आत्मा की एकता के कारण प्यार किया जाता है।

भाषा स्तर पर एकता- उस काल में बौद्ध और जैन मतों के प्रचार के लिए संस्कृत के स्थान पर पाली और प्राकृत जैसी जन-भाषाओं का प्रयोग हो रहा था। शंकराचार्य ने अपनी सभी रचनाएं संस्कृत भाषा में लिखीं। इससे पूरे देश में भाषायी एकता स्थापित होने के साथ संस्कृत भाषा को भी नवजीवन मिला।

हिन्दू धर्म में कहा गया है कि जब जब धर्म की हानि होती है तब तब स्वयं भगवान अवतार लेकर धरती पर आते हैं और धर्म ध्वजा फहराते हैं, अर्थात धर्म च्युत समाज को धर्म के मार्ग पर लाते हैं। त्रेता युग में श्रीराम ने अवतार लेकर मर्यादाएं स्थापित कीं। द्वापर युग में श्रीकृष्ण ने अवतार लेकर अर्जुन और उसके माध्यम से समस्त मनुष्य जाति को कर्तव्यों का बोध कराकर भक्ति-ज्ञान-कर्म के समन्वय से जीवन चलाने का उपदेश किया। बाद में गौतम बुद्ध तथा भगवान महावीर ने भी मानव जाति को हिंसा से अहिंसा के मार्ग पर प्रवृत्त किया। किन्तु कालान्तर में अहिंसा के अतिरेक में मानव कर्तव्यच्युत हो गया और विभिन्न प्रकार के मोह, मंत्र, तंत्र, भय आदि में फंस विभिन्न पंथों में बंट दिग्भ्रमित हो गया।

शंकराचार्य जिन्हें भगवान शंकर का अवतार भी कहा जाता है ने पथभ्रष्ट धार्मिक मनोवृत्ति वाले कर्म कांडी धर्म के ठेकेदारों को वैदिक स्वरूप का उचित ज्ञान प्रदान किया। अपने अद्वैत सिद्धान्त को पूरे भारत में फैलाकर तथा उस ज्ञान की उचित शिक्षा, प्रचार-प्रसार, संरक्षण हेतु चारों दिशाओं के सुदूर स्थानों पर मठों की स्थापना की। गुरु-शिष्य परम्परा की निरन्तरता तथा आचार्यों के भ्रमण प्रवचन द्वारा धार्मिक आचरण को बढ़ावा देने की व्यवस्था की। सामान्यजन के लिए भी तीर्थयात्रा तथा विवेक, वैराग्य, नैतिक/धार्मिक आचरण के महत्व को अपनी शिक्षा में जोड़कर सम्पूर्ण भारत में धार्मिक, सामाजिक, नैतिक तथा राजनैतिक एकता करने में अति महत्वपूर्ण योगदान दिया। ■

राष्ट्रीय एकात्मता का आधार धर्माचरण है

❑ **शास्त्री कोसलेन्द्रदास**

सहायक आचार्य, दर्शन शास्त्र
जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विवि, जयपुर

आज के भौगोलिक व सामाजिक विविधताओं के साथ-साथ पांथिक विविधतायें भी हैं। अद्भुत वैचारिक स्वातंत्र्य के कारण अनेक मत-पंथों का भारत में उदय हुआ। यह वौचारिक स्वतंत्रता आवश्यक है तथा ज्ञान और विवेक के आधार पर विभिन्न सम्प्रदायों में सामंजस्य बिठाया जा सकता है। धर्माचरण से ही यह ज्ञान और विवेक जाग्रत होता है।

महाभारत के वनपर्व में एक श्लोक है-

'न मानुषाच्छ्रेष्ठतरं हि किंचित'

इसका अर्थ है, 'मनुष्य से श्रेष्ठ कुछ नहीं है।' इसका अर्थ यूं समझा जा सकता है कि परमात्मा के बनाए सारे जड़-चेतन पदार्थों में मनुष्य सबसे श्रेष्ठ है, उसकी अनुपम कृति है। मानव का काम सोचना-विचारना और कहना है। उसे मिले मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार और इंद्रियों से वह चिंतन और मनन करता है। हालांकि ये सब जड़ पदार्थ हैं पर आत्मा के संयोग से ये काम करने लगते हैं। आत्मा सारे ज्ञान का आधार है। इंद्रियों से होने वाले ज्ञान का आश्रय आत्मा है। इस चिंतन का प्रारम्भ सृष्टि के आरंभ से है, जब ऋषियों ने साधना की सर्वोच्च दशा में वैदिक मंत्रों का दर्शन किया। इस अलौकिक कार्य के संपादक होने से वे 'मंत्रद्रष्टा' कहलाए। ऋषि वह है जो कल्याण की सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त है। इस नाते वह 'आप्त' यानी पक्ष पात रहित है। उनका सारा जीवन एकाकी नहीं बल्कि संपूर्ण सृष्टि के लिए है।

आस्तिक और नास्तिक

वैदिक मंत्रों में वैविध्य है। भिन्न-भिन्न विचार हैं। इस नाते भारत में सहस्राब्दियों से जो धारा बलवती हुई, उसका विस्तार संवाद के धरातल पर प्रयोगात्मक दृष्टि से वैज्ञानिक रीति द्वारा हुआ। इस रीति में विचारों का आदान-प्रदान तथा उन पर लंबा चिंतन हुआ, जिसके निष्कर्ष में भारतीय दर्शन की सुदीर्घ शृंखला बनी। इसमें एक ओर वेद-पुराणों को मानने वाले लोग हैं तो दूसरी ओर उन्हें प्रमाण के रूप में नकारने वाले संप्रदाय हैं। यह विशेष बात है कि आस्तिक और नास्तिक इन दो संप्रदायों में विभक्त भारतीय दर्शन में श्रेष्ठ होने का कोई दावा नहीं है। वेदों को मानने वाले भी उतने ही बड़े सनातनी हिंदू हैं, जितना उन्हें नहीं मानने वाले चार्वाक, जैन और बौद्ध संप्रदाय। ईश्वर के सगुण स्वरूप की साधना करने वाले गोस्वामी तुलसीदास, नरसी, मीरा, सूरदास समेत दूसरे भक्त भी उतने ही बड़े साधक हैं, जितने परमात्मा के सगुण स्वरूप को नकार कर निर्गुण ब्रह्म की स्थापना करने वाले कबीर, रैदास, धन्ना, दादू, गुरु नानक और रामचरणदास रामस्नेही जैसे संत और भक्त-कवि।

यह विशेष बात है कि आस्तिक और नास्तिक इन दो संप्रदायों में विभक्त भारतीय दर्शन में श्रेष्ठ होने का कोई दावा नहीं है। वेदों को मानने वाले भी उतने ही बड़े सनातनी हिंदू हैं, जितना उन्हें नहीं मानने वाले चार्वाक, जैन और बौद्ध संप्रदाय।

यदि हम बहुत दूर न जा कर पिछली दो सहस्राब्दियों को ही देखें तो ब्रह्म के निर्गुण और सगुण स्वरूप के संस्थापक

दार्शनिक संप्रदायों के सिद्धांतों के अनुसार देश और धर्म चल रहे हैं। एक और अद्वैत सिद्धांत के प्रवर्तक जगद्गुरु शंकराचार्य हैं, जो निर्गुण ब्रह्म की सिद्धि करते हैं और ज्ञान से मोक्ष मानते हैं। वहीं दूसरी ओर भगवान रामानुजाचार्य हैं, जो मजबूत शास्त्रीय भित्ति पर सगुण ब्रह्म की स्थापना करते हैं। भक्ति तथा प्रपत्ति को ईश्वर की प्राप्ति का सबसे बड़ा साधन मानते हैं। ईश्वर प्राप्ति के सगुण संप्रदायों में निंबार्काचार्य, मध्वाचार्य, विष्णुस्वामी, वल्लभाचार्य, रामानंदाचार्य और चैतन्य महाप्रभु जैसे वैष्णवाचार्य हैं। इससे स्पष्ट होता है कि सनातन परंपरा में वैचारिक विवाद नहीं कहा जा सकता बल्कि यह मेधा का उत्कृष्ट स्वरूप है कि वह बार-बार चिंतन करती है तथा वैज्ञानिक रूप से अपने शोध को कभी भी अंतिम नहीं मानती। उसका मानना ही है कि **वादे वादे जायते तत्त्वबोध:** अर्थात् विचार से तत्त्व का ज्ञान स्पष्ट होता जाता है।

लक्ष्य एक ही है

एक बड़े शिवभक्त का इतिहास हमारे यहां है, जिनका नाम था पुष्पदंत। पुष्पदंत गंधर्वों के राजा थे और भगवान शिव के परम उपासक थे। उन्होंने एक स्तोत्र लिखा है, जो बहुत प्रसिद्ध है। इस स्तोत्र का नाम है 'शिवमहिम्न:स्तोत्रम्'। इस स्तोत्र में एक जगह पुष्पदंत कहते हैं-

रुचीनांवैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषाम।
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।।

जैसे विभिन्न नदियां भिन्न-भिन्न स्रोतों से निकल कर समुद्र में मिल जाती हैं, उसी प्रकार भिन्न-भिन्न रुचि के अनुसार विभिन्न टेढ़े-मेढ़े अथवा सीधे रास्ते से जाने वाले लोग अंत में ईश्वर में ही आकर मिल जाते हैं।' मनुष्यों को ईश्वर प्राप्ति के अनेक मार्ग प्राप्त हुए हैं। ये मार्ग कठोर हैं तो कोमल भी। वे बहुत कठिन साधना का भी रास्ता दिखाते हैं तथा भक्ति और शरणागति के सरल सहारे से परमात्मा की प्राप्ति भी करवाते हैं। हमारी परंपरा में विभिन्न विचारों को महत्व दिया गया है। पर यह स्पष्ट है कि वही विचार चिंतन की कसौटी पर तब खरा उतरता है, जब वह वैदिक साहित्य से जुड़ा हो। महाभारत में एक श्लोक है-

वेदा: विभिन्ना: स्मृतयो विभिन्ना:
तथा मुनीनां मतयो विभिन्ना:।
धर्मस्य तत्त्वं निहित गुहायां
महाजनो येन गत: स पन्था:।।

वेद भिन्न-भिन्न है स्मृतियां भिन्न-भिन्न है। ऐसा कोई ऋषि-मुनि नहीं है, जिसके वचन को परम प्रमाण मान लिया जाए। तो फिर ऐसी स्थिति में प्रश्न उठता है कि किया क्या जाए? समाधान में कहा गया कि हमारे पुरखों ने जैसा आचरण किया, हम वैसा करें। क्योंकि पुरखों ने जिसका आचरण किया, वह धर्म है।

> विविधता प्रकृति द्वारा दी गई है। इस विविधता को बनाए रखा जाना आवश्यक और महत्वपूर्ण है। इस विविधता से ही एकता मजबूत होती है। इस एकता को बनाए रखने के लिए सर्वाधिक आवश्यकता है ज्ञान और विवेक की।

विविधताओं से भरपूर

यह विविधता विरोध को पैदा नहीं करती बल्कि समस्त संप्रदायों के उपासकों को एक जगह इकट्ठा करती है। सार यह है कि एक ही शक्ति, एक ही ऊर्जा विभिन्न नामों से पूजित होती है। उसी शक्ति को हम गणेश, शिव, दुर्गा, सूर्य और भगवान विष्णु के नाम से जानते हैं तथा पूजते हैं। इनके पूजक भक्तों के संप्रदाय गाणपत्य, शैव, शाक्त, सौर तथा वैष्णव कहलाते हैं। इष्ट साधना के प्रति समर्पण के कारण पूजा की विविध विधियों का सृजन हुआ है, बाकी मान्यताएं समान हैं।

न केवल वैदिक साहित्य ही अपितु ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक तथा उपनिषदों में धर्म, अर्थ काम और मोक्ष को आधार बनाकर विस्तृत चिंतन हुआ है, जो भारत की अनुपम ज्ञाननिधि है। स्मृति ग्रंथों के साथ ही पुराणों में विभिन्न विषयों का निरूपण इस को प्रमाणित करता है कि भारत न केवल विचारों में बल्कि यह भौगोलिक दृष्टि से भी विविधताओं भरा देश है। सभ्यता के रूप में उसका इतिहास सबसे पुराना है। इस भौगोलिक विभिन्नता के साथ ही आर्थिक और सामाजिक भिन्नताएं पर्याप्त रूप से विद्यमान हैं। इन भिन्नताओं के कारण ही भारत में अनेक वैचारिक उपधाराएं विकसित होकर पल्लवित और पुष्पित हुई हैं। भौगोलिक दृष्टि से भारत में विविधता दर्शित होती है।

भारत की इस भौगोलिक विविधता के संबंध में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अपने भाषण में स्पष्ट कहा है कि *''यदि कोई विदेशी, जिसे भारतीय परिस्थितियों का ज्ञान नहीं है, सारे देश की यात्रा करे तो वह यहां की भिन्नताओं को देखकर यही समझेगा कि यह एक देश नहीं बल्कि छोटे-छोटे देशों का समूह है और ये देश एक-दूसरे से अत्यधिक भिन्न हैं। जितनी अधिक प्राकृतिक भिन्नताएं यहां हैं, उतनी अन्यत्र कहीं नहीं हैं। देश के एक छोर पर यह हिममंडित हिमालय दिखाई देता है और दक्षिण की ओर बढ़ने पर गंगा, यमुना एवं ब्रह्मपुत्र की घाटियां फिर विन्ध्य, अरावली, सतपुड़ा तथा नीलगिरी पर्वतश्रेणियों का पठार। इस प्रकार अगर कोई पश्चिम से पूर्व की ओर जाएगा तो उसे भी वैसी ही विविधता और विभिन्नता मिलेगी। उसे विभिन्न प्रकार की जलवायु मिलेगी। हिमालय की अत्यधिक ठंड, मैदानों की ग्रीष्मकाल की अत्यधिक गर्मी मिलेगी। एक ओर असम का घोर वर्षा वाला प्रदेश है तो दूसरी ओर जैसलमेर का सूखा क्षेत्र, जहां बहुत कम वर्षा होती है। इस प्रकार भौगोलिक दृष्टि से भारत में सर्वत्र विविधता दिखाई पड़ती है।''*

प्रकृति की देन

भारत के अनेक क्षेत्रों में परम्परागत विविधता दिखाई पड़ती है। यहाँ विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्तियों में वेश, रीति-रिवाज भाषा आदि की भिन्नता मिलती है। लोगों का शारीरिक गठन, खान-पान, रहन-सहन,

वेश-भूषा, यहां तक की मानसिकता भी अलग-अलग प्रकार की है। ठीक ऐसे ही भारत के विभिन्न भागों में पांथिक विविधता दिखाई देती है।

विविधता प्रकृति द्वारा दी गई है। इस विविधता को बनाए रखा जाना आवश्यक और महत्वपूर्ण है। इस विविधता से ही एकता मजबूत होती है। इस एकता को बनाए रखने के लिए सर्वाधिक आवश्यकता है ज्ञान और विवेक की, जो प्रत्येक मानव का जन्मसिद्ध अधिकार है, जिससे वह वंचित नहीं हो सकता। एकता के लिए किसी सैन्य शक्ति की जरूरत कभी नहीं पड़ी। न ही किसी प्रलोभन और भय की। सिर्फ धर्म ही है जो भारत को जोड़े रखता है।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था, ''*किसी भी दूसरे देश की अपेक्षा भारत की समस्याएं अधिक जटिल हैं। जाति, धर्म, भाषा, शासन-प्रणाली ये ही एक साथ मिल कर एक राष्ट्र की सृष्टि करते हैं। यदि एक-एक जाति को लेकर हमारे राष्ट्र से तुलना की जाये, तो हम देखेंगे कि जिन उपादानों से संसार के दूसरे राष्ट्र संगठित हुए हैं, वे संख्या में यहां के उपादानों से कम हैं। संसार की सभी जातियां इस भूमि में अपना खून मिला रही हैं। भाषा का एक विचित्र ढंग का जमावड़ा है। आचार-व्यवहारों के संबंध में दो भारतीय जातियों में जितना अंतर है, उतना पूर्वी और यूरोपीय जातियों में नहीं। हमारी एकमात्र सम्मिलन-भूमि है हमारी पवित्र परंपरा, हमारा धर्म। धर्म ही एकमात्र आधार है और उसी पर हमें संगठन तैयार करना होगा। यूरोप में राजनैतिक विचार ही राष्ट्रीय एकता का कारण है किंतु भारत में राष्ट्रीय ऐक्य का आधार धर्म ही है।*''

सकल राममय जानि

विविधता में एकता के सूत्र पुरातन हैं। सहनशीलता और सहिष्णुता को आदर देने से एकता बनती है। स्वयं ही नहीं सामने वाले को कहने और सुनने का समान अवसर दिया जाना हमारी अनादि परंपरा है। यजुर्वेद में लिखा है, **'आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतः'** यानी अच्छे विचार चारों ओर से आने दो। श्रेष्ठ विचारों का सर्जक कोई भी हो सकता है, इसलिए हर किसी को कहने और लिखने का अवसर दो। यह सूत्र है, जो विचारों को महत्त्व देता है। सारे शास्त्र और उनसे प्रसृत परंपराएं एकता के सूत्र में राष्ट्र को बांधती हैं और मानव को मानव से जोड़कर सुंदर संसार का निर्माण करती हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने इसे अनूठे रूप में कहा-

जड़ चेतन जग जीव जत
सकल राममय जानि।
बंदउँ सब के पद कमल
सदा जोरि जुग पानि।।

जब सब राममय ही है तो फिर कैसा विरोध और कैसा दुर्भाव? यह एकता बनाए रखने का अनुपम सूत्र है, जिसकी आज बेहद जरूरत है। ■

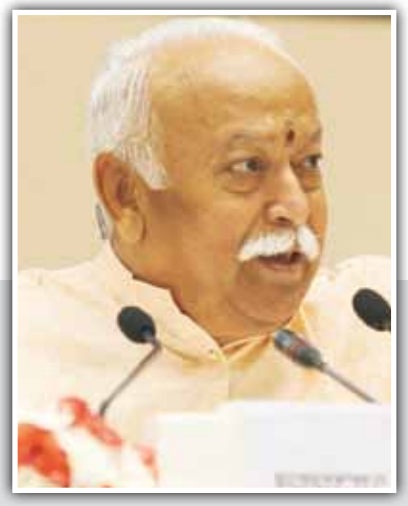

प्रबुद्धजनों के प्रश्नों के उत्तर में सरसंघचालक ने कहा–(२)

विविधता भेद नहीं प्रकृति का शृंगार है

विविधता होना अवश्यम्भावी है, क्योंकि प्रकृति विविधता को लेकर चलती है। विविधता भेद नहीं हैं, यह साज-सज्जा है प्रकृति का शृंगार है। ऐसी अनूभूति को आधार देने वाला एकमात्र देश हमारा देश है और इसलिये हिन्दुत्व ही सबके तालमेल का आधार बन सकता है।

☐ क्या हिन्दुत्व को हिन्दुइज्म कहा जा सकता है? देश में अन्य मत-पंथों के साथ हिन्दुत्व का तालमेल कैसे संभव है? क्या जनजातीय समाज भी हिन्दू है?

हिन्दुइज्म ये गलत शब्द है, क्योंकि इज्म एक बंद चीज मानी जाती है। इसलिए ये कोई इज्म नहीं है। **गांधी जी ने कहा था कि सत्य की अनवरत खोज का नाम हिन्दुत्व है।** हिन्दुत्व एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है। मोस्ट डायनामिक है और उसमें सबका योगदान है। इसलिए हिन्दुत्व को हिन्दुइज्म नहीं कहना चाहिए। ऐसा मेरा मानना है। रही अन्य मत-पंथों के साथ तालमेल की बात तो भारत की विचारधारा में सभी समाहित हैं, क्योंकि तालमेल का आधार मूल एकत्व है। विविधता होना अवश्यम्भावी है। क्योंकि प्रकृति विविधता को लेकर चलती है, विविधता ये भेद नहीं है, विविधता ये साज-सज्जा है, प्रकृति का शृंगार है। ऐसी अनुभूति को आधार देने वाला एकमात्र देश हमारा देश है और इसलिए हिन्दुत्व ही है जो सबके तालमेल का आधार बन सकता है। जनजातीय समाज भी हिन्दू है। भारत में रहने वाले सब लोग हिन्दू ही हैं। पहचान की दृष्टि से, राष्ट्रीयता की दृष्टि से। ये कुछ लोग जानते हैं और गर्व से कहते हैं।

> जब जाति व्यवस्था कहते हैं, उसमें गलती होती है। आज व्यवस्था कहाँ है, वह अव्यवस्था है। कभी ये जाति व्यवस्था उपयुक्त रही होगी, आज उसका विचार करने का कोई कारण नहीं है, वह जाने वाली है।

☐ पूरे हिन्दू समाज में समरसता के लिए रोटी-बेटी का संबंध होना चाहिए। संघ इसके लिए क्या करेगा? अंतरजातीय विवाह तथा अंतरपांथिक विवाह के संबंध में संघ क्या सोचता है? क्या यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि हिन्दू समाज जातियों में नहीं बँटेगा?

रोटी-बेटी व्यवहार का हम पूरा समर्थन करते हैं। रोटी व्यवहार तो आसान है और बहुत लोग आजकल कर भी रहे हैं। यह मन से होना चाहिए इसकी आवश्यकता है। बेटी व्यवहार थोड़ा कठिन इसलिए है कि उसमें केवल सामाजिक समरसता का विचार नहीं, दो परिवारों के मिलन का भी विचार है। वर-वधू के भी मिलने का विचार है। ये सब देख कर हम उसका समर्थन करते हैं। महाराष्ट्र में पहला अंतरजातीय विवाह १९४२ में हुआ। अच्छे सुशिक्षित लोगों का था इसलिए उसकी प्रसिद्धि हुई। उस समय उसके लिए जो शुभ संदेश आए थे, उसमें पूजनीय डॉ.बाबा साहब अम्बेडकर का भी संदेश था और पूजनीय श्री गुरुजी का भी संदेश था।

गुरुजी ने उस संदेश में कहा था कि आपके विवाह का कारण केवल शारीरिक आकर्षण नहीं है। आप ये भी बताना चाह रहे हैं कि समाज में सब एक हैं, इसलिए

विविधता में एकता

आप विवाह कर रहे हैं। मैं आपका इस बात के लिए अभिनंदन करता हूं और आपको दाम्पत्य जीवन की सब प्रकार की शुभकामनाएं देता हूँ। प्रत्येक की अपनी रुचि और अरुचि होती है। पूरा जीवन साथ में चलाना है। यह ठीक से चल सकता है कि नहीं, इतना देखना चाहिए। तो बेटी व्यवहार के लिए भी हमारा समर्थन है। मैं तो कभी-कभी कहता हूं कि अंतरजातीय विवाहों की गणना करके प्रतिशत निकाला जाए तो ऐसा करने वाले शायद सबसे ज्यादा प्रतिशत संघ के स्वयंसेवकों का मिलेगा।

इस रोटी-बेटी व्यवहार का चलन बढ़ाने से, यानी केवल विवाह और केवल साथ बैठकर खाने की बात यथेष्ट नहीं। जीवन की हर व्यवस्था में अभेद दृष्टि से देखना, ये जब होगा तो हिन्दू समाज जातियों में नहीं बंटेगा। इसको हम सुनिश्चित कर सकते हैं। वह बंटेगा नहीं ये मैं जानता हूं, इसलिए कि प्रत्येक हिन्दू की जो आत्मा है वो आत्मा एकता में ही विश्वास करती है और मनुष्य का शरीर, मन, बुद्धि आत्मा से अलग होकर ज्यादा चल नहीं सकता।

☐ हिन्दू समाज में जाति व्यवस्था को संघ कैसे देखता है? संघ में अनुसूचित, जनजातियों का कैसा प्रतिनिधित्व और स्थान है? घुमंतू और विमुक्त जातियों के लिए संघ ने क्या कोई पहल की है?

जब जाति व्यवस्था कहते हैं, उसमें गलती होती है। आज व्यवस्था कहाँ है, वह अव्यवस्था है। कभी ये जाति व्यवस्था उपयुक्त रही होगी, आज उसका विचार करने का कोई कारण नहीं है, वह जाने वाली है। जाने के लिए प्रयास करेंगे तो जाएगी। अंधकार को लाठी मार-मार कर भगाएंगे तो अंधेरा नहीं जाएगा। एक दीपक जलाओ, वह भाग जाएगा। इसलिए एक बड़ी लाइन खींचो तो सारे भेद विलुप्त हो जाएंगे। यही संघ कर रहा है।

प्रश्न– गाय के प्रश्न पर मॉब लिन्चिंग (भीड़ द्वारा हत्या) क्या उचित है? गोरक्षा कैसे होगी? गोरक्षा कानून लागू नहीं होते हैं। गो तस्करों के हौसले बहुत बढ़े हुए हैं। गोरक्षा करने वालों पर हमले होते हैं। इन सबका क्या समाधान है?

उत्तर– गाय ही क्यों, किसी भी प्रश्न पर कानून हाथ में लेना, हिंसा करना अत्यंत अनुचित और अपराधपूर्ण है। इसलिए इस पर कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए और अपराधियों को सजा होनी चाहिए। लेकिन गाय हमारे लिए श्रद्धा और परंपरागत विषय है। इसके अतिरिक्त अपने देश के छोटे किसान जो बहुसंख्या में हैं उनके अर्थायाम का आधार गाय बन सकती है और ऐसे ही अनेक ढंग से गाय उपकारी है। ए-२ दूध की बात होती है जो पहले नहीं थी। यह देशी गाय से ही मिलता है। इन सब बातों को देखते हुए गोरक्षा तो होनी चाहिए और जो संविधान का मार्गदर्शक तत्व है, उसका भी पालन करना चाहिए। लेकिन गोरक्षा केवल कानून से नहीं होती। गोरक्षा करने वाले देश के नागरिक पहले गाय को रखें। गाय को रखेंगे नहीं और खुला छोड़ देंगे तो उपद्रव होगा। इसलिए गोसंवर्धन होना चाहिए।

दूसरी बात जो गोरक्षा की बात करते हैं, वे लिन्चिंग करने वालों में नहीं हैं। वे सब समाज की भलाई के लिए काम कर रहे हैं, सात्विक प्रवृत्ति के लोग हैं। पूरा का पूरा जैन समाज इस पर अडिग है। ऐसे ही अच्छी और भक्ति से गोशालाएं चलाने वाले मुसलमान भी अपने देश में बहुत जगह हैं। इन सब लोगों को लिन्चिंग के साथ कभी जोड़ना नहीं चाहिए। इनके कार्य को प्रोत्साहन मिलना चाहिए, क्योंकि वे अपने देश के सामान्य व्यक्ति के हित का काम कर रहे हैं। आज एक दोमुंहा रवैया दिखाई देता है कि जब गोतस्कर पर हमला होता है लिन्चिंग की आवाज आती है, पर जब गोतस्कर हमला करते हैं, हिंसा करते हैं उस पर कहीं आवाज नहीं होती है। यह प्रवृत्ति छोड़नी चाहिए। इन सबका समाधान यही है।

रही बात घुमंतू जातियों की तो हमने उनके लिए काम किया है। मैं मानता हूं कि स्वतंत्रता के बाद उनके बीच काम करने वाले हम पहले होंगे। महाराष्ट्र में ये काम शुरू हुआ और उसके चलते बहुत सारी बातें हुईं। इस समाज के बच्चों को शिक्षा देना, शिक्षा प्राप्त करके वे कैसे आगे बढ़ें, इसकी चिंता करना। अखिल भारत में जितनी घुमंतू जातियां हैं, उनके लिए भी हमने उपक्रम पिछले वर्ष से प्रारंभ किया है और हम उनके लिए और काम करेंगे।

आज एक दोमुंहा रवैया दिखाई देता है कि जब गोतस्कर पर हमला होता है लिन्चिंग की आवाज आती है, पर जब गोतस्कर हमला करते हैं, हिंसा करते हैं उस पर कहीं आवाज नहीं होती है। यह प्रवृत्ति छोड़नी चाहिए। इन सबका समाधान यही है।

☐ यदि हिन्दुत्व की व्याख्या इतनी ही श्रेष्ठ और सुंदर है, जैसे कि बताई गई तो आज विश्व और भारत के भीतर भी हिन्दुत्व को लेकर आक्रोश और हिंसा क्यों दिखाई देती है? संघ इसके लिए क्या करेगा?

विश्व में हिन्दुत्व को लेकर आक्रोश और हिंसा नहीं है। उलटा है। विश्व में हिन्दुत्व की स्वीकार्यता बढ़ रही है। भारत में जो आक्रोश है वह हिन्दुत्व विचार के कारण नहीं है। विचार को छोड़कर गत १५००, २००० वर्षों में हमने जो आचरण से एक

> अगर सभी मत-पंथ समान हैं तो कन्वर्जन की आवश्यकता क्यों है? क्यों आप इधर से उधर ले जाने का प्रयास कर रहे हो। जिसमें जो है वह उसमें पूर्णता प्राप्त करेगा।

विकृत उदाहरण प्रस्तुत किया, उसको लेकर है। हमारे मूल्यबोध के अनुसार जो आचरण करना चाहिए, वह न करते हुए हम पोथीनिष्ठ बन गए, रूढ़िनिष्ठ बन गए, हमने बहुत सारा अधर्म, धर्म के नाम पर किया।

आज की देशकाल परिस्थिति के अनुसार धर्म का आचार, धर्म का रूप बदलकर हमको श्रेष्ठ आचरण करना पड़ेगा, तो सारा आक्रोश विलुप्त हो जाएगा। क्योंकि विचार के नाते हिन्दुत्व का विचार श्रेष्ठ, उदात्त, शुद्ध है। हमको विचार के अनुसार चलने का अभ्यास करना पड़ेगा और संघ यही करता है। इसलिए हिन्दुत्व के मूल्यबोध के आधार पर पहले हिन्दू अच्छा, पक्का, सच्चा हिन्दू बने। हम इन्हीं संस्कारों को प्रत्येक व्यक्ति में भरने का प्रयास लगातार ९२ साल से कर रहे हैं।

☐ क्या कन्वर्जन छल, बल, धन से हो रहा है? क्या इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर कानून बनना चाहिए। अगर सभी मत-पंथ समान हैं तो संघ कन्वर्जन का विरोध क्यों करता है?

मैं इसे इस तरह कहता हूँ कि अगर सभी मत-पंथ समान हैं तो कन्वर्जन की आवश्यकता क्यों है? क्यों आप इधर से उधर ले जाने का प्रयास कर रहे हो। जिसमें जो है वह उसमें पूर्णता प्राप्त करेगा। जब आप उसको इधर से उधर लाते हो तो आपका उद्देश्य उसको अध्यात्म सिखाना नहीं है। भगवान न तो बाजार में बेचा जाता और न ही जबरदस्ती स्वीकार कराया जाता है। यह सब छल, बल से होता है, जो नहीं होना चाहिए। क्योंकि उसका उद्देश्य मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति नहीं है, दूसरे कुछ उद्देश्य इसमें छिपे हैं। इसलिए संघ वाले ही इसका विरोध क्यों करें, पूरे समाज को कन्वर्जन का विरोध करना चाहिए।

☐ अत्याचार निरोधक कानून पर सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय से जो दूसरे वर्गों की ओर से प्रतिक्रिया और आक्रोश निर्मित हुआ है, क्या वह उचित था? क्या सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को संसद को बदलना चाहिए था? सवर्ण और अनुसूचित जाति में जो खाईतैयार हो गई है, क्या वह ठीक है और यह कैसे दूर होगी?

सामाजिक पिछड़ेपन के कारण और जातिगत अहंकार के कारण एक अत्याचार की परिस्थिति तो है। उस परिस्थिति से निपटने के लिए अत्याचार निरोधक कानून बना। वो ठीक से लागू होना चाहिए। उसका दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। कई बार दुरुपयोग भी होता है और इसलिये संघ मानता है कि उस कानून को ठीक से लागू करना चाहिए और उसका दुरुपयोग नहीं होना चाहिए्। लेकिन ये होगा कैसे। ये केवल कानून से नहीं होगा। समाज में सद्भाव और समरसता इसमें काम करती है। इसलिए

> अत्याचार निरोधक कानून ठीक से लागू होना चाहिए। उसका दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। ये केवल कानून से नहीं होगा। समाज में सद्भाव और समरसता इसमें काम करती है।

सद्भावना जाग्रत करने की आवश्यकता है।

☐ अल्पसंख्यकों को जोड़ने के विषय में संघ क्या सोचता है? बंच ऑफ थॉट्स में मुस्लिम समाज को शत्रु रूप में सम्बोधित किया गया है? क्या संघ इन विचारों से सहमत है। संघ को लेकर मुस्लिम समाज में जो भय है, वह कैसे दूर होगा?

अपने यहां अल्पसंख्यक शब्द की परिभाषा स्पष्ट नहीं है। अंग्रेजों के आने के पहले अल्पसंख्यक शब्द का उपयोग नहीं किया गया। हम सब एक समाज के थे। एक मान्यता लेकर चलते थे। हां ये बात जरूर है कि दूरियां बढ़ी हैं। अपने यहां समाज के बंधुओं को जो बिखर (बिछुड़) गये हैं उनको जोड़ने की बात ठीक है। जुड़ने से कल्याण होगा। अरे भाई हम एक देश की संतान हैं । भाई- भाई जैसे रहे। सब अपने हैं।

प्रश्न – आरक्षण पर संघ का क्या मत है और आरक्षण कब तक जारी रहेगा। क्या आर्थिक आधार पर आरक्षण को संघ मान्यता देता है। आरक्षण के कारण समाज में जो अनेक संघर्ष हो रहे हैं, उनका हल क्या है? क्या क्रीमीलेयर और अल्पसंख्यकों को आरक्षण मिलना चाहिए?

उत्तर- सामाजिक विषमता को हटाकर समाज में सबके लिए अवसरों की बराबरी प्राप्त हो, इसलिये आरक्षण का प्रावधान है। संविधान सम्मत सभी आरक्षणों को संघ का पूरा समर्थन है। और आरक्षण कब तक चलेगा, इसका निर्णय वही करेंगे जिन्हें आरक्षण दिया गया है। उनको जब लगेगा कि अब आवश्यकता नहीं है इसकी, तब वह देखेंगे। लेकिन तब तक इसको जारी रहना चाहिए, ऐसा संघ का बहुत सुविचारित और जब से ये प्रश्न आया है तब से मत है। उसमें बदलाव नहीं हुआ है। यह भी ध्यान रखें कि **संविधान में सामाजिक आधार पर आरक्षण की व्यवस्था है, संप्रदायों के आधार पर नहीं।**

अपने यहां सभी समाज कभी न कभी अग्रणी वर्गों में रहे हैं तो उनके आरक्षण का क्या करना। अब और भी जातियां आरक्षण मांग रही हैं, तो उनका क्या करना। इस पर विचार के लिए संविधान पीठ बनी हैं। दरअसल 'आरक्षण की राजनीति' ही वास्तविक समस्या है। ऐसा संघ को लगता है।

प्रश्न – पर्यावरण के नाम पर हिंदू त्यौहारों में परंपराओं का विरोध करने का जो प्रचलन चल पड़ा है, इस पर संघ का क्या मत है ?

उत्तर– ऐसे किसी नाम पर (पर्यावरण) किसी बात को करना यह तो गलत ही है न। जो करना है वह सीधा सीधा करना चाहिए। लेकिन वास्तव में कोई पर्यावरण का प्रश्न है तो चर्चा होनी चाहिए। लेकिन केवल हिन्दुओं के त्यौहारों पर ही, क्यों ? अगर हिन्दुओं के किसी त्यौहार से पर्यावरण को खतरा होता है तो हमारे यहां सुधार की परम्परा है। और इस पर मिलकर विचार करना चाहिए, तो लोग मानेंगे भी। लेकिन जिस ढंग से यह किया जाता है, वह ढंग मन में शंकाएं पैदा करता है।

रही बात मुस्लिम समाज में भय की तो मैंने कहा कि आप आइये और संघ को अंदर से देखिये। जहां–जहां संघ की अच्छी शाखाएं हैं, वहां पर यदि पास में मुसलमान बस्ती है तो मैं आपको दावे के साथ बताता हूं कि वे वहां अपने आपको ज्यादा सुरक्षित महसूस करते हैं। इसलिये हमारा आह्वान राष्ट्रीयता का है। जो भारत के मुसलमानों की, ईसाइयों की सबकी परम्परा का है उसका है। उसके प्रति गौरव का है। मातृभूमि के प्रति गौरव का है, वही हिन्दुत्व है। बिना कारण भय बनाकर रखना ठीक नहीं, एक बार आकर देखिये। बात करके देखिये। संघ के कार्यक्रमों में आकर देखिये।

मेरा तो अनुभव है जो–जो आते हैं उनके विचार बदल जाते हैं। आप आइये, देखिये और हमारी कोई बात गलत है या आपके विरोध से प्रेरित है तो फिर हमको पूछिये। लेकिन सही बात आपको पसंद नहीं आएगी तो भी हम बोलेंगे। परम्परा से, राष्ट्रीयता से, मातृभूमि से, पूर्वजों से हम सब लोग हिन्दू हैं। यह हमारा कहना है और यह हम कहते रहेंगे, उस शब्द को हम नहीं छोड़ेंगे। लेकिन इसका मतलब हम आपको अपना नहीं मानते ऐसा नहीं है।

कई बार कुछ बातें परिस्थिति विशेष के संदर्भ में बोली जाती हैं और वे शाश्वत नहीं रहती हैं। गुरुजी के विचारों का एक संकलन–'गुरुजी विजन एंड मिशन' प्रसिद्ध हुआ है। इसमें तात्कालिक संदर्भ से आने वाली सारी बातें हटाकर उनके सदाकाल के उपयुक्त विचार रखे गए हैं। उसे पढ़िए। दूसरी बात है समय बदलता है तो संगठन की स्थिति भी बदलती है। सोच भी बदलती है और बदलने की स्वीकृति डॉ. हेडगेवार से मिलती रही है।

> अपने यहां अल्पसंख्यक शब्द की परिभाषा स्पष्ट नहीं है। अंग्रेजों के आने के पहले अल्पसंख्यक शब्द का उपयोग नहीं किया गया। हम सब एक समाज के थे। एक मान्यता लेकर चलते थे।

☐ समान नागरिक संहिता के सम्बन्ध में संघ का क्या मत है।

यह संविधान का मार्गदर्शक तत्व तो है और इस दृष्टि से इसको कहा जाता है कि एक देश के लोग एक कानून के अंतर्गत रहें। एक कानून के अंदर रहने का मन बने समाज का। समान नागरिक संहिता की जब चर्चा होती है तो इसका अर्थ लोग हिंदू और मुसलमान से लगाते हैं। लेकिन केवल इतना नहीं है। सबकी परम्पराओं में कुछ न कुछ परिवर्तन आयेगा। हिन्दुओं की भी। यह ध्यान में रखकर समाज का मन बने ये प्रयास होना चाहिए और वास्तव में देश की एकात्मता को समान नागरिक संहिता की बात पुष्ट करती है। ■

ANAND HOSPITAL & EYE CENTRE
आनन्द आई हॉस्पीटल
डा. सोनू गोयल
एमबीबीएस
आई सर्जन
द्वारा दीपावली की शुभकामनाएं
विविधता में एकता भारत की विशेषता
21, Jamna Lal Bajaj Marg,
C-Scheme,
Jaipur, 302001
0141-2371104/06
M. 98290 51687

Nataraj Roofing
Naveen Bansal
DIRECTOR
9314655850
NATRAJ ROOFING PVT. LTD.
Office : H-606(A), Road No.6 V.K.I. Area, Jaipur-302013 (Raj.)
Phone : 0141-2333872, 4047142 (M) 8696020000,
Emal : marketing@natarajroofing.com,
natarajroofing@gmail.com
Website : www.natarajroofing.com

लक्ष्मी नारायण मुछाल
द्वारा
विविधता में एकता विशेषांक एवं दीपावली पर्व की
हार्दिक शुभकामनाएं
(9414055339)
ई–101, ग्रीन पार्क एकेड
श्री गोपाल नगर, जयपुर–302019

भगवानदास आसवानी
द्वारा
विविधता में एकता विशेषांक एवं दीपावली पर्व की
हार्दिक शुभकामनाएं
(9414054746)
ए–550,मालवीय नगर,
जयपुर–302017

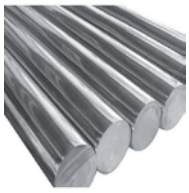

☎ : 044-2535 0928
044-2346 5115
Mobile : 94441 86470
94448 94134
89397 00928
RAMA TRADERS
DEALERS IN : S.S. Re-Rolling pattas, patties, strips, Rods, Cutpieces-Circle Non-Ferrous all Materials & Commission Agent
#31, Amman Koil Street, Chennai-600003

☎ : 23465639
Cell : 9444307805
SSC
Santosh Steel Centre
Dealers in : Stainless Steel Raw Materials
New 14, (Old 9),Kesava Iyer Street,
Chennai - 600 003.
HAPPY DIWALI WITH BEST WISHEH BY SANTOSH STEEL

Le-GRAIN
BHUMI
R. Ashok Kumar
B.A., Dism (PUNAYATA)
दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाओ सहित
Lata International
#82, Narayana Mudali St., IInd Floor,
Sowcarpet, Chennai - 600 079 (T.N.)
PH - 044-42013522, 42051269
Cell : 9940370044/9962008538
Email : lataint30@gmail.com
Web : www.lataint.com

Kishan Rajpurohit
Bharat RajPurohit
SAM
Ph : 044 - 4207 8192
Cell : 98406 62993
SRI ASHAPURI MARKETING
दीपावली की शुभकामनाएं
Distributors For All Home Appliances
No. 279, Mint Street, Shop No. 8, Chennai - 600 003.

BHOPAL SINGH
94444 60865
9025736983
B. PARVEEN
97908 95379
044-2536 5889
RAJ KAMAL Agencies
#2/2, Balasubbaraya Chetty Lane, Natha Ramakrishna Complex, (Cross Kasi Chetty Street), Chennai-600 079
Dealers in : Stationery, Cutlery, Fancy Goods, General Merchants & Commission Agents

☎ : 2346 8412
2539 0801
2539 4125
METALIC
PAPER HOUSE
!!दीपावली की शुभकामनाएं!!
Distributors : Hylex Toilet Roll, Max, Disposable Containers
Manufacture of : Blue Star Carry Bag, Napkin
86, Narayana Mudali Street, Chennai - 600 079.

K.R. DEVASI
9444776708
T.R. DEVASI
9944449936
दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाओ सहित
HARI OM STATIONERS
WHOLESALE DEALERS IN
Stationers & Suppliers
#31, Reddy Raman Street,
Doshi Building Chennai-600079,
PH : 25390108

K. NARASARAM
98404 64418
80158 85503
शुभदीपावली
Mahadev Textiles
Kids & Under Garments
No. 50, Nattu Pillayar Koil Street,
Chennai - 600 001.

N.K. NOVELTY

"WHOLESALE DEALERS IN :

Umbrella, Key Chain, Safety Razer, Antiquje, ceramic & Gift Varieties"

No. 15, Kasi Chetty Street, Chennai - 600079

CELL 9884138134, 9884594647
PH. 25391044

Jus4u®

DISTRIBUTORS OF

TOYS, GAMES, SOFT TOYS & IMPORTED TOYS

Our offices located at:

Vinita Enterprises
Megha Toys
No. 9, Narayana Mudali Street,
Third Floor, Sowcarpet,
Chennai - 600 079 (T.N.)
94441 53763
vinitaenterprisesch@gmail.com
www.vinitaenterprises.com

Toy City
We Care What You Like
No. 40/5078, Kovilvattom Road,
Swapna Building, Ground Floor,
Ernakulam, Kerala - 682 035
94448 16175
toycitykerala@gmail.com

MADHU ELECTRONICS AND METTAL STONE

LED TECHNOLOGY
KINGSTAR
A NAME OF QUALITY PRODUCTS

नरपत सिंह राजपुरोहित

भाजपा युवा मोर्चा कार्यकारिणी सदस्य, चैन्नई

9840576576

Tel. 044-42053815/42169322

154/4, Govindappa Naicket Street, Chennai-79

Sri Ganeshaya Nama

☎ Off : 2535 9365

Vinod Metal Stores

Dealers in : Non-ferrous Metal & Brass Copper Wares & Sheets Circles Etc.,

New # 11, (Old # 40),
Nyniappa Maistry Street,
Chennai - 600 003.

D. Vinodkumar

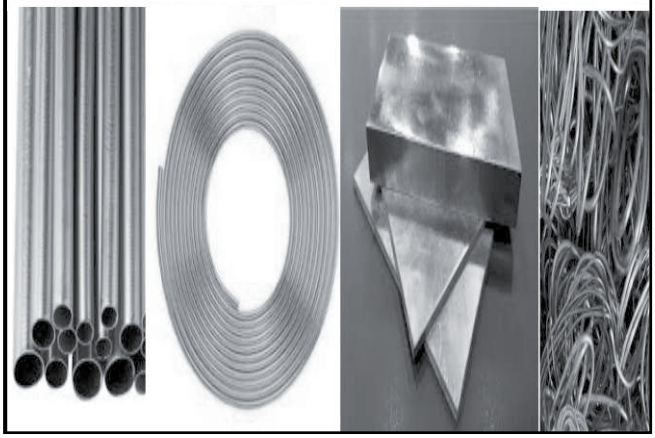

ॐ

Ph : 25380408

Krishna Store

FANCY HOUSE

J.P. Guddy, Nikita Daffodils, Sagar Hair Clip, J.P. Dolly, Tipsy, Leader Unik, Hair Pins, Plastic & Metal Bangles, Sindori Nettu Usha, Combition, Bhoomi & Fancy Bindi, Sheel Savvy Tos, Stone Set, Finger Ring, Mothimala, Bracelet, Netty Choocty, Chandani Plain & Fancy Hair Styles, Fancy Rubber, Kristal Rubber Bands, Hair Bands Divine & Divine + (Un breakable Ranges) Hair Clips Crezy Cat Creation

No. 20/49, 50, 1st Floor, Kasi Chetty Street, Chennai - 600 079.

Chandan 9840412896

SINCE 1981

MANOJ TRADERS

Pioneer in : File Clips & Files Raw Materials

42, Anderson Street, Chennai-600 001. INDIA

Ph. 044-25362052,42016477 • Email :sonuclips87@gmail.com

- Index File Liver Clips
- Ring Mechanism Including all Varieties
- 2,4,6 Ring all Sizes
- Plastic Clips, Punchless Clips
- Wire Clips, Rivets Eyelets, Etc.,
- All types of Files raw Materials.

MRP™ FILE CLIPS & STATIONERY

SRS

Ph. : 044-25381691

Sri Ram Store

Grace, Fine Player, V3S Try Dizer Doctor Scholex, School Bags & Rainbow Rain Wear

Dealers in :
SCHOOL BAGS
COLLEGE BAGS
TIFFIN BAGS
PENCIL POUCH
BABY RUBBER
SHEET, BABY
MOSQUITO NET
AIR PILLOW
RUBBER SHEET
TRAVELLING BAGS
CASH BAGS
GENTS PURSE
KIT BOX
JEWELLERY POUCH
LADIES BAGS
LADIES PURSE
ETC.

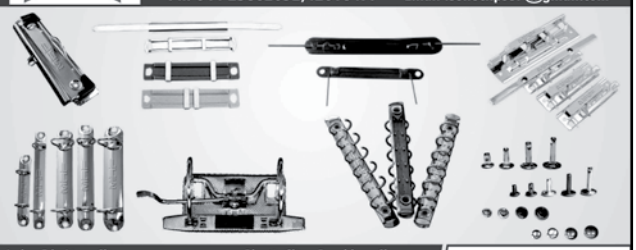

H.O. : #20/49, Kasi Chetty Street, 1st Floor, Chennai - 600 079.

B.O. : #18, 2nd Floor, Kasi Chetty St., Chennai-79. (Narayana Mudali St, Building)

Dinesh 7708 929 929

Manoj Graphics & Arts

Specialist in

One Stop Shop for your all printing need

CORRUGATED BOXES • DUPLEX BOARD • PVC WINDOW BOX • HINDI PATRIKA • CATALOGUES / BROCHURES / LEAFLETS / FLYERS • BANNERS

Creative Printing | Quality Printing | Professional People

All Types of Printings Under One roof

☎ : 044-42130077, 42602222,

20/35, Kasi Chetty Street, Chennai -600 079.

email : manojgraphics4@gmail.com

Apex Hospitals Pvt. Ltd.

Apex Hospitals

NABH, NABL Accredited Hospital

Hospital Facilities :

- 200 Bedded
- 50 ICU Beds
- Medical Oncology
- Surgical Oncology
- Radiation Oncology
- Cardiology
- Neuroscience
- Urology
- Orthopadic
- Obesity Surgery
- Vascular Surgery
- Hernia Clinic
- ENT

Centers of Excellence

Malviya Nagar ☎: 0141-4101111 | Mansarovar ☎: 0141-4109999 | Suratgarh ☎: 01509-225511 | Follow us on

SP 4-6, Malviya Industrial Area, Malviya Nagar, Jaipur - 302017

care@apexhospitals.com www.apexhospitals.com

Ph : 044 - 42134822

Cell : 99402 92866

98404 65866

JAGNATH AGENCY

Dealers in :

Massager Items & Helthcare Items

Trimmer, Hair Haining

Old # 22, New # 43, 1st Floor, N.S.C. Bose Road, "S.V. PLAZA" Sowcarpet, Chennai - 600 001.

भारत में शिक्षा और कृषि का भविष्य

धानुका एग्रीटेक लिमिटेड
dhanuka

शिक्षाः एक समग्र विकास

शिक्षा किसी भी समाज, समुदाय, संप्रदाय, धर्म और देश का मूलभूत आधार है जिससे समाज की दिशा और दशा निर्धारित होती है। भारत में गुरु– शिष्य परंपरा का सम्मान होता था और हमें आत्म निर्भर बनने के लिए आध्यात्मिक, सामाजिक और मानवता की शिक्षा मिलती थी। भारतीय शिक्षा प्रणाली का अभूतपूर्व उदहारण नालंदा विश्वविध्यालय से मिलता है। ये प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और विख्यात केन्द्र था और इसमें अनेक देशों के छात्र पढ़ते थे। किसी भी राष्ट्र अथवा समाज में शिक्षा सामाजिक नियंत्रण, व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक व आर्थिक प्रगति का मापदंड होती है । भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली लार्ड मैकाले के ब्रिटिश प्रतिरूप पर आधारित है जिसे सन् 1835 ई० में लागू किया गया। आवश्यकता है कि इस प्रणाली को बदलकर भारतीय शिक्षा पद्धति जो कि हमारी परम्परा, संस्कार, सिद्धांतों व राष्ट्रीयता पर आधारित है को लागु किया जाय।

दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि स्वतंत्रता के बाद विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा का स्तर तो बढ़ा है परंतु प्राथमिक शिक्षा का आधार दुर्बल होता चला गया। शिक्षा का लक्ष्य राष्ट्रीयता, चरित्र निर्माण व मानव संसाधन विकास के स्थान पर मशीनीकरण रहा जिससे चिकित्सकीय तथा उच्च संस्थानों से उत्तीर्ण छात्रों में लगभग 40 प्रतिशत से भी अधिक छात्रों का देश से बाहर पलायन जारी रहा।

आज हमें ऐसे शिक्षा तंत्र की जरूरत है जो हर एक इंसान तक पहुच कर उनको प्रगति की दिशा में आगे ले जा सके। राष्ट्र भाषा और क्षेत्रिय भाषायों में शिक्षा व्यवस्था ज्यादा कारगर सिद्ध हो सकती है। विश्व में केवल आर्थिक नहीं, अन्य भी अनेक दृष्टियों से जो स्थान जापान, कोरिया, चीन आदि देशों का है, हमारा देश उनसे हर क्षेत्र में दूर, बहुत ही दूर केवल इसलिए है क्योंकि चीन आदि देशों का है, हमारा देश उनसे हर क्षेत्र में दूर, बहुत ही दूर केवल इसलिए है क्योंकि हमने अपने बच्चों के विकास के मार्ग में अंग्रेजी माध्यम की दीवार खड़ी कर रखी है।

कृषिः सम्पूर्णता एवं समग्रता

कृषि किसी भी देश का एक अभिन्न अंग है जिससे हम सभी को भोजन मिलता है भारत का मुख्य व्यवसाय कृषि ही था और आज भी है पर बदलते परिवेश में कृषि में आये बदलाव को हमें समझना होगा। परिवर्तन संसार का नियम है और उस परिवर्तन के साथ खुद को बदलना हमारा प्रयास होना चाहिए। कृषि में जो बदलाव हो रहे है उनको किस तरहा हम अपना सकते है ये शोध का विषय है। इजराइल जहाँ खेती किसी जमाने में असंभव प्रतीत होती थी आज वो पूरे विश्व में एक उदहारण है और पूरा विश्व उसके द्वारा इजात की गई नई नई तकनीक पर धीरे धीरे आश्रित होता जा रहा है। वहीँ दूसरी ओर चीन है जिसने बहुत कम समय में अपना वर्चस्व पूरी दुनिया में कायम किया है। भारत ने कृषि क्षेत्र में जो विकास किया है वह प्रशंसनीय है परंतु चीन व दुसरे विकसित देशों के मुकाबले हमारी प्रति हेक्टेअर पैदावार काफी कम है। 1950 से जहाँ हम अमेरिका से भीख में गेहूं मांगकर खाते थे आज विश्व में दूसरे स्थान पे खड़े हैं ये सब हमारे किसानों की महेनत का नतीजा है। और इसमे कोई दो–राय नहीं की हम कृषि के क्षेत्र में पूरे विश्व पर अपना वर्चस्व कायम कर सकते हैं बस हमें कदम मिला कर साथ चलना होगा और नई तकनीक व विज्ञान को अपनाना होगा।

हमें कृषि में कीटों, बिमारियों, और खरपतवारों से होने वाले नुकसान को रोकना होगा जिससे हर इंसान को भर पेट पौष्टिक आहार मिले और देश पूरे विश्व में कृषि के क्षेत्र में अग्रणी बन सके। जिसके लिए हमें कृषि रसायन का न्यायसंगत इस्तमाल करना होगा। जब हर खेत में हरियाली होगी तभी तो हर घर में खुशहाली होगी।

Dhanuka Agritech Limited
14th Floor, Building 5A, Cyber City,
DLF Phase, Gurgaon,
Haryana - 122002, India.

आर जी अग्रवाल
समूह अध्यक्ष

With Best Wishes

MARVEL PAPERS
PRIVATE LIMITED

(AUTHORISED STOCKIST)

Hindustan Paper Corporation Limited

(A Government of India Enterprise)

Suppliers and wholesale paper dealers
For Writing & printing paper, Copier paper,
cup stock paper, colour paper

203,IInd Floor, City Centre,
Sansar Chand Road, Jaipur. 3020001
Phone 2360611, 9929110476 Email- marvel_paper@yahoo.co.in

पाक्षिक
पाथेय कण
१ नवम्बर २०१८

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. ४८७६०/८७ अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /२०२/२०१८-२० JAIPUR CITY/ WPP - ०१/२०१८-२०

राजपुरोहित बलवंतसिंह,करणराज,
सुरेशसिंह,रमेशसिंह रायगुर
गाँव-सियाणा, जिला-जालोर (राज.)
* प्रतिष्ठान *

K.G. STORES
Chennai- 79 Mo. 9444522579

K.G.ENTERPRISES
Chennai- 79 Mo. 9840459747

BABA RAMDEV NOVELTY
Chennai- 79 Mo. 9444622930

BABA RAMDEV GRANITES
Jalore (Raj.) Mo. 9413001300

EXPORTERS & IMPORTERS

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,९ हथरोई, अजमेर रोड, जयपुर से मुद्रित,
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, ४, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-३०२०१७
सम्पादकः कन्हैयालाल चतुर्वेदी
प्रेषण दिनांक १,२,३,४ व ५ नवम्बर २०१८ आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,